ग्रहशान्तिपद्धति
शुक्र
राहु
बुध
चंद्र
शनि
गुरु
मंगल
केतु
खेमराज श्रीकृष्णदास प्रकाशन, बम्बई

श्रीः

ग्रहशान्तिपद्धतिः

(भाषाटीका सहिता)

*

टीकाकारः—

हनुमान्शर्मा

खेमराज श्रीकृष्णदास प्रकाशन बम्बई

प्रस्तावना

ग्रहशान्ति और उसका उपयोग

राजपूतानेमें विशेष कर जैपुर राज्यकी तलैटीमें धार्मिक राजाओंके आश्रित धर्मज्ञ विद्वानोंके सत्संगसे राजद्वारोंकी भाँति ही प्रजाजनमें भी शास्त्रमें बताई हुई विधिके अनुसार शांति पुष्टि व्रत उत्सव उद्यापन और संस्कारादि करानेकी परिपाटी बहुत दिनोंसे चली आ रही है। इसके निमित्त इधर आरंभमें पण्डित लोग शास्त्रोंको देख भालकर उनके अनुसार उपस्थित कार्य यथा-विधि करते थे और कुछ दिनों पीछे उनका जमाव जम जानेसे उन्हींके वंशवाले उनके स्थिर किये हुए मार्गसे कराते रहे। इस प्रकार कराते रहनेसे कालांतरमें जाकर इन कामोंके करानेके लिये कई नगरों और गांवोंमें वे वंशपरम्परागत कर्मकाण्डी ब्राह्मण नियत हो गये। ऐसा होनेसे उनमें बहुधा इस कामसे अनभिज्ञ रह जानेके कारण अब जाकर ऐसा हो गया है कि कर्मकाण्डके कई कामोंमें प्रायः बहुतसे काम शास्त्रोदित विधिसे अदल बदल होकर दूसरे रूपमें स्थिर हो गये हैं।

उदाहरण लीजिये-(१) ब्राह्मणका यज्ञोपवीत आठवें वर्षमें होता है। यज्ञोपवीत हुए पीछे वह कई वर्ष ब्रह्मचर्य पालन और वेदाध्ययन करके युवावस्थामें पहुँचकर समावर्तन संस्कार कराता था। किन्तु आजकल हम देखते हैं कि यज्ञोपवीत, वेदारम्भ और समावर्त्तन यह तीनों काम जनेऊ लेते समय एक ही दिनमें हो जाते हैं। (२(ब्रह्मचर्य पालनके दिनोंमें भिक्षा करनेकी आवश्यकता

होती है, किन्तु हम देखते हैं कि जनेऊ लिवानेके दिन समावर्तन कराये पीछे ही बालकको वस्त्राभूषण पहिनाकर उससे भिक्षाचरण कराते हैं। (३) विवाहके आरम्भमें विवाहके मंडपके तोरणका पूजन करना लिखा है, परन्तु उसके बदले लोग छडीसे तोरण मरवाते हैं। (४) विवाहमें वर वधूको बैलके चर्मपर बैठानेको लिखा है, परन्तु उसके बदले बहुधा लोग उनको जूते पहिनाकर वैदिक काम कराते हैं। (५) और कई एक कामोंमें केवल चावल या गोधूमादिके आसनपर गणपति पूजन करके काम करानेकी विधि लिखी है, परन्तु कई सज्जन प्रधानकी रचना करके यजमानका थाली, लोटा बटोरते हैं। इस प्रकार बहुतसे उत्तम और उपयोगी काम बदलकर दोषयुक्त एवं निरुपयोगी होगये हैं। जिससे धार्मिकों-की श्रद्धा भी उन कामोंके करानेसे दूर होती जाती है। इस कारण प्रायः बहुतसे काम बंद होते जा रहे हैं। इसी प्रकार ग्रहशान्तिकी भी लोगोंने यही दशा कर दी है।

ग्रहशान्ति इस नामसे यह स्पष्ट प्रगट हो रहा है कि इस पद्धतिसे ग्रहोंकी शान्ति कराई जाती है। जन्मके समयमें दशा विदशा आदिमें, वर्ष मास दिन गोचराष्टकवर्गादिमें अथवा संसारको दुःख पहुँचानेवाले ग्रहजन्य गोल योगादिमें ग्रहकृत अनिष्ट फलकी आशंकासे ग्रहोंकी शान्ति करानी हो तो वह ग्रहशान्ति पद्धतिके अनुसार करानी चाहिये। पद्धति कैसी हो यह शास्त्रोंमें भले प्रकार लिखा है। उसी लिखे हुए को इधरके एक आधुनिक विद्वान्ने साधारण ब्राह्मणोंकी भलाईके लिये तोड जोडकर संक्षिप्त और सरल ग्रहशान्ति बनायी है। और उसमें कर्मकाण्डी ब्राह्मणोंके उपकारके लिये मातृस्थापन प्रयोग तथा नान्दी श्राद्ध भी संयुक्त कर दिये।

ऐसा करनेसे कही पुस्तकसे लोगोंको अनेकों काम करानेमें सुभीता मिलने लगी । किन्तु आज हम देखते हैं कि बहुधा लोग इसका दुरुपयोग कर रहे हैं ।

इहलौकिक कर्मकाण्डके शान्तिक और पौष्टिक दो विभाग हैं । उनमें–विजलीसे, भूकम्पसे, जल हवा और अग्निसे, अथवा अन्य किसी दैवी कारणसे कुछ उत्पात हुआ हो, अथवा सूर्यादि ग्रहोंसे किसी अनिष्ट फलके होनेकी सम्भावना हो, या मूल आश्लेषा ज्येष्ठा जननादि कुछ दोष हो तो उनकी शान्ति, शान्तिक भागके अनुसार होती है । और गर्भाधानादि संस्कार तथा तेज, बल, बुद्धि, भाग्यादि बढानेके प्रयोग, अथवा वार्षिक व्रतोत्सवादि नैत्यिक और नैमित्तिक कर्म यह पौष्टिक विभागसे किये जाते हैं । अर्थात् शान्ति विभागके कर्मानुष्ठानोंसे शान्ति होती है और पौष्टिक विभागके कर्मानुष्ठानोंसे पुष्टि अर्थात् आयुर्बलवित्तादिकी वृद्धि होती है, अतएव विभागके अतिरिक्त ग्रहशान्ति संयोजन सर्वथा अनुचित प्रतीत होता है ।

इधर जैपुर राज्यकी तलैटीमें हम देखते हैं कि यहांके कर्मकाण्डी ब्राह्मण लोग गर्भाधानादि कई एक संस्कारोंमें विशेष कर जनेऊमें, दत्तक परिग्रहणमें, नैत्यिक कृत्योंमें और व्रतोत्सवादिमें ग्रहशान्ति करवाते हैं । और तो क्या, कोई यात्री गंगास्नान करके आया हो और घर आकर गंगापूजन करना चाहता हो तो उसमें भी ग्रहशान्ति करवाते हैं, हम नहीं कह सकते कि इस प्रकार इसका अनुचित उपयोग करनेसे उनको क्या लाभ होता है ? किंतु लोग कहते हैं कि इस प्रकार वे हर एक काममें ग्रहशान्ति न करावें तो थाली, लोटा, धोती, दुपट्टा और सोनेकी मूर्तियाँ नित्य नहीं मिलें । संभवतः

दो चार या दश बीश रुपयेके लोभसे लोग हर एक काममें ग्रह-शान्ति चाहकर जोड देते हैं । लोभही नहीं किंतु अज्ञानसे भी यह काम हो रहा है । वे नहीं देखते कि इस काममें ग्रहशान्तिकी आवश्यकता है या नहीं । ऐसे महाशयोंसे हमारी प्रार्थना है कि वे ऐसा न करें । कुछ तो शास्त्रोंको देखें कुछ इस विषयके अन्य ग्रन्थोंको पढें और कुछ इन बातोंके जाननेवालोंसे सीखें । ऐसा करनेसे उनको बहुत सफलता मिलेगी ।

हमारे त्रिकालदर्शी उदार ऋषि महर्षियोंने संसारका बड़ा भारी उपकार होनेके लिये शान्तिके कार्योंकी योजना की है । और इन कामोंसे करने करानेवालोंको अनंत लाभ होते हैं । एवं इनको संसारमें व्याप्त करनेवाले (फैलानेवाले) भी हम (ब्राह्मण) ही हैं, किन्तु जब हमहीं इन कामोंके करानेमें अपना स्वार्थ साधेंगे अर्थात् आवश्यक न होनेपर भी प्रधानकी वेदी रचकर उसपर नित्यके घर खर्चकी आधिकाधिकसामग्री धरावेंगे तब इन कामोंकी प्रवृत्ति कैसे होगी ? अत एव इन कामोंके करानेवालोंको उचित है कि जिन कामोंमें किसी खास देवताकी मूर्तिस्थापन करनेकी जरूरत नहीं हो उन कामोंमें प्रधानकी वेदी न बनावें । और जिन कामोंमें ग्रहशान्ति करानेकी आवश्यकता नहीं हो उनमें इसकी भी योजना न करे । यहां हम सर्वसाधारणके जाननेके लिये जिन कामोंमें प्रधान और ग्रहशान्ति करानी चाहिये उनको अति संक्षेपसे बतलाते हैं ।

किसी मनुष्यने किसी कामनासे किसी देवताका आराधन पूजन या व्रत किया हो, अथवा किसी देवताकी प्रतिष्ठा करनी हो, या किसी देवसंबंधी व्रतोत्सवादिका उद्यापन हो तो ऐसे कामोंमें उस देवताकी सुवर्ण आदिकी बनवाई हुई मूर्तिका पूजन करनेके लिये

प्रधानकी वेदी बनवाना चाहिये । इनके सिवाय और कामोंमें प्रधान नहीं करना चाहिये । और अनिष्ट फलकारक ग्रहोंकी शान्तिके लिये, उत्पातोंकी शान्तिके लिये, अथवा ऐसेही अन्य जिन कामोंमें ग्रहोंकी शान्ति या स्थापन पूजनका लेख हो उन कामोंमें ग्रहशान्ति करवाना चाहिये । अन्यत्र नहीं कराना चाहिये ।

ऊपर मैंने जो कुछ लिखा है वह सद्भावसे लिखा है किसी पर कुछ आक्षेप नहीं किया है । क्योंकि ब्राह्मण जगद्गुरु होते हैं वे जो कुछ करते हैं उससे किसी भी अंशमें संसारका भलाही होता है । अतएव मैंने यह लेख इसी कामनासे लिखा है कि यह लोक हित साधक कर्मकाण्डके काम बन्द न हों और इन कामोंके प्रवर्तक ब्राह्मणोंके सब अधिकार यथावत् बन रहें, अस्तु ।

उपरोक्त लेखसे पाठकोंको "ग्रहशान्ति और उसके उपयोग" का परिचय मिल गया होगा । अतः इधरके कर्मकाण्डी ब्राह्मणोंके लिये यह 'ग्रहशान्ति' बहुतही उपयोगी प्रतीत होती है क्योंकि इधर इसका बहुत प्रचार है । जिन दिनोंमें यह छपी नहीं थी उन दिनोंमें भी यह कर्मकाण्डियोंके घरोंमें एक एक दो दो प्रति सबके लिखी हुई मौजूद थीं । जबसे यह छपी है तबसे इसका प्रचार और भी अधिक बढ गया है । किन्तु एक परिमार्जकने इसके कई स्थल अन्य ग्रन्थोंके अनुकूल बनाकर इसे उत्तम बनानेके साथही कुछ क्लिष्ट कर दी है । प्रथम तो कर्म काण्डका कोई भी काम विना बतलाये बनता नहीं और दूसरे वह जटिल हो तो और भी कठिनाई होती है । अतएव अब मैंने इसके जटिलांशोंको सरल करदिये हैं और इसकी सम्पूर्ण इति कर्तव्यता हिन्दी भाषामे बना दी है । साथही गणपति पूजन नान्दीश्राद्ध पुण्याहवाचन कुशकण्डी और पूर्णाहुति आदि कामोंकी

इति कर्तव्यता सर्व साधारणके सहजही समझमें आजानेके लिये स्पष्ट खोलकर विस्तारसे लिख दी है। इस भाँति इसे सर्व साधारणके उपयोगी बनानेमें यथासाध्य उचित प्रयत्न किया है, किन्तु फिर भी कई कारणोंसे त्रुटि रह जाना संभव है अतः विद्वान् लोग इनके सूचित करनेकी कृपा करें।

अब यह पुस्तक सर्वाधिकार सहित "श्रीवेंकटेश्वर" प्रेसाध्यक्ष धर्मरत्न' श्रीमान् सेठ खेमराजजीके अर्पण कर दी है। अतः आशा है कि शान्ति सेवी इसे स्वीकार करेंगे। इति शुभम्।

हितैषी–हनुमान् शर्मा, जयपुर सिटी.

श्रीः

ग्रहशान्तिपद्धतिः

भाषाटीकासहिता

ॐ नत्वा श्रीहरिशंकरं स्वपितरं वागीश्वरीं श्रीगुरुं हेरंबं गिरिजापतिं गणपतिं ध्यायन्परां देवताम् ॥ मातृ-स्थापनपूजनाभ्युदयिकश्राद्धैर्युतां प्रस्फुटां संक्षिप्तां ग्रहशांतिपद्धतिमहं कुर्वे सतां प्रीतये ॥ अथादावाचार्यः शुचिः सन् हस्तमात्रं चतुरंगुलोन्नंत होमानुसारावधिकं वा मध्योन्नतं समेखलं स्थंडिलं कृत्वा ॥ १ ॥

मंगलाचरण--ग्रन्थकारका कथन है कि मैं अपने पिता श्रीहरिशंकरको, सरस्वतीको, गुरुको, शिवजी और गणेशजी को नमस्कार करके तथा और देवताओंका ध्यान करके मातृकाओंका स्थापन पूजन और आभ्युदयिकश्राद्धसहित स्पष्ट और संक्षिप्त (छोटी) ऐसी " ग्रहशान्तिपद्धति " सज्जनोंकी प्रीतिके निमित्त करता हूं ॥ १ ॥ " आरंभकी व्यवस्था" काम आरंभ करनेसे पहले (ग्रहशान्तिकरनेवाला) आचार्य हाथ पांव धोकर पवित्र होके (कार्यानुसार वेदियां बनवावै उनमेंसे (१) ' होमकी वेदी ' एकहाथ लंबी चौडी और चार अंगुल ऊँची (तथा उसके चतुर्थांश व तृतीययांश परमितिमेख-लावाली) बनावे अथवा होमके अनुसार इससे छोटी बड़ी बनावे, जैसी हो वह बीचमेंसे कुछ ऊँची रहनी चाहिये ॥ १ ॥

ततः स्थण्डिलादग्निदिग्भागे कुड्यसमीपे रक्तवस्त्राच्छादितं मातृस्थापनार्थं सुपीठं निर्माय तदुपरि पंचोर्ध्वाः पंच तिर्यक् व्रीहिभिर्यवैर्वा रेखाः कृत्वा तभिः षोडशकोष्ठात्मकं मंडलं विधाय तेषु षोडशाक्षतपुंजान् कृत्वा तत्सँल्लग्नकुड्यादौ पूर्वभागे सप्त घृतधाराः नात्युच्छ्रितनीचाः कृत्वा तासामुपरि कुंकुमबिंदुभिर्विभूषयेत् ॥२॥ ततः स्थंडिलादीशानदिग्भागे सपादहस्तपरिमितां भूमिं त्यक्त्वा शुक्लवस्त्राच्छादितं षट्त्रिंशदंगुलपरिमितं ग्रहपीठं

---

(२) उस वेदीमें अग्निकोणमें सवा हाथके अंतर पर चौबीस अंगुल लंबी चौडी तथा उसके अर्धांश परिमित चांदवाली (यह चाँदा उससे मिला हुआ पूर्वकी ओर होना चाहिये ऐसी ' मातृकाओंकी ' वेदी बनावे । इस पर लाल वस्त्र बिछाकर वस्त्रके ऊपर चावलोंकी अथवा जौ, गेहूंकी पांच रेखा खडी और पांच रेखा आडी बनावे (ऐसा करनेसे सोलह कोठे बन जांयगे) उन कोष्ठोंमें चावलों की ढेरी बनावे। और इससे मिला हुआ जो चाँदा है उसमें घीकी सात धारा खींच कर उनको रोली आदिसे सुशोभित करदे । (३) मातृकाओंकी वेदीके समीप दहनी ओरमें बारह अंगुलकी एक छोटीसी वेदी ' नान्दीश्राद्ध ' को बनावे । इसपर सफेद वस्त्र बिछाकर उसपर दर्भके ९—२ ग्यारह चट स्थापन कर दे।

निर्माय तदुपरि तंडुलैर्नवकोष्ठात्मकं मंडलंविधायतेषु-
वृत्तं मंडलमादित्ये चतुरस्रं निशाकरे ॥ महीपुत्रे त्रिकोणं
स्याद्बुधे वै बाणसन्निभम्॥गुरौ चपट्टिशाकारं पंचकोणं
तु भार्गवे ॥ धनुराकृति मन्दे च शूर्प्पाकारं तु राहवे ॥
केतवे तु ध्वजाकारं मंडलानि क्रमेण तु ॥ इतिकुंकुमेन
मंडलानि सँल्लिख्यतेषुचसुंष्टिमात्राऽभग्नश्वेततंडुलैर्नव
पुंजान् कृत्वा तन्मध्येतद्बाह्यतश्च वक्ष्यमाणक्रमेणयथा-
स्थानमधिदेवादिस्थापनार्थं पुंजान् कुर्यात् ॥ ३ ॥ ततः

ऐसा न करे तो पत्तल आदि पर स्थापन करे ॥ २ ॥
(४) फिर होमकी वेदीसे ईशानमें सवा हाथ जगह छोड़कर
छत्तीस अंगुल लंबी चौडी ' ग्रहोंकी वेदी ' बनावे । इसपर
सफेद वस्त्र विछाकर उसपर अच्छे चावलोंका नौ कोठोंका मंडल
करे और उस मंडलमें सूर्यका गोल, चन्द्रका चौकोर भौमका
त्रिकोण, बुधका बाण समान, गुरुका पाटी जैसा शुक्रका
पाँच कोणका, शनिका धनुषाकार, राहुका शूर्प जैसा और
केतुका ध्वजाके आकारका (रोली आदिसे) मंडल बनावे
और उनपर विना टूटे हुए स्वच्छ चावलोंकी एक एक मुट्ठीकी
नौ ढेरी करे । साथही उसके बाहर भीतर (आगे कहे अनु-
सार) चावलोंकी ढेरियोंसे यथा स्थानमें अधिदेवता आदिका

अष्टमुष्टि भवेत् किंचित्किंचिदष्टौ च पुष्कलमिति ।

स्नातः कृताह्निकः क्रोधलोभादिवर्जितः सुवासाः सपत्निको यजमानः प्राङ्मुख उदङ्मुखो वा उपविश्यकृताचमनः कृतांजलिश्च सन् स्वेष्टदेवगुरुगणपतिनमस्कार

स्थापन करे। (५) ग्रहोंकी वेदीके पास एक छोटी सी वेदी 'कलशस्थापन' की बनाकर उसपर जौ गेहूं या चावलोंकी ढेरी करके उसके ऊपर रुद्रकलश स्थापन करे (६) और यदि आवश्यक हो तो ग्रह तथा मातृकाओंकी वेदियोंके बीचमें 'प्रधान' अथवा 'सर्वतोभद्रादि' की वेदीभी बनावे। इसकी रचना आवश्यकताके अनुसार करे। स्मरण रहे कि यह सब वेदियां स्वच्छ मिट्टी की सुडौल हों। और उनके अग्र भाग आगे पीछे न रहें। यदि मिट्टी न हो तो होमकी वेदीके सिवाय अन्य वेदियाँ चौकीपाटेकी बनावें और फिर आवश्यक सामग्रीको सम्हालकर यथा स्थान रक्खें ॥२॥ "कामका आरंभ" फिर स्नान किया हुआ तथा (संध्या जप पूजादि) नित्य कर्म किया हुआ और क्रोध लोभादिको त्यागा हुआ यजमान तथा उसकी स्त्री दोनों अच्छे (धुले हुए) स्वच्छ वस्त्र पहिनकर मध्य वेदीके पास कुछ जगह छोड़कर पूर्व या उत्तराभिमुख होके कंबल चकमा दर्भा या गलीचा आदिके आसनोंपर बैठ जांय। (शान्ति पुष्ट्यादि कामोंमें पत्नीको प्रायः दहने हाथ बैठाकर गँठ बंधनादि कराके) यजमान

---

१ दिने प्राङ्मुखो रात्रौ उदङ्मुखः शिवकार्ये सर्वदैवोदङ्मुखः।

पूर्वकं संकल्पं कुर्यात् ॥ ४ ॥ तद्यथा सुमुखश्चैकदन्तश्च कपिलो गजकर्णकः ॥ लम्बोदरश्च विकटो विघ्ननाशो विनायकः ॥ १ ॥ धूम्रकेतुर्गणाध्यक्षो भालचन्द्रो गजाननः ॥ द्वादशैतानि नामानि यः पठेच्छृणुयादपि ॥ २ ॥ विद्यारंभे विवाहे च प्रवेशे निर्गमे तथा ॥ संग्रामे संकटे चैव विघ्नस्तस्य न जायते ॥ ३ ॥ शुक्लांबरधरं देवं शशिवर्णं चतुर्भुजम् ॥ प्रसन्नवदनं ध्यायेत् सर्वविघ्नोपशांतये ॥ ४ ॥ अभीप्सितार्थसिद्ध्यर्थं पूजितो यः सुरासुरैः ॥ सर्वविघ्नहृते तस्मै गणाधिपतये नमः ॥५॥

आचमन करे और अंजली करके स्वस्थचित्त होकर अपने इष्टदेव तथा गुरु और गणेशजीको नमस्कार करे ॥ ४ ॥ " देवताओंका ध्यान,, सुमुख एकदंत कपिल गजकर्ण लंबोदर विकट विघ्ननाशक विनायक ॥ १ ॥ धूम्रकेतु गणाध्यक्ष भालचन्द्र और गजानन यह बारह नाम गणेशजीके हैं। इनको जो पढे सुने उसको सुख मिलते हैं ॥ २ ॥ विद्याके आरंभमें, विवाहमें, प्रवेशमें-प्रस्थानमें, संग्राममें और संकटमें जो इनका ध्यान करे उसको विघ्न नहीं होता है॥ ३ ॥ श्वेत वस्त्र धारण किये हुए चन्द्रसमान वर्णवले चतुरर्भुज और प्रसन्नवदन ऐसे गणेशजीका ध्यान करनेसे सब विघ्न शान्त हो जाते हैं ॥ ॥ अपने मनोरथ सिद्ध होने के लिये देव और दानवभी जिनको पूजते हैं उन सब विघ्नोंको हरनेवाले गणेश-

वक्रतुंड महाकाय कोटिसूर्यसमप्रभ। निर्विघ्नं करु मे देव सर्वकार्येषु सर्वदा ॥६॥ सर्वमंगलमांगल्ये शिवे सर्वार्थ-साधिके ॥ शरण्ये त्र्यंबके गौरि नारायणि नमोऽस्तु ते ॥ ७ ॥ सर्वदा सर्वकार्येषु नास्ति तेषाममंगलम् ॥ येषां हृदिस्थो भगवान् मंगलायतनं हरिः ॥ ८ ॥ तदेव लग्नं सुदिनं तदेव ताराबलं चंद्रबलं तदेव ॥ विद्याबलं दैवबलं तदेव लक्ष्मीपते तेऽङ्घ्रियुगं स्मरामि ॥ ९ ॥ यत्र योगीश्वरः कृष्णो यत्र पार्थो धनुर्द्धरः ॥ तत्र श्रीर्विजयो भूतिर्ध्रुवा नीतिर्मतिर्मम ॥ १० ॥ सर्वेष्वारंभकार्येषु

जोको नमस्कार करते हैं ॥ ५ ॥ वक्रतुण्ड (बाँकी सूंडवाले महाकाय (बडे शरीरवाले) और कई सूर्योंके समान प्रभावाले हे देव ! आप सब कामोंमें सदा सर्वदा कोई विघ्न न होने दें ॥ ६ ॥५॥ सर्व मंगल कार्योंमें सर्वार्थ साधन करा नेवाली हे शिवे !त्र्यंबके ! हे गौरि ! हे नारायणि ! आपको नमस्कार है ॥७॥जिनके हृदयमें मंगलोंके आयतन (मकान) भगवान् विराजमान हों उनके सदा सर्वदा सब कामोंमें कोई अमंगल (खोटे काम) नहीं होते हैं ॥८॥ जो लक्ष्मीपति (भगवान्) के चरणोंका स्मरण करते हैं उनके वही अच्छा लग्न, वही अच्छा दिन. वही ताराबल; वही चन्द्रबल, वही विद्याबल और वही दैवबल है॥९॥जहां योगीश्वरकृष्ण और धनुषधारी अर्जुन हों वहीं विजयश्री है । यह हमारी ध्रुव गाढी नीति है॥१०॥ आरंभ किये हुए सब कामोंमें त्रिभुवने-

त्रयस्त्रिभुवनेश्वराः देवा दिशंतु नः सिद्धिं ब्रह्मेशान-
जनार्दनाः ॥११॥ ६ ॥ श्रीमन्महागणाधिपतये नमः ।
श्रीलक्ष्मीनारायणाभ्यां नमः ।उमामहेश्वराभ्यां नमः।
शचीपुरंदराभ्यां नमः । मातापितृभ्यां नमः । इष्टदेव-
ताभ्यो नमः । कुलदेवताभ्यो नमः । सर्वेभ्यो देवेभ्यो
नमः । सर्वेभ्यो ब्राह्मणेभ्यो नमः ॥ ७ ॥ ततः संकल्पं
कुर्यात् । तत्रादौ दक्षिणकरे दूर्वाक्षतपुष्पजलान्यादाय
ॐ विष्णुर्विष्णुर्विष्णुःश्रीमद्भगवतोमहापुरुषस्यविष्णो
राज्ञया प्रवर्तमानस्यअद्यश्रीब्रह्मणोद्वितीयपरार्धे तदादौ
श्रीश्वेतवाराहकल्पेसप्तमेवैवस्वतमन्वंतरेअष्टाविंशतितमे
कलियुगे कलिप्रथमचरणेभारतवर्षेभरतखण्डे जम्बूद्वीपे
आर्यावर्तांतर्गतब्रह्मावर्तैकदेशे कन्याकुमारिकाक्षेत्रे श्री-
महानद्योर्गंगायमुनयोः पश्चिमे तटे नर्मदाया उत्तरे तटे
विक्रमशके बौद्धावतारे देवब्राह्मणानां सन्निधौ प्रभवादि

श्वर तीनों, देव विष्णु महेश यह हमारी रक्षा करें ॥ ११ ॥
इस प्रकार गणेश लक्ष्मीनारायण उमामहेश्वर इन्द्र इन्द्राणी
माता पिता इष्टदेव कुलदेव अन्य सब देव और उपस्थित पूजा
ब्राह्मण इनको पृथक् पृथक् नमस्कार करे ॥ ७ ॥ "(संकल्प
विधि" उपरोक्त काम किये पीछे दहने हाथकी अंजली (हथेली
में अथवा चमचीमें जल लेकर उसमें गंधाक्षतादि करके और

अमुकसंवत्सरे अमुकायने अमुकर्तौ अमुकमासे अमुक-
पक्षे अमुकतिथौ अमुकवासरे अमुकनक्षत्रे अमुकराशि-
स्थिते चंद्रेअमुकराशिस्थिते सूर्येंअमुकराशिस्थितेदेवा-
गुरौशेषेषुग्रहेषुयथायथस्थानस्थितेषुसत्सुएवंगुण विशे-
षणविशिष्टायां पुण्यतिथौअमुकगोत्रोऽमुकशर्माहंममा-
त्मनः श्रुतिस्मृतिपुराणोक्तफलावाप्तये ममकलत्रादिभिः
सहसकलाधिव्याधिनिरसनपूर्वकदीर्घायुष्यबलपुष्टिनैरु
ज्यादिसकलाभीष्टसिद्ध्यर्थम्अमुककर्माहंकरिष्ये।तदं-
गतया मातृस्थापनपूजनकर्माहं करिष्ये ।।तदादौनिर्वि-
घ्नतासिद्ध्यर्थं गणपतिपूजनं चकरिष्ये।।८।।गोधूमादि-
निर्मितासने गणपतिं संस्थाप्य अक्षतान् गृहीत्वा-

दर्भ तथा दूर्वाका पवित्र संयुक्तकर उसदिन जो वर्तमानमास-
पक्ष, तिथि, वार नक्षत्र हों उनका तथा गोत्रसहित अपनानाम
उच्चारण जिस कामना वा जिस कामके निमित्तग्रहयज्ञ
करना हो उसका उद्देश्य दिखलाके शुद्ध रूपसे संकल्प करे।
ॐ तत्सदद्येत्यादि० यह संकल्प मूलमें स्पष्ट है ही इसमें मास
पक्षादि, नाम गोत्रादि तथाअमुक कर्मकी जगह जो कर्म हो
वह और जोडकर संकल्प करके वह जल अन्य पात्र दूने
आदिमें छोडदे ॥ ८ ॥ "गणेशपूजन" संकल्प किये पीछे
यजमान अपने संमुख चौकी आदि पर लाल वस्त्र विछाके
उसके ऊपर गेहूँ आदिका स्वस्तिक अथवा पुंज (ढेरी)

ॐगजास्य गण नाथत्वं सर्वविघ्नविनाशन।लंबोदरत्रिनयन आगच्छ गणनायक॥ १॥ गणानां त्वेति मंत्रेण गणनाथं प्रपूजयेत्॥ॐ गणानान्त्वा गणपतिं ठं. हवामहे प्रियाणान्त्वा प्रियपतिं ठं.हवामहे निधीनान्त्वानिधिपतिं ठं.हवामहेव्वसोमम। आहमजानिगर्भधमात्वमजासि गर्भधम्॥१॥ ऋद्धिसिद्धिसहितगणपतये नमः गणपतिं आवाहयामि स्थापयामि। आसनार्थं अथतान् समर्पयामि पाद्यं० अर्घ्यं० आचमनीयं० स्नानं० वस्त्रं० गंधं० अक्षतान् ० पुष्पं धूपं दीपं०नैवेद्यं० आचमनं ० तांबूलं० दक्षिणां० नमस्कारं समर्पयामि। इतियथालब्धोपचारैः सम्पूज्य पुष्पाक्षतादीन् गृहीत्वा।वक्रतुंड महाकाय सूर्यकोटिसमप्रभ। निर्विघ्नं कुरु मे देव सर्वकार्येषु सर्वदा॥ १॥ गणपतये नमः मंत्रपुष्पांजलिं समर्पयामि॥ ९॥ अथ प्रार्थना। विघ्नेश्वराय वरदाय

बनाकर उसपर गणेशजीको स्थापन करे। और "गजास्य गणनाथ०" "गणानान्त्वा०" इनसे उनका आवाहन करके आसन, पाद्य, अर्घ्य, आचमन, स्नान, वस्त्र, यज्ञोपवीत, गंध, अक्षत, पुष्प, धूप, दीप,मोदकादि नैवेद्य,आचमन फल,तांबूल,दक्षिणा और नमस्कार इन उपचारोंसे। अथवा यथोपलब्ध उपचारोंसे) पूजन करके "वक्रतुंड महाकाय०" से मंत्रपुष्पांजलि अर्पण करे ॥ ९॥ फिर हाथ जोडे-

घोषाः ॥१०॥ अस्माकमिन्द्रः सम्भृतेषुध्वजेष्ष्वस्माकं याऽइषवस्तांजयन्तु । अस्माकं व्वीराऽउत्तरेभवन्त्वः स्स्मा२ऽउदेवाऽअवताहवेषु ॥ ११ ॥ अमीषाञ्चित्तम्प्रतिलोभयन्तीगृहाणाङ्गान्न्यप्प्वेपरेहि॥ अभिप्प्रेहिनिर्दह ह्स्सुशोकैरन्धेनामित्रास्तमसासचन्ताम्॥ १२॥ अवसृष्टापरापतशरव्व्येब्ब्रह्मसᳬशिते। गच्छामित्रान्प्रपद्यस्वामामीषाङ्कञ्चनोच्छिषः॥ १३॥ प्रेताजयतानरऽइन्द्रो वः शर्म्मयच्छतु। उग्ग्रावः सन्तुबाहवोऽनाधृष्ष्यायथाऽसथ ॥ १४ ॥ असौ यासेनामरुतः परेषामब्भ्येतिनऽओजसास्प्पर्द्धमाना। ताङ्गूहततमसाऽपव्व्रतेनयथामीऽअन्योऽअन्यन्नजानन्॥१५॥ यत्रबाणाःसम्पतन्तिकुमाराव्विशिखाऽइव । तन्नऽइन्द्रोबृहतिरदितिः शर्म्म यच्छतु विश्श्वाहा शर्म यच्छतु॥१६॥ मर्म्माणितेव्वर्म्मणाच्छादयामिसोमस्त्वाराजाऽमृतेनानुवस्ताम्। उरोर्व्वरीयोव्वरुणस्तेकृणोतुजयन्तन्त्वाऽनुदेवामन्दतु॥ १७ ॥ आनोभद्राः क्रतवोयन्तुव्विश्वतोऽदब्धासोअपरीतासऽउद्भिदः।देवानोयथासदमिद्वृधेऽअसन्नप्रायुवोरक्षितारो दिवेदिवे ॥ १ ॥देवानाम्भद्रासुमतिर्ऋजूयतान्देवानाᳬ रातिरभिनोनिवर्तताम् । देवानाᳬसख्यमुपसेदिमाव्वयं देवानऽआयुःप्रतिरन्तुजीवसे ॥ २ ॥ तान्पूर्वयानिविदा

अवसृष्टा० १३ प्रेताजयता० १४ असौया० १५ यत्र बाणाः० मर्म्माणिते० १७ इन मंत्रोंसे तथा अनोभद्राः० १

हूमहेव्वयम्भगम्मित्रमदितिन्दक्षमस्त्रिधम्।अर्य्यमणंवरुणँ-सोममश्विनासरस्वतीनःसुभगामयस्करत् ॥३॥ तन्नो-व्वातोमयोभुवातुभेषजन्तन्मातापृथिवीतत्पिता द्यौः। तद्ग्रावाणःसोमसुतोमयोभुवस्तदश्विनाश्रृणुतंधिष्ण्या युवम् ॥ ४ ॥तमीशानञ्जगतस्तस्थुषस्स्पतिंधियञ्जिन्व-मवसेहूमहेव्वयम्। पूषानोयथाव्वेदसामसद्वृधेरक्षितापा-युरदब्धःस्वस्तये ॥५॥ स्वस्तिनऽइन्द्रोवृद्धश्रवाःस्व-स्तिनःपूषाव्विश्ववेदाः।स्वस्तिनस्तार्क्ष्योऽअरिष्टनेमिः स्वस्तिनोबृहस्पतिर्द्दधातु॥ ६ ॥ पृषदश्श्वामरुतःपृश्नि-मातरःशुभंयावानोव्विदथेषुजग्मयः।अग्निजिह्वामनवः सूरचक्षसोविश्श्वनोदेवाऽअवसागमन्निह ॥ ७ ॥ भद्रं कर्णेभिःश्रृणुयामदेवाभद्रम्पश्श्येमाक्षभिर्य्यजत्राःस्थिरै-रङ्गैस्तुष्टुवाᳬसस्तनूभिर्व्यशेमहिदेवहितंय्यदायुः॥८॥ शतमिन्नुशरदोऽअन्तिदेवायत्रानश्श्चक्राजरसंतनूनाम्। पुत्रासो यत्रपितरोभवन्तिमानोमध्यारीरिषतायुर्गन्तोः ॥ ९ ॥इति शान्तिपाठः ॥ ११ ॥ अथ मातृस्थापन-पूजनप्रयोगः। यजमानः देवाभिमुख उपविश्य अक्षत-

---

देवानां० २ तान्पूर्वया० ३ तन्नोव्वातो० ४ तमीशानं० ५ स्वस्तिनऽइ० ६ पृषदश्वा० ७ भद्रंकर्णे० ८ शतमि० ९ इन मंत्रोंसे शान्ति पाठ करे ॥ ११ ॥ " मातृस्थापन पूजन विधि " मातृकाओंकी वेदीके समीप अथवा यथा स्थानपर

बाणवा२ऽउत॥अनेशन्नस्यया ऽइषवऽआभुरस्यनिषंगधिः ॥ ६ ॥ विजयायै नमः विजयां आवाहयामि स्थापयामि ॥ विष्णुरुद्रार्कशक्रादिगीर्वाणेषु व्यवस्थिताम्॥ त्रैलोक्यवंदितां देवीं जयमावाहयाम्यहम् ॥ ७ ॥ ॐ यातेरुद्रशिवातनूरघोरापापकाशिनी॥ तयानस्तन्वाशंतमायागिरिशंताभिचाकशीहि ॥ ७ ॥ जयायै नमः जयां आवाहयामिस्थापयामि ॥कोष्ठे बाह्ये। मयूरवाहनारूढां शक्तिखड्गधनुर्द्धराम् । आवाहयेद्देवसेनां तारकासुरमर्दिनीम् ॥८॥ ॐ देवानां भद्रासुमतिर्ऋजूयतां देवाना७ंरातिरभिनोनिवर्ततताम् ॥ देवानां७ंसख्यमुपसेदिमां व्वयन्देवानआयुः प्रतिरंतुजीवन से ॥८॥देवसेनायैनमः देवसेनां आवाहयामि स्थापयामि कव्यमादाय सततं पितृभ्यो या ॥ प्रयच्छति पितृलोकार्चितां देवीं स्वधामावाहयाम्यहम् ॥ ९ ॥ ॐ पितृभ्यःस्वधायिभ्यस्वधाः नमःपितामहेभ्यःस्वधायिभ्यःस्वधानमः प्रपितामहेभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधानमः अक्षन्पितरोऽमीमदंतपितरोऽतीतृपंतपितरः पितरः शुन्धध्वम् ॥९ ॥ स्वधायैनमः स्वधां आवाहयामि स्थापयामिस्वधे इहागच्छेह तिष्ठ॥ बाह्येऽग्निकोणे—हविर्गृहीत्वा सततं देवेभ्योयाप्रहच्छति॥

यातेरुद्र० " से जयाका ॥ ७ ॥ " मयूरवाहनां० देवानां० " देवसेनाका ॥ ८ ॥ " कव्यमादाय० पितृभ्यः० " से स्वधाका ॥ ९ ॥ " हवि० स्वाहा० " से स्वाहाका ॥१०॥

वह्निप्रिया तु स्वाहा समगच्छतु मेऽध्वरे ॥ १० ॥ ॐ स्वाहायज्ञंमनसःस्वाहोरोरंतरिक्षात्स्वाहा ॥ द्यावापृथिवीभ्या७स्वाहाव्वातादारभेस्वाहा ॥ १० ॥ स्वाहायै नमः स्वाहां आवाहयामि स्थापयामि ॥ भूतग्राममिमं कृत्स्नं मया प्रीत्यादितं पुरा ॥ त्रैलोक्यपूजितां देवीं मातरं चाह्वयाम्यहम् ॥ ११ ॥ ॐ आपोऽअस्मान्मातरःशुंधयंतुघृतेननोघृतप्वः पुनंतु ॥ विश्व७हिरिप्रम्प्रवहंतिदेवीरुदिदाभ्यः शुचिरापूतऽएमिदिक्षातपसोस्तनूरसितान्त्वाशिवा७शग्मामपरि दधेभद्रं वर्णं पुष्यन् ॥११॥ मातृभ्यो नमः मातृः आवाहयामि स्थापयामि । आवाहयेल्लोकमातृजगत्पालनसंस्थिता ॥ शक्राद्यैर्वंदिता देवी स्तोत्रपाठाभिचारकैः ॥ १२ ॥ ॐस्वाहायज्ञं वरुणः सुक्षत्रो भेषजं करत् ॥ अतिच्छंदाऽइन्द्रियंवृहदृषभोगौर्व्वयोदधुः ॥ १२ ॥ लोकमातृभ्यो नमः लोकमातृः आवाहयामि स्थापयामि ॥ मनस्तुष्टिकरीं देवीं लोकानुग्रहकारिणीम् । सर्वकामसमृद्ध्यर्थं धृतिमावाहयाम्यहम् ॥ १३ ॥ यत्प्रज्ञानमुतचेतोधृतिश्चयज्ज्योतिरंतरमृतंप्रजासु ॥ यस्मान्नऽऋतेकिंचन कर्मक्रियतेतन्मेमनः

" भूत० आपो " से मातृकाओंका ॥ ११ ॥ " आवा० स्वाहा० " से लोकमातृकाओंका ॥ १२ ॥ " मन० यत्प्र० "

आरभ्य–ॐ गणपतये नमः पाद्यं अर्घ्यं॰ आचमनीयं॰ स्नानं गंधं॰ अक्षतं॰ पुष्पं॰ धूपं॰ दीपं॰ नैवेद्यं॰ आचमनं॰ तांबूलं॰ दक्षिणां॰ नमस्कारं समर्पयामि। ॐ गौर्यै॰ नमः पाद्यं॰अर्घ्यं॰ आमचनं स्नानं॰ वस्त्रं॰ गंधं॰ अक्षतं॰ पुष्पं॰ धूपं॰ दीपं॰ नैवेद्यं॰ फलं॰ तांबूलं॰ दक्षिणां॰नमस्कारं समर्पयामि ॐ पद्मायै नमः पा॰ अ॰ आ॰ स्नानं॰ गं॰ अ॰ पु॰ धू॰ दी॰ नै॰ फ॰ तां ॰ द॰न॰ समर्पयामि। एवं ॐ शच्यै नमः। ॐ मेधायै नमः। ॐ सावित्र्यै न॰। ॐ विजयायै नमः ॐ जयायै नमः। ॐ देवसेनायै न॰ ॐ स्वधायै न॰ ॐ स्वाहायै न॰। ॐ मातृभ्यो नमः॰ ॐ लोकमातृभ्यो नमः ॐ धृत्यै न॰। ॐ पुष्ट्यै न॰। ॐ तुष्ट्यै नमः ॐ आत्माकुलदेवतायै नमः। ॐ श्रियै नमः। ॐ लक्ष्म्यै नमः ॐ धृत्यै न॰। ॐ मेधायै न॰।ॐप्रज्ञायै न॰। ॐपुष्ट्यै

प्रथमसे आरंभ करके उनका पृथक् पृथक् पूजन करे अर्थात् पहले गणेशजीका पाद्य, अर्घ्य, आचमन, स्नान, गंध, अक्षत, पुष्प, धूप, दीप, नैवेद्य, आचमन, फल, तांबूल, दक्षिणा और नमस्कारसे पूजन करके फिर इसी प्रकार गौर्यै नमः पाद्यं॰ अर्घ्यं॰ आचमनं॰ स्नानं गंधं॰ इत्यादि पद्मायै नमः पाद्यं॰ अर्घ्यं॰ आचमनं॰ इत्यादिसे मातृकाओंका तथा

न० । ॐसरस्वत्यै नमः । प्रत्येकमर्चयेत् ॥ १५ ॥
अथवा सगणेशगौर्यादिस्थापितमातृभ्योनमः आसनं०
पाद्यं अर्घ्यं० आचमनीयं० स्नानं० वस्त्रं० गंधं० अक्षतं०
पुष्पं०धूपं दीपं०गुडपक्कान्नादिनैवेद्यं० आचमनं०फलं०
तांबूलं० दक्षिणां० नमस्कारं समर्पयामि । इतिएकतंत्रे-
णैव पूजयते ॥१६॥ ततः श्रीफलोपरिपुष्पाक्षतं निधाय
श्रीफलंदेवताभिमुखं कृत्वा--पत्रंपुष्पं फलंतोयंरत्नानि
विविधानि च । गृहाणार्घ्यं मया दत्तं देहि मे वांछितं
फलम् ॥ १ ॥ रूपं देहि जयं देहि भाग्यं भवति देहि

वसोर्द्धाराओंका सबका पृथक् पृथक् पूजन करे॥ १४ ॥ अथवा
गणपतिसहितगौर्यादिस्थापितमातृभ्यो नमः आसनं० पाद्यं०
अर्घ्यं० आचमनं० स्नानं० गंधं० वस्त्रं० अक्षतं० पुष्पं०धूपं०
दीपं०गुडपक्कान्नादिनैवेद्यं०आचमनं०फलं०तांबूलं० दक्षिणां०
नमस्कारं समर्पयामि, इस प्रकारसे सबका एकही जगह एकही
बारमें पूजन करे (मातृकाओंके पूजनमें नैवेद्यमें बहुधा
लोग प्रायः गुड चढाया करते हैं, किन्तु गुडपक्कान्नका अभि-
प्राय केवल गुडके ढेलेसे नहींहै । गुडके बने हुए पक्कान्न शीरा
लपशी या मोहन भोग हलवा आदिसे है अस्तु) ॥ १६ ॥
पूजन किये पीछे यजमान एक नारियल लेकर उस पर अक्षत
पुष्प धरे और उसका मुंह देवताओंकी ओर करके "पत्र
पुष्पं फलं० रूपं देहि० फलेन फलितं०" यह प्रार्थना करे।

स्वाहानामयं च वृद्धिः । (सर्वं पितृकार्यमपि सव्येनैव स्वाहाकारसंयुक्तं यवैरेव दैववत्कुर्यात् । वृद्धिः इत्युक्तौ पित्रासने जलप्रक्षेपः) ॥ १८ ॥ अमुकगोत्रा मातृ-पितामहीप्रपितामह्यः नांदीमुख्यः ॐभूर्भुवः स्वः इदं वः पाद्यं स्वाहानामयं च वृद्धिः।अमुकगोत्राःपितृपितामह-प्रपितामहाःनांदीमुखाः ॐ भूर्भुवः स्वः इदं वः पाद्यं स्वाहानामयं च वृद्धिः।अमुकगोत्राः मातामहप्रमातामह-वृद्धप्रमातामहाः पत्नीसहिताःनान्दीमुखाः ॐ भूर्भुवः स्वः इदं वः पाद्यं स्वाहानामयं च वृद्धिः।श्रीगणेशाम्बिकयोः ॐ भूर्भुवः स्वः इदं वः पाद्यं स्वाहानामयं च वृद्धिः ॥१॥ पादोदकं परित्यज्य आचमनं प्राणायामः ॥ १९ ॥ कर्मपात्रस्थापनं कर्मपात्रे आसनं आसने

स्वः पाद्यं स्वाहानामयं च वृद्धिः " यह बोलता जाय। (स्मरण रहे कि इसमें जहां वृद्धिः ' बोले दुर्वांकुरोंसे कुछ जल लेकर आसन पर छोडता जाय । इसका तात्पर्य यह है कि सत्यवसुसंज्ञका॰ इत्यादि बोलते हुए दधि दुर्वा-दिको हिलाना औ वृद्धिकी जगह जल पटकना यही संकल्प विधिसे श्राद्ध करना है) ॥ १८ ॥ अतएव मातृपितामही-प्रपितामही पितृपितामहप्रपितामह और मातामहप्रमातामहवृद्ध प्रमातामह इत्यादि प्रत्येकमें इसी प्रकार दध्यादिको हिला-कर जल छोडे । (यह पाद्य है) ॥ १९ ॥ इस पादोदक (सराई आदि) को अलग करके कर्मपात्रका स्थापन करे।

पात्रं पात्रे पवित्रं शन्नोदेवीति जलपूरणम्। शन्नोदेवीरभि-ष्टयऽआपोभवन्तुपीतये । शंय्योरभिस्रवंतुनः ॥ १ ॥ यवोसीति यवप्रक्षेपः।यवोसियवयास्स्मद् द्वेषोयवयारा-तीर्दिवेत्वान्तरिक्षायत्वापृथिव्यैत्वाशुन्धंताँल्लोकाः पितृ सदनाःपितृसदनमासि ॥ २ ॥ इतिमंत्रेण चंन्दनं पुष्पं दधि च प्रक्षिपेत्।दधिक्राव्णोऽअकारिषञ्जिष्णोरश्श्वस्य व्वाजिनः । सुरभिनोमुखाकरत्प्रणऽआयूꣳषितारिषत् ॥ ३ ॥ २० ॥ स्वास्तिनऽ इन्द्र इति दिग्बंधः । स्व-स्तिनऽइन्द्रोव्वृद्धश्रवाः स्वस्तिनः पूषाव्विश्ववेदाः । स्वस्तिनस्तार्क्ष्योऽअरिष्टनेमिः स्वस्तिनोबृहस्पतिर्दधातु ॥ ४ ॥ (इति पूर्वादिदिक्षु अक्षतान् प्रक्षिपेत् ।) संकल्पविधिनाआभ्युदयिकश्राद्धोपहाराणांपवित्रतास्तु देश--काल--पाक--पात्र--उपहार--द्रव्यश्रद्धासम्पदस्तु । सत्यवसुसंज्ञका विश्वेदेवाः नांदीमुखाः ॐ भूर्भुवः स्वः

कर्मपात्रके लिये आसन धरे आसनपर पात्र धरे पात्रमें पवित्र (दुर्वांकुरादि) धरे और "शन्नोदेवी०" से उसमें जल भरे । "यवोसि० " से कुछ जौ तथा चन्दन पुष्प और दधि-क्राव्णो० से दही रखे ॥ २० ॥ फिर हाथमें अक्षत फेंककर " स्वस्तिनऽइन्द्रो०" से पूर्वादि दिशाओंमें अक्षत लेकर दिग्बंधन करके पवित्रतासे उपस्थित सामग्रीको पवित्र करे और देश काल पाक पात्रादिके विचारमें श्रद्धा है ऐसा कहकर फिर उसी प्रकार पात्रस्थ जलादिको दूर्वासे हिलाता जाय और

त्वमिन्द्रप्रतूर्तिष्वभिव्विश्वाऽअसिस्स्पृधः।अशस्तिहा-
जनिता व्विश्वतूरसि त्वन्तूर्य्यतरुष्यतः ॥ ५ ॥
अनुतेशुष्मन्तुरयन्तमीयतुः क्षोणी शिशुन्नमातरा ।
व्विश्श्वास्तेस्पृधः श्नथयन्त मन्यवेव्वृत्रंयदिन्द्रतूर्व्वसि
॥ ६ ॥ यज्ञोदेवानाम्प्रत्येति सुम्नमादित्यासोभवतामृ-
डयन्तः । आवोव्वर्चीसुमतिर्वावृत्यादर्ठंहोश्चिद्या ।
व्वरिवोव्वित्तरासत् ॥ ७ ॥ अदब्धेभिः सवितः पायुभि-
ष्ट्वर्ठंशिवेभिरद्यपरिपाहिनोगयम् । हिरण्यजिह्वः सुवि-
तायनव्यसेरक्षामाकिर्न्नोअघशर्ठंसऽईशत ॥ ८ ॥ कृतस्य
नांदीश्राद्धस्य प्रतिष्ठासिद्ध्यर्थंद्राक्षामलकनिष्क्रयिणीं
दक्षिणां दातुमहमुत्सृजे ॥ २३ ॥ ततः स्तुतिः । माता
पितामही चैव तथैव प्रपितामही । पिता पितामहश्चैव
तथैव प्रपितामहः ॥ १ ॥ मातामहस्तत्पिता च प्रमा-
तामहकादयः । एते भवन्तु सुप्रीताः प्रयच्छंतु च मङ्ग-
लम् ॥ २ ॥ इडामग्नेपुरुदर्ठंसर्ठंसनिङ्गोःशश्वत्तमर्ठंहवमा-

देवानां० अदब्धेभिः० " इन आठ ऋचाओंका पाठ करके
'कृतस्य नान्दीश्राद्धस्य प्रतिष्ठासिद्ध्यर्थं द्राक्षामलकनिष्क
यिणीं दक्षिणां दातुमहमुत्सृजे ' यह कहकर दाख तथा
आँवलोंके मूल्यकी दक्षिणा चढा दे ॥ २३ ॥ और फिर
" मातापितामही० मातामहस्तत्पिता० " इनसे उनकी स्तुति
करे । तथा "इडामग्ने०" से एक पैसेसे पात्रके टंकार कर दे।

नायसाध। स्यान्नः सूनुस्तनयो विजवाग्नेसातेसुमतिर्भू त्वस्मे ॥१॥ इत्यनेन मंत्रेण पात्रटंकारं मुद्रार्पणेनकर्तव्यम्।अनेन कर्मणा नान्दीमुखदेवताः प्रीयन्ताम् वृद्धिः शिवं शिवम् । कृतस्य नान्दीश्राद्धस्य विधेर्यन्न्यूनमतिरिक्तं तत्सर्वं भवतां ब्राह्मणानां वचनात् श्रीगणेशाम्बिकयोः प्रसादात् सर्वविधेः परिपूर्णताऽस्तु । इतिनान्दीश्राद्धप्रयोगः ॥ २४ ॥ ततो बहिः शालामागत्य ग्रहयज्ञप्रारंभनिमित्तं "दधिदूर्वांकुशाग्रैश्च कुसुमाक्षतकुंकुमैः। सिद्धार्थोदकपूगैश्च अष्टांगो ह्यर्घ उच्यते"॥इत्यष्टांगमर्घं संपाद्य वरणं कुर्यात् ॥ प्राङ्मुखः सपत्नीको यजमानः स्थित्वा उदङ्मुखानां ऋत्विजां वरणं कुर्यात्॥

फिर 'अनेन कर्मणा नान्दीमुखदेवताः प्रीयंताम्' यह बोलकर 'कृतस्य नान्दीश्राद्धस्य विधेः०' इससे जल छोड दे इति ॥ २४ ॥ "अर्घसम्पादन"। उपरोक्त काम हुए पीछे ग्रहयज्ञ प्रारंभ करनेके निमित्त दही, दूर्वा, कुशाग्र, पुष्प, अक्षत, कुंकुम, सरसों, जल, सुपारी और (पैसा) इन सबका अर्घ बनावे (अर्थात् १ सराईमें यह सामग्री रखकर दूसरी सराईसे ढाँक दे और उसके ऊपर मोली लपेट दे) फिर पत्नी सहित यमराज और पूर्वाभिमुख बैठकर अपनी दहनी ओर उत्तराभिमुख बैठे हुए ऋत्विजोंका वरण करे। वरण करनेसे

---

१ देवाभिमुखः । २ यजमानदक्षिणांगस्थानाम् ।

मर्माणितेव्वर्म्मणाच्छादयामिसोमस्त्वा राजामृतेनानु-
वस्ताम् ॥ उरोर्व्वरीयोव्वरुणस्तेकृणोतुजयन्तन्त्वानु-
देवामदन्तु ॥१७॥ ॐ गणानान्त्वागणपतिर्ठंहवामहे
प्रियाणान्त्वाप्प्रियपतिर्ठंहवामहे निधीनान्त्वानिधिप-
तिर्ठंहवामहे व्वसोमम॥आहमजानिगर्ब्भधमात्त्वमजा-
सिगर्भधम् ॥ १ ॥ तत उपविश्य यजमानः आच-
म्य प्राणानायम्य देशकालौ संकीर्त्य ॥ २६ ॥
ॐ तत्सदद्येत्यादि० अमुककर्मप्रारंभनिमित्तं श्रीगणे-
शाम्बिकयोः प्रसादार्थमनोभीष्टकामनासिद्ध्यर्थंसर्ववि-
घ्ननिवारणार्थंलाभक्षेमाविजयारोग्यसम्पत्प्राप्तिकामः श्री-
परमेश्वरप्रीतये ग्रहयज्ञकर्माहं करिष्ये । ग्रहयज्ञांगभूतं
ब्रह्माचार्यर्त्विजां वरणमहं करिष्ये। अर्घं गृहीत्वा प्रार्थ-
येत्। आयुरारोग्यपुत्रादिसुखश्रीप्राप्तये मम ।आपद्वि-
घ्नविनाशाय शत्रुबुद्धिक्षयाय च ॥१॥ विशेषः काम्य-

का पाठ करे ॥ २५ ॥ पाठ समाप्त हुए पीछे यजमान बैठ
जाय । और आचमनादि करके आगे लिखे संकल्प करे
॥ २६ ॥ " ब्राह्मणवरण " ॐ तत्सदद्येत्यादि० यह दोनों
संकल्प करके अर्घको हाथमें लेकर ब्राह्मणोंसे प्रार्थना करे
कि आयु, आरोग्य, पुत्रादिक और सुख तथा लक्ष्मीकी
प्राप्तिके लिये और आपत्ति विघ्न इनके विनाश तथा शत्रुकी
बुद्धिके क्षयके, लिये ॥ १ ॥ हे द्विजश्रेष्ठो ! आप कृपा

होमेन सुहुतं समिदादिभिः । नवग्रहमखं यज्ञं कर्तुं यूयं प्रसीदत ॥ २ ॥ स्वागतं भो द्विजश्रेष्ठा मदनुग्रहकारकाः ॥ इदमर्घ्यमिदं पाद्यं भवद्भिः प्रतिगृह्यताम् ॥ १ ॥ ॥२७॥ अर्घोऽर्घोऽर्घः प्रतिगृह्यताम् । प्रतिगृह्णामीति प्रतिवचनम् । चरणप्रक्षालनं कुर्यात् । यत्फलं कपिला दाने कार्त्तिक्यां ज्येष्ठपुष्करे ॥ तत्फलं पांडवश्रेष्ठ विप्राणां पादशोधने ॥ १ ॥ विप्रपादतले घृष्टः क्षिप्यमाणस्तु यः करः ॥ स करो हि करो ज्ञेयः शेषा हि अकराः कराः ॥ २ ॥ पृथिव्यां यानि तीर्थानि तानि तीर्थानि सागरे ॥ ससागराणि तीर्थानि विप्रस्य दक्षिणे पदे ॥ ३ ॥ २८ ॥ तिलकमंत्रः ॥ ॐ युञ्जन्तिब्रध्नमरुषंचरंतंपरितस्थुषः । रोचंतेरोचनादिवि ॥ युंजंत्यस्य काम्याहरीविपक्षसारथे।शोणाधृष्णूनृवाहसा॥ १॥ब्रह्मणे अर्चनं प्रीयताम् । यदाबध्ननिति कंकणं बध्नीयात् ॥

करके आइये और जो यह अर्घ पाद्य इनको ग्रहण कीजिये ॥ ३ ॥ २७ ॥ 'अर्घोऽर्घोऽर्घः०' यह कह कर अर्घ दे देवे और 'प्रतिगृह्णामि' कहकर ब्राह्मण उसे ले लेवें । फिर ब्राह्मणोंके चरण धोकर "यत्फलं कपिलादाने० विप्रपादतले० पृथिव्यां" इनसे पांव धोनेकी महिमा स्मरण करे ॥ २८ ॥ फिर "ॐ युञ्जंति" इस मंत्रसे उनके तिलक कर उनके हाथमें पुष्पाक्षतादि रखकर

स्वस्तिनोबृहस्पतिर्दधातु ॥ ६ ॥ वरणश्राद्धोपहाराणां पवित्रतास्तु ॥ देशकालपाकपात्रद्रव्यश्रद्धासंपदस्तु ॥ ॐ तत्सदद्येत्यादि मासे पक्षे तिथौ वासरे वरणश्राद्धमहं करिष्ये ॥ वृतेभ्यो ब्राह्मणेभ्यः इदमासनं वृतेभ्यो ब्राह्मणेभ्यः इदमर्घ्यं वृतेभ्यो ब्राह्मणेभ्यः इदमर्चनं यथादत्तं गंधाद्यर्चनं कुण्डलमुद्रिकावासांसि यज्ञोपवीतं तत्प्रत्याम्नायद्रव्यं वा वृतेभ्यो ब्राह्मणेभ्यः अहं संप्रददे॥ इदमर्चितं वा ज्योतिः सूर्यो ज्योतिर्दीपकं ज्योतिः पुष्पम् । अस्य वरणश्राद्धविधेर्यन्न्यूनमतिरिक्तं तत्सर्वं भवतां ब्राह्मणानां वचनात् विधिवद्भवतु ॥ ३१ ॥ ततः दधिक्राव्णेतिदधिवंदनंॐदधिक्राव्णोअकारिषंजिष्णोर श्वस्यव्वाजिनः॥सुरभिनोमुखाकरत्प्रण आयूᳬंषितारिपत् ॥ १ ॥ कांडात्कांडादिति दूर्वामार्जनम् ॥ ॐ काण्डात्काण्डात्प्ररोहन्तीपरुषः परुषस्परि । एवानोदूर्व्वे

पवित्र करके " ॐ तत्सदद्येत्यादि० " यह संकल्प छोड-कर " वृतेभ्यो ब्राह्मणेभ्यः इदमासनं० " इत्यादिसे वरण-श्राद्ध करके ब्रह्मा, आचार्य और ऋत्विजोंको वह सब सामग्री यथोचित रूपसे सबको दे देवे । और फिर, अस्य वरणश्राद्धविधेः० ' जल छोडे ॥ ३१ ॥ इसके अनंतर (पूर्व सम्पादित अर्घको खोलकर) " दधिक्राव्णो० " से दधिवंदन करे अर्थात् उसमेंसे कुछ दही ग्रहण करे " काण्डा

शतनुसहस्रेण शतेन च ॥ १ ॥ याः फलिनीरिति फलग्रहणम्॥ ॐ याःफलिनीर्य्याऽअफलाऽअपुष्पाया-श्चपुष्पिणीः ॥ बृहस्पतिप्रसूतास्तानोमुञ्चन्त्वर्ठंहसः ॥ १ ॥ हिरण्यगर्भेति मुद्रार्पणम् ॥ ॐ हिरण्यगर्ब्भः समवर्त्तताग्रे भूतस्यजातः पतिरेकआसीत्॥सदाधारपृथिवींद्यामुतेमांकस्म्मै देवायहविषाव्विधेम ॥ ॥ ततः सुजातेति यजमानहस्ते रक्षिकां बध्नीयात् । ॐ सुजातोज्ज्योतिषासहशर्मव्वरूथमासदत्स्वः। व्वासोऽअग्नेव्विश्श्वरूपर्ठं संव्ययस्व व्विभावसो ॥ १ ॥ श्रीश्चतेइति यजमानपत्न्याः वामहस्ते कंकणं(राक्षिकां) बध्नीयात्॥श्रीश्चतेलक्ष्मीश्चपत्न्यावहोरात्रेपार्श्वेनक्षत्राणि रूपमश्विनौ व्यात्तम्। इष्णन्निषाणामुम्मइषाणसर्वलोकम्मइषाण ॥ १ ॥ ३२ ॥

त्काण्डा ० " से दूर्वासे मार्जनकरे " याः फलिनी ० " से फल (सुपारी) ग्रहण करे " हिरण्यगर्भः ० " से उनमेंसे पैसा निकालकर दहनी अँटमें टाँकले यह काम यजमान कर चुके तब ब्राह्मणलोग " सुजातोज्योतिषा ० " से यजमानके और " श्रीश्चतेलक्ष्मी० " से यजमानकी स्त्रीके राखी बांधे(राखी बाँधनेसे पहिले उन दोनों स्त्री पुरुषोंके तिलक भी कर देना चाहिये) । और इसके पीछे पुण्याहवाचन करना चाहिये ॥ ३२ ॥

फलिनीति श्रीफलम् ॥ ॐ याः फलिनीर्याऽअफला ऽअपुष्पायाश्च पुष्पिणीः ॥ बृहस्पतिप्रसूतास्तानो मुञ्चन्त्वर्ठंहसः॥ १ ॥ सुजातो ज्योतिषेति वस्त्रवेष्टनम्॥ ॐ सुजातो ज्ज्योतिषा सह शर्म्मँव्वरूथमासदत्स्वः ॥ व्वासोऽअग्ने व्विश्वरूपर्ठंसँव्व्ययस्वव्विभावसो ॥१॥ ततःपाशहस्तंचवरुणमंभसांपतिमीश्वरम्॥आवाहयामि यज्ञेऽस्मिन्पूजेयं प्रतिगृह्यताम् ॥ १ ॥ ३४ ॥ कलशे वरुणाय नमः आवाहनं० आसनं० पा०अ० आ०स्ना० गं० अ० पु० धू० दी० नै० आ०तां० दक्षि० नमस्कारं समर्पयामि । प्रार्थना । कलशस्य मुखे विष्णुर्ग्रीवायां च महेश्वरः ॥ मूले चैव स्थितो ब्रह्मा मध्ये मातृगणाः स्मृताः ॥ १ ॥ कुक्षौ तु सागराः सप्त सप्तद्वीपा वसुंधरा ॥ ऋग्वेदोऽथ यजुर्वेदः सामवेदोऽप्यथर्वणः ॥ ॥ २ ॥ अंगैश्च सहिताः सर्वे कलश तु समाश्रिताः ॥ गायत्री चैव सावित्री शान्तिः पुष्टिस्तथैव च ॥३॥ सव

दोनेपर एक श्रीफल रखे और " सुजातोज्योतिषा० " से श्रीफलपर वस्त्र लपेट दे, फिर " पाशहस्तं च वरुणं" इससे उसमें वरुणका आवाहन करे ॥ ३४ ॥ और " कलशे वरुणाय नमः आसनं० पाद्यं० अर्घ्यम्० आचमनं ' इत्यादिसे उसका पूजन कर " कलशस्य मुखे विष्णु० " १ " कुक्षौ तु सागराः०" २ "अंगैश्च सहिताः०" ३ " सर्वे समुद्राः०" से

समुद्राः सरितस्तीर्थानि जलदा नदाः ॥ आयांतु मम शांत्यर्थं दुरितक्षयकारकाः ॥ ४ ॥ मातृदेवो भव पितृदेवो भव आचार्यदेवो भव अतिथिदेवो भव । आशिषः प्रार्थयेत् । एताः सत्याआशिषः सन्तु ॥३५॥ ततः अवनिकृतजानुमंडलः कमलमुकुलसदृशमंजलिं

उसकी प्रार्थना करे ॥ ३५ ॥ " पुण्याह वाचन " । शांति पुष्टि और संस्कारादि मंगल कार्योंमें प्रायः पुण्याहवाचन किया जाता है । इस प्रयोगसे कर्ताके कुटुम्बकी वृद्धि और पुण्यकी प्राप्ति होती है । यह प्रयोग तीन प्रकारसे करते हुये देखे जाते हैं । एक तो कर्मानुष्ठानके अन्तमें ब्राह्मण लोग केवल इसका पाठ मात्र करते हैं । दूसरे यजमान और ब्राह्मण दोनों मिलकर करते हैं, किन्तु यजमानके कहने और करनेका कामभी ब्राह्मणही करते हैं और तीसरे यथोक्त विधिके अनुसार ब्राह्मणोंका काम ब्राह्मण और यजमानका काम यजमान स्वयं करते हैं । यहां हम यह तीसरा प्रकार प्रगट करते हैं जिससे सर्व साधारण भी इस प्रयोगको भले प्रकार करा सकें । पुण्याहवाचनके निमित्त उपरोक्त विधिसे कलशस्थापन करनेके पश्चात् यजमान अपने जानु-मण्डल(दोनों गोडों) को पृथ्वीपर टेककर अपने दोनों हाथोंकी खिले हुए कमलकी भाँति अंजली बनाकर उसमें उप-रोक्त सुवर्ण पूर्ण (सुपूजित) कलश धारण करके शिरके

शिरस्याधाय दक्षिणेन पाणिना सुवर्णपूर्णकलशं धार-
यित्वा॥३६॥दीर्घा नागा नद्यो गिरयस्त्रीणि विष्णुपदानि
च तेनायुःप्रमाणेन पुण्याहं दीर्घमायुरस्तु ॥ अपां
मध्ये स्थिता देवाः सर्वमप्सु प्रकीर्तितम् ॥ ब्राह्मणानां
करे न्यस्ताः शिवा आपो भवंतु ताः॥१॥शिवा आपः
संतु॥लक्ष्मीर्वसति पुष्पेषु लक्ष्मीर्वसति पुष्करे ॥सा मे
वसतु वै नित्यं सौमनस्यं तथाऽस्तु नः ॥१॥ सौमनस्य-
मस्तु॥३७॥अक्षतं चास्तु मे पुण्यं दीर्घमायुर्यशोबलम्।
यद्यच्छ्रेयस्करं लोके तत्तदस्तु सदा मम ॥ १ ॥ अक्षतं
चारिष्टं[1] चास्तु । ब्राह्मणानां हस्ते अक्षतादि दत्त्वा ॥
गंधाःपांतु मांगल्यं चास्तु॥पुष्पाणि पांतु सौश्रियमस्तु॥
अक्षताः पांतु आयुष्यमस्तु ॥ तांबूलानि पांतु

समीप रखकर फिर अंजलीसे बायां हाथ अलग करके केवल
दहने हाथसे उस कलशको यथास्थान स्थापित कर दे
॥ ३६ ॥ और फिर " दीर्घा नागा० " " अपांमध्ये० "
इनका उच्चारण करके ' शिव आपः सन्तु ' कहकर ब्राह्म-
णोंके हाथमें यजमान जल दे । और ब्राह्मण लोग ' लक्ष्मी-
र्वसति० " इसका उच्चारण करके ' सौमनस्यमस्तु ' कहें॥ ३७॥
फिर ' अक्षतं चास्तु मे पुण्यं० ' से ब्राह्मणोंके हाथमें यज-
मान अक्षत दे ' गंधाः पान्तु ' से गंध दे पुष्पाणि पान्तु ' से
पुष्प दे अक्षताः पान्तु' से फिर अक्षत दे 'तांबूलानि पान्तु' से

---

१ अरिष्टं सूतिकागृहे ।

ऐश्वर्यमस्तु ॥ दक्षिणाः पांतु आरोग्यमस्तु ॥ दीर्घमायुः ॥ ३८ ॥ श्रेयः शांतिः पुष्टिस्तुष्टिश्चास्तु ॥ श्रीर्यशो विद्या विनयो वित्तं बहुपुत्रं चारोग्यं चायुष्यं चास्तु ॥ यत्कृत्वा सर्ववेदयज्ञक्रियाकरणकर्मारंभाः शुभाः शोभनाः प्रवर्तते तमहमोंकारमादिं कृत्वा ऋग्यजु-सामाथर्वाशीर्वचनं बहृवृषिमतंसमनुज्ञातंभवद्भिरनुज्ञातः पुण्यं पुण्याहं वाचयिष्ये ॥ वाच्यताम् ॥ ३९ ॥ ऋक् ॥ द्रविणोदाद्रविणसस्तुरस्यद्रविणोदाःसनरस्य प्रयंसत् ॥ द्रविणोदावीरवतीमिषन्नोद्रविणोदारासतेदीर्घमायुः॥१॥

पान दे और ' दक्षिणाः पान्तु ' से दक्षिणा दे । इस प्रकार जो जो वस्तु यजमान ब्राह्मणोंको दे उसके ग्रहणमें ब्राह्मण लोगभी ' अरिष्टं चास्तु ' ' मांगल्यं चास्तु ' सौश्रियमस्तु इत्यादि कहें ॥ ३८ ॥ इसके पीछे ब्राह्मण लोग श्रेय शान्ति पुष्टि तुष्टि आदि हो ऐसा और कहें । फिर यजमान ब्राह्म-णोंसे कहे कि जिसके करनेसे सर्व वेद यज्ञ क्रियाके शुभ कर्मोंका आरंभ शोभन होता है उस ओंकारको हम आदिमें करके प्रवर्त होते हैं । अतः आप ऋक् यजु साम और अथर्व इनके बहु ऋषिसम्मत और अनुज्ञात आशीर्वादात्मक मन्त्रोंको उच्चारण करें तब इनके उत्तरमें ब्राह्मणलोग ' वाच्यताम् ' (कहते हैं) कहें ॥ ३५ ॥ फिर " द्रविणोदाद्रविण० "

यजुः॥द्रविणोदाःपिपीषतिजुहोतप्रचतिष्ठत॥नेष्ट्रादृतु-
भिरिष्यत ॥ २॥ ऋक् ॥ सवितापश्चात्तात्सविता-
पुरस्तात्सवितोत्तरात्तात्सविताऽधरात्तात् ॥ सवितानः
सुवतुसर्वतातिंसवितानोरासतां दीर्घमायुः॥१॥ यजुः॥
सवितात्त्वासवाना*सुवतामग्निर्गृहपतीना*सोमोव्वनस्प
तीनाम्॥बृहस्पतिर्व्वाचइंद्रोज्यैष्ठचायरुद्रःपशुभ्योमित्रः
सत्योव्वरुणोधर्मपतीनाम्॥२॥ऋक्॥ॐनवोनवोभवति
जायमानोऽह्नांकेतुरुषसामेत्यग्रम्॥भागंदेवेभ्योविदधा-
त्यायन् प्रचंद्रमास्तिरतेदीर्घमायुः ॥ १ ॥ यजुः ॥ ॐ
नतद्रक्षा*सिनपिसाचास्तरंति देवानामोजः प्रथमज*
ह्येतत् ॥ योबिभर्तिदाक्षायण* हिरण्य* सदेवेषुकृणुते
दीर्घमायुः समनुष्येषुकृतेदीर्घमायुः ॥ २ ॥ ऋक् ॥
ॐउच्चादिविदक्षिणावंतो अस्थुर्येअश्वदाः सहते सूर्येण॥
हिरण्यदाअमृतत्वंभजंते वासोदाः सोमप्रतिरंत आयुः
॥१॥यजुः॥उच्चाते जातमंधसोदिविसद्भूम्याददे ॥ उग्र*
शर्म्ममहिश्रवः ॥ २ ॥ इत्येता ऋचः पुण्याहे ब्रूयात् ॥
व्रतनियमतपःस्वाध्यायक्रतुयादमदानविशिष्टानांसर्वेषां
ब्राह्मणानां मनः समाधीयताम्॥समाहितमनसः स्मः ॥
प्रसीदंतु भवन्तः ॥ प्रसन्ना स्मः ॥ ४० ॥ अथ पूर्वस्था-

" द्रविणोदाःपिपीषति० " "सविता० ,' सवितात्वासवा०
"नवोनवो०" "नतद्रक्षा०" "उच्चादिवि०,, उच्चातेजात०"
इन ऋचाओंका उच्चारण करे ॥ ४० ॥ फिर उस पूर्वस्था-

पितकलशात्ताम्रपात्रे जलमादाय यजमानमूर्धनि दूर्वया सेचनं कुर्यात्॥शांतिरस्तु पुष्टिरस्तु तुष्टिरस्तु वृद्धिरस्तु ऋद्धिरस्तु अविघ्नमस्तु आयुष्यमस्तु आरोग्यमस्तु शिवमस्तु शिवंकर्मास्तु कर्मसमृद्धिरस्तु धर्मसमृद्धिरस्तु वेदसमृद्धिरस्तु शास्त्रसमृद्धिरस्तु पुत्रपौत्रसमृद्धिरस्तु धनधान्यसमृद्धिरस्तु इष्टसंपदस्तु अरिष्टनिरसनमस्तु॥ भूमौ—यत्पापं रोगमशुभकल्याणं तद् दूरे प्रतिहत-मस्तु ॥४१॥ पात्रे—यद्यच्छ्रेयस्तत्तदस्तु॥ उत्तरे कर्मणि निर्विघ्नमस्तु उत्तरोत्तरमहरहरभिवृद्धिरस्तु उत्तरोत्तराः क्रियाः शुभाः शोभनाः संपद्यंतां तिथिकरणमुहूर्तनक्षत्र-ग्रहलग्नाधिदेवताः प्रीयंताम् तिथिकरणे समुहूर्ते सनक्षत्रे सग्रहे सलग्ने सदैवते प्रीयेतां दुर्गापांचाल्यौ प्रीयेताम् अग्निपुरोगा विश्वेदेवाः प्रीयंताम् इन्द्रपुरोगा मरुद्गणाः प्रीयंताम् वसिष्ठपुरोगा ऋषिगणाःप्रीयंताम् माहेश्वरी पुरोगा उमामातरः प्रीयंताम् अरुन्धतीपुरोगा एकपत्न्यः प्रीयंताम् विष्णुपुरोगाः सर्वे देवाः प्रीयंताम् ब्रह्मपुरोगाः सर्वे वेदाः प्रीयंताम् आदित्यपुरोगाः सर्वे

--पित कलशमेंसे एक पात्रमें थोडा जल लेकर ' शान्तिरस्तु पुष्टिरस्तु० ' इत्यादिका उच्चारणकरते हुए यजमानके मस्तक-पर जलके छींटे लगावें। और ' यत्पापं रोगं० ' पृथ्वीके छींटा लगावे ॥४१॥ फिर एक अन्यपात्रमें " यद्यच्छ्रेय० " से आरंभ करके " सर्वाः इष्टदेवताः प्रीयन्ताम् " इस

ग्रहाः प्रीयंताम् ब्रह्म च ब्राह्मणाश्च प्रीयंताम् अंबिकासरस्वत्यौ प्रीयेताम् श्रद्धामेधे प्रीयेताम् भगवती कात्यायनी प्रीयताम् भगवती माहेश्वरीप्रीयताम् भगवती ऋद्धिकरी प्रीयताम् भगवती वृद्धिकरीप्रीयताम् भगवती सिद्धिकरी प्रीयताम् भगवती पुष्टिकरी प्रीयताम् भगवती तुष्टिकरी प्रीयताम् भगवंतौ विघ्नविनायकौ प्रीयेताम् सर्वाः कुलदेवताः प्रीयंताम् सर्वा ग्रामदेवताः प्रीयंताम् सर्वा इष्टदेवताः प्रीयंताम् ॥ भूमौ–हताश्च ब्रह्मद्विषः हताश्च परिपंथिनः हताश्च विघ्नकर्तारः शत्रवः पराभवं यांतु शाम्यंतु घोराणि शाम्यंतु पापानि शाम्यंत्वीतयः ॥ पात्रे–शुभानि वर्द्धंतां शिवा आपः संतु शिवा ऋतवः संतु शिवा अग्नयः संतु शिवा आहुतयः संतु शिवा ओषधयः संतु शिवा वनस्पतयः संतु शिवा अतिथयः संतु अहोरात्रे शिवे स्याताम् ॥ ४२ ॥ ऋक् ॥ ॐ शंनः कनिक्रदद्देवः पर्जन्योऽअभिवर्षतु शंनोद्यावापृथिवीशंप्रजाभ्यः शंनएधिद्विपदेशंचतुष्पदे ॥ १ ॥ यजुः ॐ निकामे निकामे नः पर्जन्योवर्षतु

पर्यन्त प्रत्येक प्रीयंताम् की जगह जल छोडें । और "हताश्च ब्रह्मद्विषः० " इत्यादिके उच्चारणसे पृथ्वीपर छींटे लगाकर "शुभानि वर्द्धन्ताम्० " से फिर उसी पात्रमें जल छोडैं ॥ ४२ ॥ फिर "शन्नः कनिक्र० " "निकामेनि-

फलवत्योनऔषधयः पच्यंतां योगक्षेमो नः कल्पताम् ॥ २ ॥ पूर्णपात्रे जलं क्षिपेत् ॥ शुक्रांगारकबुधबृहस्पतिशनैश्चरराहुकेतुसोमसहिता आदित्यपुरोगाः सर्वे ग्रहाः प्रीयंताम् ॥ भगवान्नारायणः प्रीयताम् ॥ भगवान्स्वामी महासेनः प्रीयताम् ॥ पुरोनुवाक्यया यत्पुण्यं तदस्तु याज्यया यत्पुण्यं तदस्तु वषट्कारेण यत्पुण्यं तदस्तु प्रातः सूर्योदये यत्पुण्यं तदस्तु एतत्कल्याणयुक्तं पुण्यमस्तु पुण्याहं वाचयिष्ये ॥ वाच्यताम्॥ब्राह्मं पुण्यमहर्यच्च सृष्टयुत्पादनकारकम् ॥ वेदवृक्षोद्भवं नित्यं तं पुण्याहं ब्रुवंतु नः ॥ १ ॥ ४३ ॥ भो ब्राह्मणा मम सकुटुंबस्य सपरिवारस्यगृहे पुण्याहं भवंतो ब्रुवंतु ३ ॐ पुण्याहं ३ ॥ ऋक् ॥ ॐ उद्गातेव शकुने साम गायसि ब्रह्मपुत्रइवसवनेषुशंससि ॥ वृषेव वाजी

कामे० " का उच्चारण करनेके पीछे पूर्णपात्रमें जल छोडें। इससे पीछे "शुक्रांगारक ० " इनसे जल छोड़कर "पुरोनुवाक्यया० " से पुण्य और कल्याण आदि होनेकी यजमान प्रार्थना करे ॥४३॥ यजमान कहे कि " भो ब्राह्मणाः मम सकुटुंबस्य सपरिवारस्य गृहे पुण्याहं भवंतो ब्रुवंतु " अर्थात् हे ब्राह्मणो ! मेरे सकुटुम्ब सपरिवार घरमें पुण्य दिन होनेकी आप आशीष दें । तब ब्राह्मण लोग दूर्वांकुरोंसे जल लेकर तीन बार पुण्याहं करके उसके

शिशुमतीरपीत्या सर्वतो नः शकुनेभद्रमावद विश्वतोनः शकुनेपुण्यमावद ॥ १ ॥ यजुः ॥ ॐ पुनंतुमादेवजनाः पुनंतुमनसाधियः ॥ पुनंतु व्विश्वाभूतानि जातवेदः पुनीहि मा ॥ २ ॥ पृथिव्यामुद्धृतायां तु यत्कल्याणं पुराकृतम् ॥ ऋषिभिःसिद्धगंधर्वैस्तत्कल्याणं ब्रुवंतु नः ॥ १॥ भो ब्राह्मणाः मम सकुटुंबस्य सपरिवारस्य गृहे कल्याणं भवंतो ब्रुवंतु ३ ॐ कल्याणं ३ ॥ ऋक् ॥ ॐ अपाःसोममस्त्वमिंद्रप्रयाहिकल्याणीर्जायासुरणंगृहेते ॥ यत्रारथस्यबृहतोनिधानंविमोचनंवाजिनोदक्षिणावत् १॥ यजुः ॥ ॐ य्यथेमांवाचं कल्याणीमावदानिजनेभ्यः ॥ ब्रह्मराजन्याभ्या॑ शूद्रायचार्य्यायचस्वायचारणायच॥ प्रियोदेवानांदक्षिणयैदातुरिहभूयासमयं मे कामः समृद्ध्यताम् ॥ २ ॥ सागरस्य तु या ऋद्धिर्महालक्ष्म्यादिभिः कृता ॥ संपूर्णा सुप्रभावा च तां तामृद्धिं ब्रुवंतु नः ॥ १ ॥ भो ब्राह्मणाः मम सकुटुंबस्य सपरिवारस्य गृहे ऋद्धिं भवंतो ब्रुवंतु ३ ॐ ऋद्ध्यताम् ३ ॥ ऋक् ॥ ॐ ऋद्ध्यामस्तोमंसनुयामावाजमनोमंत्रंसरथेहोपयातम् ॥ यशोनपक्वंमधुगोष्वंतराभूतांशोअश्विनोः काममप्राः ॥ १ ॥ यजुः ॥ ॐ सत्रस्यऋद्धिरस्यगन्मज्योति-

---

छींटा लगा दे । इसी प्रकार कल्याण ऋद्धि और स्वस्ति होनेके निमित्त यजमान यथोक्त मंत्रोंसे प्रार्थना करे और उसी

स्मृताअभूम॥ दिवंपृथिव्यावअद्धचारुहामाविदामदेवा-न्त्स्वज्योतिः ॥ २ ॥ स्वस्तिस्तु याऽविनाशाख्या पुण्यकल्याणवृद्धिदा ॥ विनायकप्रिया नित्यं तां तां स्वस्ति ब्रुवंतु नः ॥ १ ॥ भो ब्राह्मणाः मम सकुटुंबस्य सपरिवारस्य गृहे स्वस्ति भवंतो ब्रुवंतु ३ ॐ स्वस्तिः ३ ॥ ४४ ॥ ऋक् ॥ ॐ स्वस्तिऋद्धिप्रपथेश्रेष्ठारेक्णस्व-त्यभियावाममेति ॥ सानो अमासो अरणेनिपात स्वावेशाभवतु देवगोपाः ॥१॥ यजुः ॥ ॐ स्वस्ति न ऽइन्द्रो वृद्धश्रवाः स्वस्ति नः पूषा विश्ववेदाः ॥ स्वस्तिनस्तार्क्ष्यो अरिष्टनेमिः स्वस्तिनोबृहस्पतिर्दधातु ॥ २॥ मृकण्डसूनोरायुर्यद्ध्रुवलोमशयोस्तथा॥आयुषा तेन संयुक्ता जीवेम शरदः शतम् ॥ १ ॥ शतं जीवंतु भवंतः ॥ ऋक् ॥ ॐ शतंजीवशरदोवर्द्धमानः

प्रकार ब्राह्मण लोगभी मंत्रोच्चारपूर्वक तीन तीन बार कल्याण ऋद्धि और स्वस्ति कहें ॥ ४४ ॥ इसके पीछे " स्वस्तिऋद्धि प्रपथे ० " " स्वस्तिनऽइन्द्रो-- " इनका उच्चारण किये पीछे- (ब्राह्मणलोग यजमानको तिलक करें) फिर यजमान " मृक-ण्डसूनो० " से अपनी आयु वृद्धिकी प्रार्थना करे (मार्कण्डेय और ध्रुव तथा लोमश ऋषि यह बहुत आयुष्यके हुये हैं अतः यजमानभी अपनी अधिक आयु होनेकी अभिलाषा प्रगट करे) तब ब्राह्मण लोग " शतंजीवंतुभवन्तः " कहकर " शतं जीव शरदो० " " शतमिन्नुशरदो० " इन मंत्रोंका

शतंहेमंताञ्च्छतमुवसंतान् ॥ शतमिंद्राग्नीसविताबृहस्प-
तिःशतायुषाहविषेमंपुनर्दुः॥ १॥यजुः॥ ॐ शतमिंनुशरद
अंतिदेवाय्यत्रानश्चक्राजरसंतनूनाम् ॥ पुत्रासोय्यत्रपि-
तरो भवंतिमानोमध्यारीरिषतायुर्गंतोः ॥ २ ॥ ४६ ॥
शिवगौरीविवाहे या या श्रीरामे नृपात्मजे ॥ धनदस्य
गृहे या श्रीरस्माकं सास्तु सद्मनि ॥१॥ ॐ अस्तु श्रीः
ऋक् ॥ ॐ श्रियेजातः श्रियआनिरियायश्रियंवयोजनि-
तृभ्योदधाति॥श्रियंवसाना अमृतत्वमायन्भवंतिसत्या-
समिथामितद्रौ ॥१॥ यजुः ॥ ॐ मनसः काममाकूतिं
वाचः सत्यमशीय॥पशूना रूपमन्नस्यरसोय्यशः श्रीः
श्रयतांमयिस्वाहा ॥ २ ॥ प्रजापतिर्लोकपालो
धाता ब्रह्मा सदेवराट् ॥ भगवान् शाश्वतो नित्यं स नो
रक्षतु सर्वतः ॥१॥ भगवान्प्रजापतिः प्रीयताम्॥ऋक्॥
ॐ प्रजापतेनत्वदेतान्यन्योविश्वाजातानिपरिताबभूव॥
यत्कामास्तेजुहुमस्तन्नोऽअस्तुवय स्यामपतयोरयीणाम्
॥ १ ॥ यजुः ॥ ॥ ॐ प्रजापतेनत्वदेतान्यन्यो
विश्वारूपाणिपरिताबभूव ॥ यत्कामास्तेजुहुमस्तन्नो

उच्चारण करें ॥ ४५ ॥ इसके पीछे " शिवगौरी० " से यज
मान लक्ष्मी होनेकी प्रार्थना करे तब ब्राह्मण लोग ' लक्ष्मी
हो ' ऐसा कहकर " श्रियेजातः " " मनसः कामामा० "
"प्रजापतिर्लोकपालो--" " प्रजापतेनत्व० " " प्रजापते० "

अस्त्वयममुष्यपिताऽसावस्यपितावयꣳस्यामपतयोरयी णाꣳस्वाहा ॥ २ ॥ आयुष्मते स्वस्तिमते यजमानाय दाशुषे ॥ कृताः सर्वाशिषः संतु ऋत्विग्भिर्वेदपारगैः ॥ १ ॥ ४६ ॥ देवेन्द्रस्य यथा स्वस्ति यथा स्वस्ति गुरोर्गृहे ॥ एकलिंगे यथा स्वस्ति तथा स्वस्ति सदा मम ॥ २ ॥ ॐ आयुष्मते स्वस्ति ३ ॥ ऋक् ॥ ॐ स्वस्तयेवायुमुप्रब्रवामहैसोमंस्वस्तिभुवनस्ययस्पतिः॥बृहस्पतिंसर्वगणंस्वस्तयेस्वस्तयआदित्यासोभवंतुनः ॥१॥ यजुः ॥ ॐ प्रतिपन्थामपद्महिस्वस्तिगामनेहसम् ॥ येनविश्वाः परिद्विषोवृणक्तिविन्दतेवसु ॥ २ ॥ विश्वानि देवसवितर्दुरितानि परासुव ॥ यद्भद्रं तन्न आसुव ॥ ऋक् ॥ ॐ महोअग्नेः समिधानस्य शर्मण्यनागामित्रे वरुणेस्वस्तये॥श्रेष्ठेत्त्यामसवितुःसवीमनितद्देवानामवो अद्यावृणीमहे । इमम्मे व्वरुणश्रुधीहवमद्याचमृडय ॥ त्वामवस्युराचके ॥ २ ॥ तत्त्वायामिब्रह्मणा वंदमानस्तदाशास्तेयजमानोहविर्भिः ॥अहेडमानोव्वरुणेहबोध्युरु-

---

इन मंत्रोका उच्चारण करें ॥ ४६ ॥ फिर यजमान "देवेन्द्रस्य यथा स्वस्ति॰ से अपने कल्याणकी प्रार्थना करे तब ब्राह्मण लोग तीन बार "आयुष्मते स्वस्ति" कहकर "स्वस्तयेवायु॰" "प्रतिपन्थामपद्म॰" विश्वानिदेव॰" "महोअग्ने॰" "इमम्मेव्वरुण" " तत्त्वायामि॰ व्वरु-

शर्ठ.समानआयुः प्रमोपीः ॥ ३ ॥ व्वरुणस्योत्तंभनम-सिव्वरुणस्यस्कंभसर्ज्जनीस्थो व्वरुणस्यऽऋतसदन्यसि व्वरुणस्यऋतसदनमसि व्वरुणस्य ऋतसदनमासीद ॥ ॥ ४ ॥ इति वरुणदैवत्यान् आशीर्मंत्रान् पठित्वा ॥ ॥ ४७ ॥ ॐ मंत्रार्थाः सफलाः सन्तु पूर्णा संतु मनोरथाः ॥ शत्रूणां बुद्धिनाशोऽस्तु मित्राणामुदयस्तव ॥ १ ॥ ऋग्वेदोऽथ यजुर्वेदः सामवेदोऽप्यथर्वणः ॥ ब्रह्मवक्त्रे स्थिता नित्यं निघ्नंतु तव शात्रवान् ॥ यं कामं कामयते सोऽस्मै कामः समृद्ध्यते । इत्यक्षतान् यजमानहस्ते दद्यात् । ततो यजमानः आचार्यादीन् प्रार्थयेत् । अस्य यागस्य निष्पत्तौ भवन्तोऽभ्यर्थिता मया ॥ सुप्रसादं प्रकर्तव्यं शान्तिकविधिपूर्वकम् ॥४८॥

णस्योत्तं० " इन मंत्रोंको पढें ॥ ४७ ॥ फिर " मंत्रार्थाः सफलाः० " से पहले जो अक्षत पुष्पादि ग्रहण किये थे वे यजमानको दे देवें। और यजमान उस पुष्पांजलिको शिरोधार्य करके आचार्य आदिसे प्रार्थना करे कि 'इसकार्यकी सिद्धिके निमित्त मैंने आपको अभ्यर्थना की है अतः आप प्रसन्न होकर विधि पूर्वक शान्ति करें इति ॥ ४८ ॥

ततः आचार्यः—यदत्र संस्थितं भूतं स्थानमाश्रित्य सर्वदा ॥ स्थानं त्यक्त्वा तु तत्सर्वं यत्रस्थं तत्र गच्छतु ॥ १ ॥ अपक्रामंतु भूतानि पिशाचाः सर्वतो दिशम् । सर्वेषामविरोधेन शान्तिकर्म समारभे ॥ २ ॥ इति मंत्रेण गौरसर्षपविकरणं कुर्यात्॥४९॥आपोहिष्ठेत्यादिना पंचगव्येन भूमिं प्रोक्षयेत् । तत आचार्यः स्थंडिले पंचभूसंस्कारान्त्रिस्त्रिः कुर्यात् । त्रिभिर्दर्भैःपरिसमुह्य ३ तान्कुशान् ऐशान्यां परित्यजेत् । गोमयेनोपलिप्य ३ स्रुवेणोल्लिख्य ३ अनामिकांगुष्ठेनोद्धृत्य ३ उदकेनाभ्युक्ष्य ३ अग्निमुपसमाधाय । आवोदेवा० १भूर्भुवः

" कुशकण्डी " (एक लोकोक्ति प्रसिद्ध है कि 'चण्डी सपिण्डी कुशकण्डी' यह तीनों कठिन हुआ करती हैं । अतः यहाँ कुशकण्डीका विधान स्पष्ट लिखना आवश्यक है, जिस वेदी पर होम किया जाता है उस वेदीका संस्कार तथा होमकी सामग्रीको सम्हालकर ठीक रखनाही कुशकण्डीका मुख्य प्रयोजन है ।) इस कार्य के निमित्त आचार्य सफेद सरसों लेकर " यदत्र संस्थितं भूतं० " से वेदीके चारों और बखेरे ॥ ४९ ॥ फिर तीन दर्भा लेकर उस वेदीको ' दर्भैः परिसमुह्य ' से तीन बार बुहारे । और उन दर्भाओंको ईशानमें फेंकदे । फिर 'गोमयनोषलिप्य' से वेदीको जल और गोबरसे ३ बार लीपे । और स्रुवके मूलसे अथवा दर्भासे वेदीपर

स्वरोमित्यग्निं प्रतिष्ठाप्य ॥५०॥ तदनंतरं ग्रहस्थापनं कुर्यात्। तत्र सौकर्याय कुशकंडिकापूर्वकचरुपचनमादौ क्रियते दोषाभावात्। तद्यथा दक्षिणतो ब्रह्मासनम् उत्तरतः प्रणीतासनं ब्रह्मासने ब्रह्मोपवेशनम्। यावत्कर्म

उत्तरसे आरंभ करके पश्चिमसे पूर्वको प्रादेश मात्र (९ अंगुल लंबी) तीन रेखा 'स्रुवेणोल्लिख्य' से लिखे । तथा लिखनेके क्रमसे ही उन रेखाओं परसे 'अनामिकांगुष्ठेनोद्धृत्य, कहकर अंगूठे और अनामिकासे तीन बार मिट्टी उठाकर ईशानमें फेंक दे । फिर 'उदकेनाभ्युक्ष्य' से उसपर जल छिडक दे और शुद्ध काँसीके पात्रसे अथवा मिट्टीके पात्रसे अग्नि लाकर पश्चिम मुख स्थापन करे । अर्थात जिस पात्रमें अग्नि लावे उसको अन्य पात्र से ढाँक कर लावे और वेदीके समीप लाकर उसे उघाड दे । और पश्चिम दिशामें पूर्वाभिमुख बैठा हुआ आचार्य उस अग्निपात्रको अपने दोनों हाथोंमें पकडकर उसे अपनी ओर करके वेदीपर अग्निको स्थापन करदे ॥ ५० ॥ इसके पीछे ग्रहोंका स्थापन करे किन्तु सौकर्यके लिये पहले यदि कुशकण्डी पूर्वक चरु पकानेका काम आरंभ कर दिया जाय तो इसमें कुछ दोष नहीं है । अतः यहाँ यही प्रकार लिखते हैं । यथा वेदीसे दक्षिण दिशा में एक साथ (अथवा होमानुसार अधिक) भूमि छोडकर शुद्ध आसन पर पूर्वाग्र दर्भा बिछावे। और उस पर 'अस्मिन्कर्मणि त्वं मे ब्रह्मा

समाप्यते तावत्त्वं ब्रह्मा भव । भवामीति वदेत् ॥५१॥ ब्रह्मानुज्ञातः प्रणीताप्रणयनम् ॐ प्रणय ३ ततः परिस्तरणं तत्र पूर्वाग्राः परिस्तरणकुशाः कार्याः। बर्हिषश्चतुर्थ-

---

भय-कहकर पुष्पाक्षतोंसे ब्रह्माका स्थापन करे। तब ब्रह्मा 'भवामि' ऐसा कहकर अग्निको प्रदक्षिणा करके उस जगह स्थित हो जाय। इस जगह उपरोक्त विधिके बदले वेदीसे दक्षिण दिशा में एक पत्तलपर 'दर्भा और दूर्वाका ब्रह्मा बना कर' स्थापन कर देते हैं। क्यों कि कार्यके आरंभ हुए पीछे समाप्ति पर्यन्त ब्रह्मा वहांसे इधर उधर नहीं हो सकता और आजकल के ब्राह्मण लोग अधिक समय तक एक जगह स्थित रह नहीं सकते इसी लिये पत्तलपर दर्भाका ब्रह्मा विराजमान किया जाता है। अस्तु) ॥ ५१ ॥ ब्रह्माके सामने वेदीसे उत्तर में प्रणीतापात्र स्थापन करके उसको जलसे भरकर उसपर दर्भा रख दे। और फिर बर्हिष अर्थात् ४९ दर्भा लेकर परिस्तीर्ण करे। वह इस प्रकार करे कि (१) बर्हिषका चतुर्थभाग (१२। दर्भा) लेकर वेदीके पूर्व दिशामे अग्निकोणसे ईशान तक पूर्वाग्र (उनकी नोक अणी पूर्वकी ओर रहे इस प्रकार) बिछावे (२) इसी प्रकार दूसरा चतुर्थ भाग (१२। दर्भा लेकर अग्निकी वेदीसे ब्रह्मा तक बिछावे (३) फिर तीसरा चतुर्थ भाग (१२।) दर्भा लेकर वेदीसे पश्चिम दिशामें नैर्ऋत्यसे

भागमादायाग्नेयादीशानांतं ब्रह्मणोऽग्निपर्यन्तं नैर्ऋत्याद्वायव्यांतम् अग्नितः प्रणीतापर्यंतम् ॥ ५२ ॥ ततः पात्रासादनम्। पवित्रच्छेदनानि त्रीणि तृणानि पवित्रे द्वे प्रोक्षणीपात्रम् आज्यस्थालीचरुस्थाली सम्मार्जनकुशाः पञ्च उपयमनकुशाः सप्त समिधस्तिस्रः प्रादेशमात्र्यः स्रुवः स्रुक् आज्यं तंडुलाः पूर्णपात्रं सतृणं च तिलयवग्रहसमिधः। एतानिपवित्रच्छेदनकुशादीनिपूर्वंपूर्वंदिशि क्रमेणासादनीयानि तदुत्तरतश्च अन्यदपि यथाकार्यानुरूपमाचारपरिप्राप्तं द्रव्यमासादनीयम् ॥ ५३ ॥ ततः पवित्रच्छेदनकुशैः प्रादेशमात्रं संमाप्य पवित्रे च्छित्त्वा

वायव्य तक बिछावे (४) और शेष चौथा चतुर्थ भाग-(१२ ।) दर्भा लेकर उत्तर दिशा में वेदीसे प्रणीता तक बिछावे। ध्यान रहे कि ४९ दर्भासे कम दर्भा लेकर भी इसी भांति बिछा दी जाँय तो कोई दोष नहीं ॥ ५२ ॥ इसके पीछे वेदीसे पश्चिम दिशामें जहां आचार्य बैठा है वहां अपने आगे दक्षिणसे आरंभ करके उत्तर की ओर पवित्र छेदनार्थ तीन दर्भा, पवित्राके अर्थ दो दर्भा, प्रोक्षणी पात्र, घीका पात्र खीरका पात्र संमार्जन कुशा ५ उपयमन कुशा ७ पलाशकी ९ अंगुल लंबी ३ समिध, स्रुव, स्रुक्, घी, चावल, पूर्णपात्रतिल जौ, मेवा खाण्ड और ग्रहोंकी समिध यह सब सागग्री क्रमसे अच्छी तरह रखदे ॥ ५३ ॥ फिर पवित्र छेदनकी दर्भाको

तानपास्य सपवित्रकरेण प्रणीतोदकं त्रिः प्रोक्षणीपात्रे कृत्वाऽनामिकांगुष्ठाभ्याम् उत्तराग्रे पवित्रे गृहीत्वा त्रिरुत्पवनम् ॥ ततः प्रोक्षणीपात्रस्य सव्यहस्ते करणम् अनामिकांगुष्ठाभ्यांपवित्रेगृहीत्वात्रिरुदिङ्गनम्प्रणीतोदकेन प्रोक्षणीप्रोक्षणम्।ततःप्रोक्षणीजलेन यथासादितद्रव्यसेचनंतद्यथाआज्यस्थालीप्रोक्षणंचरुस्थालीप्रोक्षणं संमार्ज्जनकुशप्रोक्षणम् उपयमनकुशप्रोक्षणंसमिधःप्रोक्षणं स्रुवप्रोक्षणं स्रुकप्रोक्षणम् आज्यप्रोक्षणं तंडुलप्रोक्षणं पूर्णपात्रप्रोक्षणंतिलप्रोक्षणम्यवप्रोक्षणंग्रहसमिधःप्रोक्षणं एवमन्यदपि यथासादितद्रव्यंप्रोक्ष्यअग्निप्रणीतयोर्मध्ये प्रोक्षणीपात्रनिधानं सपवित्रम् ॥ ५४ ॥ ततः आज्य-

---

९ अंगुल नापकर पवित्र छेदन करके शेषको फेंकदे। और उस ९ अंगुलके पवित्रेको हाथमें लेकर प्रणीताके जलको ३ बार प्रोक्षणीमें डाले और उस प्रोक्षणी पात्रको बायें हाथमें रखकर दहिने हाथके अंगूठे और अनामिका से पवित्रेको पकडकर प्रणीताके जलसे प्रोक्षणीको प्रोक्षण करे। और फिर प्रोक्षणी के जलसे अन्य सामग्री का प्रोक्षण करे। अर्थात् आज्यस्थाली, चरुस्थाली, संमार्जनकुशा, उपयमनकुशा और समिध आदि यथास्थित सब सामग्रीके उस जलका प्रत्येकको छींटा लगावे और अग्नि तथा प्रणीताके बीचमें उस प्रोक्षणी पात्रको पवित्र सहित रख दे ॥ ५४ ॥ फिर

स्थाल्यामाज्यनिर्वापः चरुस्थाल्यां तंडुलनिर्वापः तंडुलांस्त्रिः प्रक्षाल्य प्रणीतोदकमासिच्य तत्र किंचिज्जलांतरं दत्त्वा ततः स्वयं चरुं गृहीत्वा ब्रह्मा चाज्यं वह्नेरुत्तरतश्चरुं दक्षिणतः आज्यं निदध्यात् ॥ ५५ ॥

अथ ग्रहस्थापनम् ॥ तत्र ग्रहपीठे गत्वा । सुवर्णपटके लेख्या गंधैर्मंडलके ग्रहाः ॥ अथवाऽक्षतपुंजेषु शक्त्या वित्तानुसारतः ॥ १ ॥ इत्याद्युक्तप्रकारेण सपुंजं नवकोष्ठात्मकं मंडलं विधाय सूर्यादीन्स्थापयेत् ॥ तत्रादौ

घीके पात्रमें घी और चरु पात्र (खीर बनानें के पात्र) में चावल डालकर चावलोंको तीन बार धोवे और प्रणीताके जलसे सींचे तथा कुछ आवश्यक जल और भी डाल दे। फिर घी के पात्रको ब्रह्मा लेकर वेदीपर दक्षिण में रख दे और चरुपात्रको वेदी के बीचमें आचार्य रख दे। (यदि यह दोनों काम दूसरा कोई भी सुयोग्य मनुष्य करे तो कोई दोष नहीं) ॥ ५५ ॥

"ग्रहस्थापन" (उधर होमकी वेदीपर चरु पकानेका काम हो रहा है उसमें अभी देर लगेगी अतः इस अवसरमें इधर ग्रहोंका स्थापन हो जाय तो अच्छा है।) ग्रह स्थापन करनेके लिये ग्रहपीठ (ग्रहोंकी वेदी) पास बैठकर सुन्दर वर्णके वस्त्रपर गंध या अक्षतपुंजोंसे वित्तानुसार ग्रह मण्डल बनाके उसपर सूर्यादिकोंका स्थापन करे। ग्रहस्थापनसे

यज्ञरक्षाविधानं तद्यथा–गणाधिपं नमस्कृत्य नमस्कृत्य पितामहम् ॥ विष्णुं रुद्रं श्रियं देवीं वंदे भक्त्या सरःस्वतीम् ॥ १ ॥ स्थानाधिपं नमस्कृत्य ग्रहनाथं निशाकरम् ॥ धरणीगर्भसंभूतं शशिपुत्रं बृहस्पतिम् ॥ २ ॥ दैत्याचार्यं नमस्कृत्य सूर्यपुत्रं महाग्रहम् ॥ राहुकेतू नमस्कृत्य यज्ञारंभे विशेषतः ॥ ३ ॥ शक्राद्या देवताः सर्वान् मुनींश्च कथयाम्यहम् ॥ गर्गं मुनिं नमस्कृत्य नारदं मुनिपुंगवम् ॥४॥ वसिष्ठंमुनिशार्दूलंविश्वामित्रं तथैवच ॥ व्यासं मुनिं नमस्कृत्य सर्वशास्त्रविशारदम् ॥ ५ ॥ विद्याधरान्मुनीन्योगानाचार्यांश्च तपोधनान् ॥ तान्सर्वान् प्रणिपत्यादौ यज्ञरक्षां करोम्यहम् ॥ ६ ॥ पूर्वे रक्षतु गोविंद आग्नेय्यां गरुडध्वजः ॥ याम्यां रक्षतु वाराहो नारसिंहस्तु नैर्ऋते ॥ ॥ वारुण्यां केशवो रक्षेद्वायव्यां मधुसूदनः ॥ उत्तरे श्रीधरो रक्षेदीशाने तु जनार्दनः ॥८॥ शंखो रक्षेच्च यज्ञाग्रे पृष्ठेखड्गस्तथैव च ॥ वामपार्श्वे गदा रक्षेद्दक्षिणे तु सुदर्शनः ॥ ९ ॥ ब्रह्माणं मघवा रक्षेदाचार्यं पातु वामनः ॥ रक्षाहीनं तु यत्स्थानं तत्सर्वंपातु वामनः ॥१०॥ इति रक्षाविधानम् ॥ ५६ ॥ अथ सूर्यादीनां नवग्रहाणामावाहनं पूजनं च॥

पहले "गणाधिपं नमस्कृत्य०" इत्यादिसे रक्षा विधान करके फिर ग्रहस्थापन करे । यथा ॥५६॥ आसनके समीप दहनी

रक्तपुष्पाक्षतैर्मध्यकोष्ठे—दिवाकरं सहस्रांशुं सुरासुर-नमस्कृतम् ॥ लोकनाथं विश्वनेत्रं सूर्यमावाहयाम्यहम् ॥ १ ॥ उद्यंतं च महातेजस्विनं चैवाभय-प्रदम् ॥ दुर्निरीक्ष्यं खगमनं सूर्यमावाहयाम्यहम्॥ २ ॥ भानो सूर्य ग्रहाध्यक्ष कलिंगविषयोद्भव ॥ रक्त काश्यप-गोत्रेयो द्विभुजः पद्मलांछनः ॥ ३ ॥ सप्ताश्ववाहनागच्छ पद्ममध्ये वरप्रदः ॥ अग्नि दूतेति मंत्रेण रुद्ररूपी प्रति-ष्ठितः ॥ ४ ॥ अग्निं दूतं पुरो दधे हव्यवाहमुपब्रुवे॥ देवाँ२ आसादयादिह ॥ १ ॥ आकृष्णेनेति च ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः कलिंगदेशोद्भवं काश्यपसगोत्रमश्वारूढं क्षत्रियवर्णं सूर्यमावाहयामि प्राङ्मुखं स्थापयामी ॥ १ ॥ ५७ ॥ श्वेतपुष्पाक्षतैः आग्नेय्याम्—हिमरश्मि निशानाथं तारकाभिः समन्वितम् ॥ ओषधीनां तु राजानमिंदुमावाहयाम्यहम् ॥ २ ॥ अहो चंद्र जगत्प्राण यमुनाविषयोद्भव ॥ सुश्वेतात्रेयगोत्रेय गदापाणे वरप्रद ॥ ३ ॥ दशाश्ववाहनायाहि उमारूपी समाविश ॥

बाजूमें पूजन सामग्रीका पात्र रखकर "दिवाकरं सहस्रांशुं०" इत्यादिसे सूर्यका ध्यान करके लाल पुष्पाक्षत लेकर "अग्निं दूतं०" "आकृष्णेन०" इन मंत्रोंसे मंडलके बीचमें सूर्यका आवाहन स्थापन करे ॥ १ ॥ ५७ ॥ "हिमरश्मि०" इससे चद्रमाका ध्यान करके सफेद पुष्पाक्षत

हुताशनदले देवो मंत्रेणाप्स्वग्निनाऽर्चितः॥४॥अप्स्वग्ने सधिष्टवसौधीरनुरुध्यसे ॥ गर्भे सञ्जायसे पुनः ॥१॥ इमं देवेतिच ॥ ॐभूर्भुवःस्वःयमुनातीरदेशोद्भवमात्रेय-सगोत्रं वैश्यवर्णं चंद्रमावाहयामिप्रत्यङ्मुखं स्थापयामि ॥ २ ॥ ५८ ॥ रक्तपुष्पाक्षतैः याम्याम्—धरणीगर्भसं-भूतं लोहितांगं सुवर्चसम्॥कुमारंक्रूरकर्माणंभौममावाह-याम्यहम् ॥ १ ॥ निर्जितारिं च शत्रुघ्नमणिमाश्रित्य देवताम् ॥ ऋषिभिः स्तूयमानं च भौममावाहयाम्यहम् ॥ २ ॥ उज्जयिन्यां समुत्पन्नो भो भो भौम चतुर्भुज॥ भारद्वाजकुले जात शूलशक्तिगदाधर ॥ ३ ॥ वरदो मेषमारूढः स्कंदप्रिय तडित्प्रभः ॥ स्योनापृथिवीति मंत्रेण दले याम्ये प्रतिष्ठितः ॥ ४ ॥ स्योनापृथिवि नोभवानृक्षरानिवेशनी ॥ यच्छानः शर्म सप्रथाः ॥१॥ अग्निर्मूर्द्धेति च ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः अवंतिदेशोद्भवं भारद्वाजसगोत्रं वरदं मेषारूढंक्षत्रियवर्णंभौममावाहयामि याम्यमुखं स्थापयामि ॥ ३ ॥ ५९ ॥ पीतपुष्पाक्षतै-

---

लेकर "अपस्वग्ने०" " इमन्देवा० " इनसे मंडलके आग्ने-यमें चन्द्रका आवाहन करे ॥ २ ॥ ५८ ॥ "धरणीगर्भ०" आदिसे मंगलका ध्यान करके लाल पुष्पाक्षत लेकर "स्योना पृथिवि०" " अग्निर्मूर्द्धा० " से मंडलके दक्षिणमें भौमका स्थापन करे ॥ ३ ॥ ५९ ॥ "बुधं बुद्धिप्रदा०" से बुधका

रीशान्याम्–बुधं बुद्धिप्रदातारं सौमवंशसमुद्भवम् ॥ यजमानहितार्थाय बुधमावाहयाम्यहम् ॥ १ ॥ अहो चंद्रसुत श्रीमन्मागधायां समुद्भवः॥ अत्रिगोत्रश्चतुर्बाहो खड्गखेटकधारकः ॥२॥ गदी वरदसिंहस्थः सुवर्णाभः समाविश॥कृष्णवदीशपत्रेचइदंविष्णुप्रपूजितः॥३॥इदं विष्णुर्विचक्रमे त्रेधानिदधेपदम् ॥ समूढमस्यपाᳬंसुरे ॥१॥ उद्बुध्येतिच ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः मगधदेशोद्भव-मत्रिसगोत्रंगदिनं वरदं सिंहस्थं वैश्यवर्णंबुधमावाहयामि उत्तराभिमुखं स्थापयामि ॥ ४ ॥ ६० ॥ पीतपुष्पाक्षतैः उत्तरस्याम्–बृहस्पतेऽङ्गिरःपुत्रो देवानां च पुरोहितः ॥ त्रातारं सर्वदेवानां गुरुमावाहयाम्यहम् ॥ १ ॥ अहो वाचस्पते पीत संजातः सिंधुमंडले ॥ एह्यांगिरस-गोत्रेय हयारूढश्चतुर्भुजः॥३॥दंडाक्षसूत्रवरदकमंडलुधर प्रभो ॥ महाः निंद्रेति संपूज्यो विधिवदुत्तरे दले॥४॥ महा इन्द्रो वज्रहस्तः षोडशी शर्म यच्छतु ॥ हंतु पाप्मानं योऽस्मान्द्वेष्टि ॥ १ ॥ बृहस्पते इति च ॐ भूर्भुवःस्व सिंधुदेशोद्भवमांगिरसगोत्रंविप्रवर्णं बृहस्पति

ध्यान करके पीत पुष्पाक्षत लेकर "इदं विष्णु०" "उद्बुध्य-स्वाग्ने" से इशानमें बुधका स्थापन करे ॥ ४ ॥ ६० ॥ " बृहस्पतेंगिरः " से बृहस्पतिका ध्यान करके पीत पुष्पाक्षत लेकर " महा ँ इन्द्रो०" " बृहस्पते० " से

मावाहयामि उत्तराभिमुखं स्थापयामि ॥ ५ ॥ ६१ ॥ श्वेतपुष्पाक्षतैः पूर्वस्याम्–प्रविश्य जठरे शंभोर्निःसृतः पुनरेव यः ॥ तं सुरारिगुरुं भक्त्या शुक्रमावाहयाम्यहम् ॥ १ ॥ भो भो भोजकटे जात शुक्र श्वेताश्ववाहन ॥ समागच्छ चतुर्बाहो भृगुगोत्रविभूषण ॥ २ ॥ परिघाक्षवलीहस्त कमंडलुधर प्रभो ॥ शक्रवत्पूर्वपत्रे च शुक्रज्योतिश्चपूजितः ॥३॥शुक्रज्योतिश्चचित्रज्योतिश्चसत्यज्योतिश्चज्योतिष्मांश्च ॥ शुक्रऋतपाश्चात्यर्ठंहाः ॥१॥ अन्नात्परीति च॥ ॐ भूर्भुवःस्वःभोजकटदेशोद्भवं भार्गवसगोत्रं विप्रवर्णं शुक्रमावाहयामि प्राङ्मुखं स्थापयामि ॥ ६ ॥ ६२ ॥ कृष्णपुष्पाक्षतै पश्चिमे–धर्मराजानुजं चैव भिन्नांजनसमप्रभम् ॥ छायामार्तंडसंभूतं शनिमावाहयाम्यहम् ॥ १ ॥ कृष्णांगं कृष्णवर्णं च कृष्णाजिनधरं तथा ॥ शूरं मंदगतिं चैव शनिमावाहयाम्यहम् ॥ २ ॥ अहो सौराष्ट्रसंजात च्छायापुत्र चतुर्भुज ॥ कृष्णवर्णार्कगोत्रेय बाणहस्त धनुर्धर ॥ ३ ॥

उत्तरमें बृहस्पतिका स्थापन करे ॥ ५ ॥ ६१ ॥ "प्रविश्य जठरे०" "से शुक्रका ध्यान करके सफेद पुष्पाक्षत लेकर "शुक्रज्ज्योति०" "अन्नात्परि०" से पूर्वमें शुक्रका स्थापन करे ॥ ६२॥ "धर्मराजानुजं०" से शनि का ध्यान

त्रिशूली च समागच्छ वरदो गृध्रवाहनः ॥ प्रजापतेनेति पूज्यो विधिवत्पश्चिमेदले ॥ ४ ॥ ॐ प्रजापतेनत्वदेतान्यन्यो विश्वारूपाणिपरिताबभूव ॥ यत्कामास्तेजुहुमस्तन्नोअस्तुव्वयꣳस्यामपतयोरयीणाम् ॥ १॥ शन्नो देवीति च ॥ॐ भूर्भुवः स्वः सौराष्ट्रदेशोद्भवं काश्यपसगोत्रं शूद्रवर्णं शनिमावाहयामिप्रत्यङ्मुखंस्थापयामि ॥ ७ ॥ ६३ ॥ धूम्रपुष्पाक्षतैर्नैर्ऋत्याम्--चक्रेणाच्छिन्नमूर्द्धानं विष्णुभावनिरीक्षितम् ॥ यजमानहितार्थाय राहुमावाहयाम्यहम् ॥ १ ॥ राहो बर्बरके देशे संजातः कायवर्जितः ॥ गोत्रे पैठीनसे ह्येहि सिंहारूढो वरप्रदः ॥ २ ॥ करालवदनश्रेष्ठ कालरूपांजनप्रभः ॥ आयंगौरिति मंत्रेण पूज्यो नैर्ऋत्यपत्रके ॥ ३ ॥ ॐ आयंगौः पृश्निरक्रमीदसदन्मातरंपुरः ॥ पितरंचप्रयन्त्स्वः ॥ १॥ कयानश्चित्रेति च ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः बर्बरदेशोद्भवं पैठीनसगोत्रं शूद्रवर्णं राहुमावाहयामि याम्यमुखं स्थापयामि ॥ ८ ॥ ६४ ॥ धूम्रपुष्पाक्षतैर्वायव्याम्-आंजनेयं महारौद्रं बहुरूपं महाग्रहम् ॥ महाकायं महाक्रूरं

करके काले पुष्पाक्षत लेकरके "प्रजापते०" "शन्नोदेवी०" से पश्चिममें शनिका स्थापन करे ॥ ७ ॥ ६ ३ ॥ ,, चक्रेणाच्छिन्न० " से राहुका ध्यान करके धूम्र वर्णके पुष्पाक्षत लेकर " आयंगौः०" "कयानश्चित्र०" से नैर्ऋत्यमें राहुका स्थापन करे॥ ७॥ ६ ४॥ और " आंजनेयं० " से केतुका ध्यान करके

केतुमावाहयाम्यहम् ॥ १ ॥ एह्येतिभगवन्केतो व्योम-चारिन् महामते॥ ग्रहैस्तु सहितं सर्वैःकेतुमावाहयाम्यहम् ॥ २ ॥ केतवो विविधाकारा मलयाद्रिसमुद्भवाः ॥ द्विभुजा जैमिने गोत्रे गदाहस्ता वरप्रदाः ॥ ३ ॥ आगच्छंतु कपोतस्थाः शोभने मारुते दले ॥ ब्रह्मजज्ञानमंत्रेण चित्रगुप्तमिवार्चयेत् ॥ ४ ॥ ॐ ब्रह्मजज्ञानंप्रथमंपुरस्ताद्विसीमतः सुरुचोव्वेनआवः ॥ सबुध्न्याउपमा अस्यविष्ठाः सतश्चयोनिमसतश्चव्विवः ॥१॥ केतुकृण्वन्निति च ॥ ॐ भूर्भुवः स्व अंतर्वेदिसमुद्भवंजैमिनिसगोत्रं शूद्र वर्णं केतुमावाहयामि याम्यमुखं स्थापयामि ॥९॥६६॥ अथाधिदेवानामावाहनं स्थापनं च ॥ एवंग्रहान्प्रतिष्ठाप्य स्थापनीयाश्च देवताः॥तेषां स्थानानि नामानि मंत्राश्च प्रवदाम्यहम् ॥१॥६६॥रुद्रं त्र्यंबकमंत्रेणरवेरुत्तरतो न्यसेत्।) (यस्ययो वर्णस्तंद्वर्ण पुष्पाक्षतैः) ॐ त्र्यंबकंयजामहेसुगंधिपुष्टिवर्द्धनम् ॥

धूम्राक्षत पुष्प लेकर "ब्रह्मजज्ञानं०" "केतुंकृण्व०" से वायव्यमें केतुका आवाहन स्थापन करे । ॥९॥६५॥ इसके पीछे इसी वेदीपर आगे लिखे अनुसार अधिदेवता और प्रत्यधि देवता आदिका यथास्थान स्थापन करे। (स्मरण रहे कि उसके नाम और स्थान ऊपर मूलमें स्पष्ट लिखे हुए हैं किंतु सहसा स्थान निर्दिष्ट न हो सके तो मंगलके बीचमें सबका स्थापन करना चाहिये) ॥ ६६ ॥ " त्र्यंबकं० " से रुद्रका १

उर्वारुकमिवबंधनान्मृत्योर्मुक्षीयमामृतात् ॥ १ ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः शंभो इहागच्छेह तिष्ठ ॥ (सोमस्याग्नेय-दिग्भागे श्रीश्चते मेनकात्मजाम्) ॐ श्रीश्चतेलक्ष्मीश्च पत्न्यावहोरात्रेपार्श्वेनक्षत्राणिरूपमश्विनौव्यात्तम्॥इष्ण न्निषाणामुम्मइषाणसर्वलोकम्मइषाण ॥२॥ ॐ भूर्भुवः स्वः उमे इहागच्छेह तिष्ठ॥ (यदक्रंदेति भौमस्य याम्ये स्कंदं प्रपूजयेत्।) ॐ यदक्रंदः प्रथमंजायमानउद्यन्त्स मुद्रादुतवापुरीषात् ॥ श्येनस्यपक्षाहरिणस्यबाहू उपस्तु-त्यंमहिजाततंतेअर्वन् ॥ ३ ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः स्कंद इहा-गच्छेहतिष्ठ (विष्णुं विष्णोरराटेति यजेत्पूर्वेबुधस्य च।) ॐ विष्णोरराटमसिव्विष्णोः श्नप्त्रेस्थो विष्णोः स्यूरसिव्विष्णोर्ध्रुवोसिवैष्णवमसिव्विष्णवेत्वा ॥४॥ॐ भूर्भुवः स्वः विष्णो इहागच्छेह तिष्ठ ॥ (गुरोरुत्तरतोऽभ्यर्च्यो ब्रह्माब्रह्मेति मंत्रतः।) ॐ आब्रह्मन्ब्राह्मणोब्रह्म-वर्चसीजायतामाराष्ट्रेराजन्यशूरइषव्योतिव्याधीमहारथो जायतांदोग्ध्रीधेनुर्वोढाऽनड्वानाशुःसप्तिःपुरंधिर्योषाजिष्णू रथेष्ठाःसभेयोयुवास्ययजमानस्यव्वीरोजायतान्निकामेनि कामेनःपर्जन्योव्वर्षतुफलवत्योनऽओषधयःपच्यंतांयोग क्षेमोनःकल्पताम् ॥ ५ ॥ भूर्भुवः स्व ब्रह्मन् इहागच्छेह

" श्रीश्चते० " से उमाका २ " यदक्रंद० " से स्कन्दका ३ " विष्णोरराट० " से विष्णुका ४ 'आब्रह्मन्

तिष्ठ॥ (सजोषेंद्रेति शुक्रस्य शक्रंप्राच्यांनिधापयेत् ।)
सजोषाइंद्रसगणोमरुद्भिः सोमं पिबवृत्रहाशूरविद्वान् ॥
जहिशत्रूँ२रपमृधोनुदस्वाथाभयंकृणुहि विश्वतोनः ॥६॥
ॐ भूर्भुवः स्वः शक्र इहागच्छेह तिष्ठ ॥ (शनेः पश्चि-
मतः स्थाप्यो यमायत्वेति वै यमः । (ॐयमायत्वाम-
खायत्वासूर्य्यस्यत्वातपसेदेवस्त्वासवितामध्वावक्तुपृथि
व्याःसᳪस्पृशस्पाहि अर्चिरसि शोचिरसितपोसि ॥७॥
ॐ भूर्भुवः स्वः यम इहागच्छेह तिष्ठ ॥ (कार्षिरसीति
मंत्रेण राहोः कालं तथोत्तरे) ॐकार्षिरसिसमुद्रस्यत्वाः
ऽक्षित्याउन्नयामिसमापोऽअद्भिरग्मतसमोषधीभिरोषधी
॥८॥ ॐ भूर्भुवः स्वः यम इहागच्छेह तिष्ठ॥ (चित्रगुप्तं
तु केतूनां चित्रावस्विति नैर्ऋते।) ॐचित्रावसोस्वस्तिते
पारमशीय ॐ भूर्भुवः स्वः चित्रगुप्त इहागच्छेह तिष्ठ
॥ ९ ॥ ६७ ॥ अथ प्रत्यधिदेवतानामावाहनं स्थापनं
च ॥ (शंभोरग्रे यजेद्वह्निं सनः पितेति मंत्रतः । ॐ
सनः पितेव सूनवेऽग्नेसूपायनोभव ॥ सचस्वानःस्वस्तये
॥ १ ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः अग्नेइहागच्छेह तिष्ठ॥ (अपो

ब्रह्मणो० , से ब्रह्माका ५ "सजोषा इन्द्रसगणो०" से इन्द्रका ६
" यमायत्वा० " से यमका ७ "कार्षिरसि० "से कालका ८
और " चित्रावसो० " से चित्रगुप्तका ९ स्थापन करे
॥ १८ ॥ ६७ ॥ " सनः पितेव० " से अग्निका १

अद्येति मंत्रेण ह्युमाया नैर्ऋते ह्यपः)।ॐअपोअद्यान्वचारिषर्ठंरसेनसमसृक्ष्महि ॥ पयस्वानग्नऽआगमंतम्मा सर्ठंसृजव्वर्चसाप्रजयाचधनेनच ॥ २ ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः आप इहागच्छध्वमत्र तिष्ठध्वम् ॥ (धरां स्कंदाद्वायुकोणे) ॐ चिदसितयादेवतयांगिरस्वद्ध्रुवासीद॥परिचिदसितयादेवतयांगिरस्वद्ध्रुवासीद ॥ ३ ॥ ॐभूर्भुवः स्वः धरे इहागच्छेह तिष्ठ ॥ (विष्णुं नारायणोत्तरे)ॐ इदं विष्णुर्व्विचक्रमेत्रेधानिदधेपदम्॥समूढमस्यपार्ठंसुरे ॥ ४॥ ॐभूर्भुवः स्वःस्वर्विष्णोइहागच्छेहतिष्ठ॥(प्रजापत्युत्तरे चेंद्रम्) ॐइंद्रआसान्नेताबृहस्पतिर्दक्षिणायज्ञः पुरऽएतुसोमः॥देवसेनानामभिभंजतीनांजयंतीनाम्मरुतोयंत्वग्रम् ॥ ५ ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः इंद्र इहागच्छेह तिष्ठ ॥(इंद्रादैंद्रींचपश्चिमे)ॐइंद्रंदैवीर्विशोमरुतोऽनुवर्त्मानोऽभवन्यथेन्द्रदैवीर्विशोमरुतोऽनुवर्त्मानोऽभवन् एवमिमँय्यजमानन्दैवीश्च व्विशो मानुषीश्चानुवर्त्मानो भवंतु ॥६॥ ॐ भूर्भुवः स्वः इंद्राणि इहागच्छेह तिष्ठ॥ (प्रजापतिं यमात्पश्चात्) ॐ प्रजापतेनत्व देतान्ययोव्विश्वारूपाणिपरिताबभूव ॥ यत्कामास्ते

"अपोअद्या०" से आप जल) का २ "चिदसितया०"से पृथ्वीका ३ "इदंविष्णुः०" से विष्णुभगवान्का ४ " इन्द्र आसां०" से इन्द्रका ५ " इन्द्रंदैवी० से इन्द्राणीका ६ "प्रजापते०" से प्रजापतिका ७ " नमोऽस्तुसर्पेभ्यो०" से

जुहुमस्तन्नोअस्त्वयममुष्यपितासावस्यपिताऽवयथंस्या-
मपतयोरयीणाथंस्वाहा ॥ रूद्रयत्तेक्रिविपरन्नामतस्मिन्
हुतमस्यमेष्टमसिस्वाहा ॥ ७ ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः प्रजा-
पते इहागच्छेह तिष्ठ ॥ (पन्नगान्कालपश्चिमे)
ॐ नमोस्तुसर्पेभ्योयेकेचपृथिमनु ॥ येऽअन्तरिक्षेये
दिंवितेभ्यः सर्पेभ्योनमः ॥८॥ ॐ भूर्भुवः स्वः पन्नगा
इहागच्छध्वमिह तिष्ठध्वम् (ईशाने चित्रगुप्तस्यब्रह्माणं
संप्रपूजयेत् । ॐ ब्रह्मजज्ञानंप्रथमंपुरस्ताद्विसीमतः
सुरूचोव्वेनआवः॥सबुध्न्याउपमाऽ अस्यविष्ठा।सतश्च
योनिमसतश्चव्विवः ॥९॥ ॐ भूर्भुवः स्वः ब्रह्मन्निहाग-
च्छेह तिष्ठ ॥ ६८ ॥ अथ गणपंचकं स्थापयेत् (शनेः
केतोश्च पूर्वेण गुरोः सूर्यस्य पश्चिमे ॥ लंबोदरः
प्रतिष्ठाप्यो गणानांत्वेतिमंत्रतः ॥ १ ॥) ॐ गणानां
त्वागणपतिर्ठंहवामहे प्प्रियाणान्त्वाप्प्रिपतिर्ठंहवामहे
निधीनांत्वानिधिपतिर्ठंहवामहेव्वसोमम॥आहमजानि
गर्ब्भधमात्वमजासिगर्ब्भधम् ॥ १ ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः
गणपते इहागच्छेह तिष्ठ ॥ उत्तरे च ततो दुर्गां जातवे-

सर्पोंका ८ और "ब्रह्मज्ज्ञानं०" से ब्रह्माका ९ स्थापन करे
॥ २७ ॥ ६८ " गणानान्त्वा० " से गणपतिका १
"जातवेदसे०" से दुर्गाका २ "वायोयेते०" से वायुका ३ "घृतं

देति मंत्रतः ।) ॐ जातवेदसे सुनवामसोममरातीयतो निदहाति वेदः ॥ सनःपरिषदतिदुर्गाणिविश्वानावेवसिंधुंदुरितात्यग्निः ॥ २ ॥ भूर्भुवः स्वः दुर्गेइहागच्छेह तिष्ठ ॥ व्वायोयेतेसहस्त्रिणोरथासस्तेभिरागहि ॥ नियुत्वान्त्सोमपीतये ॥३॥ ॐ भूर्भुवः स्वः वायो इहागच्छेह तिष्ठ ॥ धृतंधृतेतिमंत्रेण अंतरिक्षं तु पश्चिमे।)ॐधृतं धृतपावानः पिबतव्वसांवसापावान पिबतांतारिक्षस्य हविरसिस्वाहा॥ दिशः प्रदिशऽआदिशोव्विदिशऽउद्दिशो दिग्भ्यः स्वाहा ॥ ४ ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः अंतरिक्ष इहागच्छेह तिष्ठ ॥) यावांकशेति मंत्रेण यजेत्पूर्वं ततोऽश्विनौ । ॐ यावांकशामधुमत्यश्विनासूनृतावती॥ तयायज्ञंमिमिक्षतम् ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः अश्विनौ इहागच्छतमिह तिष्ठतम् ॥ इति पंचलोकपालानां स्थापनम्॥ ६९ ॥ अथ नक्षत्रस्थापनम् ॥ (सप्त सप्त यजेद्धानां प्रागाद्यश्विनिपूर्वकम् ।) (अश्विनातेजसा दस्रं) ॐअश्विनातेजसाचक्षुःप्राणेन सरस्वतीव्वीर्यम्॥ वाचेंद्रोबलेनेंद्रायदधुरिन्द्रियम् ॥१॥ ॐभूर्भुवः स्वः दस्र इहागच्छेह तिष्ठ ॥ यमायत्वेति याम्यभम्)

धृत०"से अन्तरिक्षका ४ और "यावांक०" से अश्विनका ५ स्थापन करे ॥ ३२ ॥ ६९ ॥ अश्विनातेजसा० से अश्विनीका १ यमयत्वा० भरणीका २ अयमग्नि० से कृत्ति-

ॐयमायत्वामखायत्वासूर्यस्यत्वातपसे॥देवस्त्वासविता मध्वानक्तुपृथिव्याःसर्ठस्पृशस्पाहि॥अर्चिरसि शोचिरसि तपोसि ॥२॥ ॐ भूर्भुवः स्वः याम्यभ इहागच्छेह तिष्ठ ॥ (कृत्तिका चायमग्निश्च)ॐ अयमग्निः सहस्रिणो व्वाजस्यशतिनस्पतिः ॥ मूर्द्धांकवीरयीणाम् ॥ ३ ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः कृतिके इहागच्छेह तिष्ठ (ब्रह्मजज्ञेति रोहिणी) ॐ ब्रह्मजज्ञानंप्रथमंपुरस्ताद्विसीमतः सुरुचो व्वेनआवः॥सबुध्न्याउपमाअस्यव्विष्ठाःसतश्चयोनिमसतश्च व्विवः ॥ ४ ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः रोहिणीहागच्छेह तिष्ठ॥(सोमोधेन्विति सौम्यं च) ॐसोमो धेनुर्ठसोमो अर्वंतमाशुर्ठसोमोव्वीरंकर्मण्यंददाति॥सादन्यंव्विदथ्य र्ठसभेयंपितृश्रवणंयोददाशदस्मै ॥ ५ ॥ ॐ भूर्भुवःस्वः सौम्य इहागच्छेह तिष्ठ ॥ (नमस्तेरुद्र रौद्रभम्) ॐनमस्तेरुद्रमन्यवउतोतऽइषवेनमः॥बाहुभ्यामुततेनमः ॥ ६ ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः रौद्रभ इहागच्छेह तिष्ठ ॥ (अदितिर्द्यौरादितेयम्) ॐ अदितिर्द्यौरदितिरंतरिक्षमदितिर्म्मातासपितासपुत्रः ॥ विश्वेदेवा अदितिः पंच जनाऽअदितिर्ज्जातमदितिर्जनित्वम् ॥ ७ ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः आदितेय इहागच्छेह तिष्ठ ॥ एतानि पूर्वस्यां

काका ३ ब्रह्मजज्ञानं० से रोहिणीका ४ सोमोधेनुं० से मृगशिरका ५ नमस्तेरुद्र० से आर्द्राका ६ अदितिर्द्यौं० से पुन-

स्थाप्स्यानि ॥ (पुष्यं वाचस्पतेन तु) ॐ व्वाचस्पतयेपवस्ववृष्णोऽअ ७ँ शुभ्यांगभस्तिपूतः ॥ देवोदेवेभ्यः पवस्वयेषां भागोऽसि ॥८॥ ॐ भूर्भुवः स्वः पुष्य इहागच्छेह तिष्ठ॥(सर्पेभ्यः सर्पदैवतम्)ॐनमोस्तुसर्पेभ्यो येकेचपृथिवीमनु ॥ येअंतरिक्षेयेविदितेभ्यः सर्पेभ्योनमः ॥ ९ ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः आश्लेषे इहागच्छेह तिष्ठ ॥ (पितृभ्यः पितृदैवतम्)पितृभ्यःस्वधायिभ्यःस्वधानमः पितामहेभ्य-स्वधायिभ्यः स्वधानमः प्रपितामहेभ्यः स्वधायिभ्यःस्वधानमः॥अक्षन्पितरोमीमदंत पितरोतीतृपंत पितरः पितरः शुंधध्वम्॥१०॥ॐ भूर्भुवः स्वः मघे इहागच्छेद निष्ठ ॥ (भगप्रणेति भाग्यंतु) ॐ भगप्रणेतभंगसत्यराधोभगेमांधियसुदवाददन्नः॥भगप्रणोजनय गोभिरश्वैभंगप्रनृभिर्नृवंतः स्याम ॥ ११ ॥ ॐ भूर्भुवः स्वःपूर्वाफाल्गुनीहागच्छेहतिष्ठ॥(दैव्यावध्वर्यूआर्यमम् ॐदैव्यावध्वर्यूआगतर्ठँरथेनसूर्यत्वचा।मध्वायज्ञर्ठँसमंजाथे ॥ तम्प्रक्त्नथायंव्वेनश्चित्रन्देवानाम् ॥ १२ ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः उत्तराफाल्गुनीहागच्छेह तिष्ठ ॥ (हस्तं विभ्राड्मंत्रेण)ॐ विभ्राड्बृहत्पिबतुसोम्यंमध्वायुर्दधद्य-

---

र्वसुका ७ वाचस्पतये० मे पुष्यका ८ नमोस्तुसर्पेभ्यो० से आश्लेषाका ९ पितृभ्य० से मघाका १० भगप्रणेत० से पूर्वाफाल्गुनीका ११ दैव्यावध्वर्यू० से उत्तराफाल्गुनीका १२ विभ्राड्० से हस्तका १३ त्वष्टातुरी० से चित्राका १४ पीवो

ज्ञपतावविह्रुतम् ॥ य्वातजूतोयोअभिरक्षतित्मनाप्रजाः पुपोषपुरुधाव्विराजति ॥ १३ ॥ भूर्भुवःस्व हस्त इहागच्छेह तिष्ठ॥ (चित्रा त्वष्टातुरीपो) ॐत्वष्टातु-रीपोऽअद्भुतऽइन्द्राग्नीपुष्टिवर्द्धना॥द्विपदाच्छन्दऽइंद्रि-यमुक्षागौर्न्वयोदधुः ॥ १४ ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः चित्रे इहागच्छेह तिष्ठ ॥ इति दक्षिणस्यां स्थाप्यानि ॥ (पीवोअन्नेति वायव्यं) ॐ पीवोअन्ना ँरयिवृधः सुमेधा श्वेतःसिषक्तिनियुत्कतामभिश्रीः ॥तेवायवेसमनसोव्वित स्थुर्विश्वेनरःस्वपत्यानिचक्रुः॥ॐभूर्भुवःस्वःस्वाते इहा-गच्छेह तिष्ठ॥१५॥ (इंद्राग्नी च द्विदैवतम्) ॐ इंद्राग्नी आगतꣳसुतंगीभिर्नभोवरेण्यम् ॥ अस्यपातंधियेषिता ॥१६॥ॐभूर्भुवःस्वविशाखे इहागच्छतमिह तिष्ठतम्॥ (नमोमित्रेति मैत्रं च) ॐ नमोमित्रस्यव्वरुणस्यचक्षसे महोदेवायतदृतꣳसपर्य्यंत।दूरेदृशेदेवजातायकेकवेदिव-स्पुत्राय सूर्यायशꣳसत ॥ १७ ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः मैत्र इहागच्छेह तिष्ठ ॥ (सइषुहस्तैःपुरंदरम्)ॐसइषुहस्तैः सनिषङ्गिभिर्व्वशीसꣳस्त्रष्टासयुधइंद्रोगणेन ॥ सꣳसृष्ट-जित्सोमपाबाहुशर्द्ध्युंग्रधन्वाप्रातिहिताभिरस्ता ॥१८॥ ॐ भूर्भुवः स्वः ज्येष्ठे इहागच्छेहतिष्ठ ॥(मूलं मातेव

अन्ना० से स्वातिका १५ इन्द्राग्नी० से विशाखाका १६ नमो मित्रस्य०से अनुराधाका१७सइषुहस्तैः० से ज्येष्ठाका १८

पुत्रं च) ॐ मातेवपुत्रंपृथिवीपुरीष्यमग्निᳬस्वेतयोनाव भारुखा॥ तांविश्वैर्देवैर्ऋतुभिः संविदानः प्रजापतिर्विश्वकर्माविमुंचतु ॥ १९ ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः मूलइहागच्छेहतिष्ठ ॥(पूर्वाषाढामपाघम) ॐ अपाघमपकिल्बषमपकृत्यमपोरपः ॥ अपामार्गत्वमस्मदपदुष्वप्न्यᳬसुव ॥२०॥ ॐ भूर्भुवः स्वः पूर्वाषाढे इहागच्छेह तिष्ठ॥ (बिश्वेअद्येतिविश्वेशं) ॐविश्वेऽअद्यमरुतोविश्वऊती विश्वेभवंत्वग्नयः समिद्धाः॥ विश्वेनोदेवाऽअवसागमंतु विश्वमस्तुद्रविणंवाजोऽअस्मे ॥२१॥ ॐ भूर्भुवःस्वः उत्तराषाढेइहागच्छेह तिष्ठ॥ इति प्रतीच्यां स्थाप्यानि॥ गायत्र्याऽभिजितं न्यसेत्) ॐ तत्सवितुर्वरेण्यंभर्गो देवस्यधीमहि ॥ धियोयोनः प्रचोदयात् ॥२२॥ ॐ भूर्भुवःस्वः अभिजित् इहागच्छेह तिष्ठ॥(श्रवणंविष्णुमंत्रेण ॐ इदंविष्णुर्विचक्रमेत्रेधानिदधेपदम्॥ समूढमस्यपाᳬसुरे ॥ २३ ॥ॐ भूर्भुवः स्वः श्रवण इहागच्छेह तिष्ठ॥ (वसोर्मंत्रेणवासवम्)ॐ वसोः पवित्रमसिशतधारंवसोः पवित्रमसिसहस्रधारम् ॥ देवस्त्वासविता पुनातुवसोः पवित्रेणशतधारेणसुप्वाकामधुक्षः॥२४॥

मातेवपुत्रं० से मूलका १९ अपाघमप० से पूर्वाषाढाका २० विश्वे अद्य० से उत्तराषाढ़ाका २१ गायत्रीमंत्रसे अभिजित्का २२ इदंविष्णु० से श्रवणका २३ वसोः पवित्र० से

ॐ भूर्भुवः स्वः धनिष्ठे इहागच्छेह तिष्ठ ॥ (शतभिषं वरुणस्येति) ॐ व्वरुणस्योत्तंभनमसिव्वरुणस्यस्कंभ-सर्ज्जनीस्त्थोव्वरुणस्यऽऋतसदन्यसिव्वरुणस्यऽऋतस-दनसिव्वरुणस्यऋतसदनमासीद ॥ २५ ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः शतभिषे इहागच्छेह तिष्ठ ॥ (उतनोह्यजपादभम्) ॐउतनोऽहिर्बुध्न्यः शृणोत्वजऽएकपात्पृथिवीसमुद्रः॥ विश्वेदेवाऋतावृधोहुवानास्तुतामंत्राः कविशस्ताऽअवतु ॥ २६ ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः अजपादभ इहागच्छेह तिष्ठ॥ (शिवोनामेत्यहिर्बुध्न्यम्)ॐ शिवोनामासिस्वधितिस्ते पितानमस्तेअस्तुमामाहिंर्ठसीः॥ निवर्त्तयाम्यायुषेन्नाद्या यप्रजननायरायस्पोषायसुप्रजास्त्वायसुवीर्याय ॥२७॥ ॐभूर्भुवः स्वः अहिर्बुध्न्य इहागच्छेह तिष्ठ ॥ (पौष्णं पूषन्तवेन तु) ॐ पूषन्तवव्रतेव्वयन्नरिष्येम कदाचन ॥ स्तोतारस्तऽइहस्मसि ॥ २८ ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः रेवति इहागच्छेह तिष्ठ ॥ इति नक्षत्रस्थापनम् ॥ ७० ॥ (योगेयोगेति ईशान्यां योगानेवैकपुंजके ।) ॐयोगेयो-गेतवस्तरंव्वाजेव्वाजे हवामहे ॥ सखायऽइंद्रमूतये ॥ १ ॥

धनिष्ठाका २४ वरुणस्योत्तं० शतभिषाका २५ उतनोहि-र्बुध्न्यः० से पूर्वाभाद्रपदका २६ शिवोनामा० से उत्तराभाद्रपदका और पूषन्तवव्रते० से रेवतीका स्थापन करे २७ ॥ ५४ ॥ ॥७०॥ "योगेयोगे०" से २७ योगोंका " भद्रंकर्णे० " से

ॐ भूर्भुवः स्वः योगाः इहागच्छध्वमिह तिष्ठध्वम् ॥२७॥ (भद्रंकर्णेति मंत्रेण करणानग्नौ प्रपूजयेत्) ॐ भद्रंकर्णेभिः शृणुयामदेवा भद्रंपश्येमाक्षभिर्यजत्राः ॥ स्थिरैरंगैस्तुष्टुवाᳬसस्तनूभिर्व्यशेमहिदेवहितंय्यदायुः। ॥१॥ ॐ भूर्भुवः स्वः करणा इहागच्छध्वमिह तिष्ठध्वम् ॥११॥ (ध्रुवासीति ध्रुवं मध्ये ग्रहणां च सतारकम्)॥ ॐध्रुवासिध्रुवो यं यजमानोस्मिन्नायतनेप्रजयापशुभिर्भू-यात्॥ घृतेनद्यावापृथिवीपूर्यैथामिन्द्रस्यच्छदिरसिव्वि-श्वजनस्यच्छाया ॥ १ ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः सतारक ध्रुव इहागच्छेह तिष्ठ ॥ ७१ ॥ (आदित्यमंडले चैव वामे चैवाधिदेवयोः। पंचनद्येति सरितः पत्रबाह्ये तु पश्चिमे॥) ॐ पंचनद्यः सरस्वतीमपियंति सस्रोतसः ॥ सरस्वती तुपंचधासोदेशेभवत्सरित् ॥ १॥ ॐ भूर्भुवः स्वः सरित इहागच्छध्वमिहतिष्ठध्वम् (गुरुमार्तंडयोर्मध्येसप्तर्षयेति वै ऋषीन्।) ॐ सप्तऋषयः प्रतिहिताः शरीरेसप्त रक्षंति सदमप्रमादम् ॥ सप्तापःस्वपतोलोकमीयुस्तत्र जाग्रतो अस्वप्नजौसत्रसदौ च देवौ॥ ॐभूर्भुवः स्वः सप्तऋषयः इहागच्छध्वमत्र तिष्ठध्वम् ॥ (इमं मे सागरान् सप्त

---

११ करणोंका " ध्रुवोसि० " से ध्रुवका स्थापन करे ॥ ९३॥ ७१ ॥ " पंचनद्यः० " से सरिताओंका " सप्त ऋषयः० " से ७ ऋषियोंका " इमम्मे० " से ७ सागरोंका ।

सरितोऽधः प्रपूजयेत् ।) ॐइमंमेव्वरुणश्रुधीहवमद्याच मृडय ॥ त्वामवस्युराचके ॐ भूर्भुवः स्वः सागरा इहागच्छध्वमत्र तिष्ठध्वम् ॥ प्रपर्वतेति मंत्रेण पर्वतानु त्तरे यजेत् ॥ पंक्तिनक्षत्रयोर्मध्ये पत्रवाह्ये तथैव च) ॐप्रपर्वतस्यवृषभस्यपृष्ठान्नावश्चरंतिस्वसिचऽइयानाः॥ ताऽआववृत्रन्नधरागुदक्ताअहिर्बुध्न्यमनुरीयमाणाः।वि-ष्णोर्व्विक्रमणमसिविष्णोर्विक्रांतमसिविष्णोक्रांतमसि ॥ १ ॥ ॐ भूर्भुवः स्वःपर्वता इहागच्छेध्वमत्र तिष्ठ-ध्वम् ॥ (जवोयस्तेति रैवंतं स्थापयेत्सूर्य्यतोऽप्यधः ।) ॐ जवोयस्तेव्वाजिन्निहितोगुहायःश्येनेपरीत्तो अचरच्च व्वाते।तेननोव्वाजिन्बलवान्बलेनव्वाजजिच्चभवशमनेच पारयिष्णुः॥व्वाजिनोव्वाजजितोव्वाजर्ठसरिष्यन्ती बृहस्पतेर्भागमवजिघ्रत ॥ १ ॥ ॐ भूर्भुवः स्व रैवंत इहागच्छेह तिष्ठ ॥ (सुपर्णोसीति गरुडमुत्तरे बुधमं-डले। ॐ सुपर्णोसिगुरुत्मांस्त्रिवृत्तेशिरोगायत्रं चक्षुर्बृह-द्रथंतरे पक्षौ ॥ स्तोमआत्माछंदाठंस्यंगानियजूठंषि नामसामतेतनूर्वामदेव्यंयज्ञायज्ञियंपुच्छंधिष्ण्याःशफाः सुपर्णोसिगरुत्मान्दिवंगच्छस्वः पत ॥ १ ॥ भूर्भुवः स्वः गरुड इहागच्छेह तिष्ठ ॥७२॥ अत्रावसरे रुद्र-कलशस्थापनम् ॥ (भूरसीति भूमिप्रार्थना) ॐ भूरसि

" प्रपर्वतस्य० " से ७ पर्वतोंका "जवोयस्ते० " से रैवं-तका और " सुपर्णो० " से गरुड़का स्थापन करे ॥ २१ ॥

भूमिरस्यदितिरसिव्विश्वधाया विश्वस्यभुवनस्यधर्त्री॥ पृथिवीं यच्छपृथिवीन्दृꣳहपृथिवीम्माहिꣳसीः॥ महीद्यौ-रिति धान्याधारं कृत्वा) ॐ महीद्यौः पृथिवीचनऽइमं य्यज्ञंमिमिक्षताम् ॥ पिपृतान्नोभरीमभिः ॥ १ ॥ (आजिघ्रकलशमिति कलशस्थापनम् ।) ॐ आजिघ्र कलशम्महृात्वाविशंत्विदवः॥पुनरूर्ज्जानिवर्त्तस्वसानः सहस्रं धुक्ष्वोरुधारा पयस्वती पुनर्म्मा व्विशताद्रयिः ॥१॥(व्वरुणस्योत्तमित्यपप्रपूर्य)ॐव्वरुणस्योत्तंभनम-सिव्वरुणस्यस्कंभजसर्ज्जनीस्थोव्वरुणऋतसदन्यसिव रुणस्यऋतसदनमसि व्वरुणस्यऽऋतसदनमासीद॥१॥ (याऽओषधीरिति सर्वौषधीः प्रक्षिपेत्)ॐयाऽओषधी पूर्वाजातादेवेभ्यस्त्रियुगंपुरा ॥ मनैनुबभ्रूणामहꣳशतं धामानिसप्तच॥१॥ धान्यमसीति धान्यम्)॥ॐधान्य-मसिधिनुहिदेवान्प्राणायत्वोदानाय त्वोदानायत्वा दीर्घामनुप्रसितिमायुषेधां देवोवः सविता हिरण्यपाणिः प्रतिगृभ्णात्वाच्छिद्रेणपाणिनाचक्षुषेत्वामहीनाम्पयोसि ॥१॥ अश्वत्थेवेति पंचपल्लवान्) अश्वत्थोदुंबरप्लक्ष-चूतन्यग्रोधपल्लवाः पंचपल्लव० । ॐ अश्वत्थेवोनिपदनं

॥७२॥ इस जगह रुद्र कलशका भी स्थापन है । किन्तु यदि पहले आरंभसे कर दिया हो तो फिर यहां " भूरसि० "

पर्णेवोव्वसतिष्कृता ॥ गोभाजइत्किलासथयत्सनवथ पूरुषम् ॥ (याःफलिनीतिफलम्) ॐ याःफलिनीर्याऽ अफलाऽअपुष्पायाश्चपुष्पिणीः ॥ बृहस्पतिप्रसूतास्तानो मुंचंत्वर्ठहसः ॥ १ ॥ (हिरण्यगर्भेति हिरण्यम्) ॐ हिरण्यगर्भःसमवर्तताग्रेभूतस्यजातः पतिरेकआसीत् ॥ सदाधारपृथिवींद्यामुतेमांकस्मैदेवायहविषाविधेम ॥ १ ॥ (पूर्णादर्वीत्युपरिष्टात्पूर्णपात्रम्) ॐ पूर्णादर्विपरापतसुपूर्णापुनरापत ॥ वस्नेवव्विक्रीणावहाइषमूर्जर्ठशतक्रतो ॥१॥ (याःफलिनीरिति श्रीफलम्) ॐ याःफलिनीर्याऽअफलाअपुष्पायाश्चपुष्पिणीः ॥ बृहस्पतिप्रसूतास्तानो मुंचंत्वर्ठहसः ॥१॥ (सुजातोज्योतिषेति वस्त्रेणावेष्टनम्) ॐ सुजातोज्योतिषासहशर्म्मंवरूथमासदत्स्वः ॥ वासो अग्नेविश्वरूपर्ठसंव्ययस्वव्विभावसो ॥ १ ॥ (असंख्यातेति संपूज्यो रुद्रो रुद्रघटांभसि) ॐ असंख्याताःसहस्राणियेरुद्राअधिभूम्याम् ॥ तेषार्ठसहस्रयोजनेवधन्वानितन्मसि ॥ १ ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः रुद्र इहागच्छेह तिष्ठ ॥ (प्रजापतेरग्रभागे शनिमंडलके शुभे ॥ पूज्यो विष्णुः स्वसूक्तेन षोडशर्चेन तत्र वै ॥ १ ॥ (विष्णुसूक्तस्तु षोडशकंडिकात्मकः ॐसहस्रशीर्षापुरुषः सह-

---

आदिकी आवश्यकता नहीं है । केवल उनपर "असंख्यता०" से रुद्रका स्थापन करना आवश्यक है । इसके पीछे ग्रहमंडल

साक्षः सहस्रपात्॥सभूमिꣳसर्वतस्पृत्वात्यतिष्ठद्दशांगुलम् इत्यादिः ॥ १६ ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः विष्णो इहागच्छेह तिष्ठ ॥ ७३ ॥ (वास्तोष्पतेति मंत्रेण वस्तुं वै राहुमंडले (॥ ॐ वास्तोष्पतेप्रतिजानीह्यस्मान्स्वावेशोअनमीवोभवानः ॥ यत्त्वेमहेप्रतितन्नोजुषस्वशन्नोअस्तुद्विपदेशंचुतुष्पदे॥ १ ॥ अमीवहाव्वास्तोष्पतेव्विश्वरूपाण्याविशन्॥ सखासुशेवएधिनः॥२॥ॐभूर्भुवः स्वः वास्तोष्पते इहागच्छेह तिष्ठ ॥ (गणानांत्वेति वायव्यां गणेशं केतुमंडले) ॐ गणानांत्वेति० ॥ १ ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः गणेश इहागच्छेह तिष्ठ ॥ (ग्रहाग्नेय्यां सोमदले रुद्राण्या अग्रभागतः ॥ नमोऽस्तु सर्पेभ्य इति क्षेत्रपालं प्रपूजयेत् ॥) ॐ नमोस्तुसर्पेभ्योयेकेच पृथिवीमनु॥ येअंतरिक्षेयेदिवितेभ्यः सर्पेभ्योनमः ॥१॥ ॐ भूर्भुवः स्वः क्षेत्रपाल इहागच्छेह तिष्ठ ॥ (रुद्राकुंभाग्रतः पूज्या चामुण्डा जातवेदसे ।)ॐ जातवेदसेसुनवामसोममरातीयतोनिदहातिवेदः ॥ सनः परिषदतिदुर्गाणिविश्वानावेवर्सिधुंदुरितात्यग्निः ॥ १ ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः चामुंडे इहागच्छेह तिष्ठ ॥ (ग्रहाद्दक्षिणदिग्भौम-

---

पर "सहस्रशीर्षा०" आदि १६ ऋचाओंसे विष्णुका स्थापन करे ॥ ७३ ॥ फिर "वास्तोष्पते० से वास्तोष्पतिका "गणानान्त्वा०" से गणेशका नमोस्तुसर्पेभ्यो०" से क्षेत्रपालका " जातवेदसे० से रुद्रकलशके आगे चामुण्डाका

सदने षण्मुखादधः ॥ योवः शिवेति गौर्यादिमातरश्चैव पूजयेत् ॥) ॐ योवः शिवतमोरसस्तस्यभाजयतेहनः॥ उशतीरिवमातरः ॥ १ ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः गौर्यादितर इहागच्छध्वमत्र तिष्ठध्वम् ॥७४॥ अथ वेदस्थापनम् (सूर्याच्चपूर्वदिग्भागेअग्निमीलेऋचाननः) ॐअग्निमीले पुरोहितंयज्ञस्यदेवमृत्विजम् ॥ होतारंरत्नधातमम्॥१॥ ॐ भूर्भुवः स्वः ऋग्वेद इहागच्छेह तिष्ठ ॥ (इषेत्वेति यजुर्वेदं सूर्याद्दक्षिणतो न्यसेत्।) ॐ इषेत्वोर्जेत्वावा- यवस्थोपायस्थदेवोवः सविताप्रार्पयतुश्रेष्ठतमायकर्मणऽ आप्यायध्वमघ्न्याऽइंद्रायभागं प्रजावतीरनमीवाअयक्ष्मा मावस्तेनऽईशतमाघशर्ठंसो ध्रुवाऽअस्मिन् गोपतौ स्यातबह्वीर्यजमानस्यपशून्पाहि ॥ २ ॥ ॐ भूर्भुवःस्वः यजुर्वेद इहागच्छेह तिष्ठ (सूर्याच्च पश्चिमे साम अग्न आयाहिमंत्रतः) ॐ अग्नआयाहिवीतये गृणानोहव्य- दातये ॥ निहोतासत्सिबर्हिषि ॥ ३ ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः सामवेद इहागच्छेह तिष्ठ ॥ (रवेरुत्तरदिग्भागे शन्नोदे- वीत्यथर्वणम्) ॐ शंनोदेवीरभिष्टयआपोभवंतुपीतये॥

और " योवः शिव० " से ग्रहमंडलमें गौर्यादि मातृकाओंका स्थापन करे ॥ १४१ ॥ ७४ ॥ फिर " अग्निमीले० "से ऋग्वेदका " इषेत्वोर्जेत्वा० " से यजुर्वेदका "अग्नआया०", से सामवेदका और " शन्नोदेवी० " से अथर्वण वेदका स्था-

शंय्योरभिस्रवंतुनः ॥ ४ ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः अथर्वण इहागच्छेह तिष्ठ ॥ ७८ ॥ अथ दिक्पालस्थापनम् ॥ (इंद्रादितःक्रमाद्दिक्षु इन्द्रादीनष्ट पूजयेत् । इन्द्रो वह्नि पितृपतिर्नैर्ऋतो वरुणो मरुत् ॥ कुबेर ईशः पतयः पूर्वादीनां दिशां क्रमात् ॥ अंतरिक्षं पूर्वभागे धरा पूज्या तु पश्चिमे ॥ इंद्रं त्रातारमंत्रेण) ॐ त्रातारमिंद्रमवितीरमिंद्रर्ठ० हवेहवेसुहवर्ठ०शूरमिंद्रम् ॥ ह्वयामिशक्रम्पुरुहूतमिंद्रर्ठ० स्वस्तिनोमघवाधात्विंद्रः ॥ १ ॥ (एह्येहि सर्वामर सिद्धसाद्ध्यैरभिष्टुतो वज्रधरामरेश ॥ संवीज्यमानोऽप्सरसां गणेन रक्षाध्वरं भो भगवन्नमस्ते ॥ १ ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः इंद्र इहागच्छेह तिष्ठ ॥ (त्वंनोअग्ने हुताशनम्) ॐ त्वंनोऽअग्नेतवदेवपायुभिर्मघोनोरक्षतन्वश्च वंद्य ॥ त्रातातोककस्यतनयेगवामस्यनिमेषर्ठ०रक्षमाणस्तवव्रते ॥२॥ (एह्येहि सर्वामररुद्रसंघैर्मुनिप्रवीरैरभितोऽभिजुष्ट ॥ तेजोवता लोकबलेन सार्द्धं रक्षाध्वरं नो भगवन्नमस्ते ॥ २ ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः अग्ने इहागच्छेह तिष्ठ (यमं सुगन्नुपंथेति) ॐ सुगन्नुपंथांप्रदिशन्नएहिज्योतिष्मद्धेह्यजरन्नआयुः ॥ अपैतुमृत्यु-

---

पन करे ॥ ७५ ॥ अन्तरिक्षमें पूर्वादि दिशाओंके क्रमसे त्रातारमिंद्र० ” से इन्द्रका १ “ त्वन्नोअग्ने० ” अग्निका २ ‘ सुगन्नुपन्था० ” से यमका ३ “ असुन्वं” से निर्ऋ

स्मृतंमआगाद्वैवस्वतोनोअभयंकृणोतु ॥ ३ ॥ (एह्येहि वैवस्वत धर्मराज सर्वामरैरर्चितं धर्ममूर्ते ॥ शुभाशुभानां फलभावनस्त्वं शिवाय नः पाहि मखं नमस्ते ॥ ३ ॥) ॐ भूर्भुवः स्वः यम इहागच्छेह तिष्ठ ॥ (असुन्वंतेति नैर्ऋतिम्) ॐ असुन्वंतमयजमानमिच्छस्तेनस्येत्याम-न्विहितस्करस्य ॥ अन्यमस्मदिच्छसातइत्यानमोदेवि निर्ऋतेतुभ्यमस्तु ॥ ४ ॥ (एह्येहि रक्षोगणनायकस्त्वं विशालवेतालपिसाचसंघैः॥ममाध्वरं पाहि शुभादिनाथ लोकेश्वरस्त्वं प्रणमामि नित्यम् ॥ ४ ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः निर्ऋते इहागच्छेह तिष्ठ ॥ (तत्त्वायामिजला-ध्यक्षं) ॐ तत्त्वायामिब्रह्मणाव्वंदमानस्तदाशास्तेयज-मानो हविर्भिः ॥ अहेडमानोवरुणेहवोध्युरुशर्ठंसमानऽ-आयुः प्रमोपीः ॥ ५ ॥ (एह्येहि यादोगणवारिधीनां गणेन मेघेन सहाप्सरोभिः ॥ विद्याधरेंद्रामरगीयमानः पाहि त्वमस्मान्भगवन्नमस्ते ॥ ५ ॥) ॐ भूर्भुवः स्वः वरुण इहागच्छेह तिष्ठ ॥ (वायुमानोनियुद्भिः) ॐ आनोनियुद्भिः शतिनीभिरध्वरठंसहस्रिणीभिरुपयाहि यज्ञम्॥ वायोअस्मिन्त्सवनेमादयस्वयूयंपातस्वस्तिभिः सदानः ॥६॥ (एह्येहि यज्ञे मम रक्षणाय मृगाधिरूढः सह सिद्धसंघैः ॥ प्राणाधिपो हव्यभुजः सहाय गृहाण

तिका ४ " तत्त्वायामि० " से वरुणका ५ " आनोनि-युद्भि० " से वायुका ६ " वयर्ठ. सोमव्रते " से कुबेरका ७

पूजां भगवन्नमस्ते ॥ ६ ॥) ॐ भूर्भुवः स्वः वायो इहागच्छेह तिष्ठ ॥ (वयंसोमेतिधनदम्) ॐ वयꣳ सोमव्रतेतवमनस्तनूषुबिभ्रतः ॥ प्रजावंतःसचेमहि ॥७॥ (एह्येहि यक्षेश्वर यज्ञरक्षां विधस्त्व नक्षत्रगणेन सार्द्धम्॥ सर्वौषधीभिः पितृभिः सहैव गृहाण पूजां भगवन्नमस्ते ॥ ७ ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः धनद इहागच्छेह तिष्ठ ॥ (तमीशानेति शंकरम्) ॐ तमीशानं जगतस्तस्थुषस्पतिं धियञ्जिन्वमवसेहूमहेव्वयम्॥पूषानोयथाव्वेदसामसद्वृधे रक्षितापायुरदब्धः स्वस्तये ॥ ८ ॥ (एह्येहि विश्वेश्वर नस्त्रिशूलकपालखट्वांगवरेण सार्द्धम् ॥ लोकेश भूतेश्वर यज्ञसिद्ध्यै गृहाण पूजां भगवन्नमस्ते ॥ ८ ॥) ॐ भूर्भुवः स्वः शंकर इहागच्छेह तिष्ठ ॥ (अस्मेरुद्रेत्यंतरिक्षम्) ॐ अस्मेरुद्रामेहनापर्वतासोवृत्रहत्ये भरहूतौ सजोषाः । यः शꣳसतेस्तुवतेधायिवज्रइंद्रज्येष्ठाअस्मां अवंतुदेवाः ॥ ९ ॥ (एह्येहि विश्वाधिपते मुनींद्रलोकेन सार्द्धं पितृदेवताभिः ॥ सर्वस्य धाता त्वमनंतकीर्तौ रक्षाध्वरं नः सततं शिवाय ॥ ९ ॥) ॐ भूर्भुवः स्वः ब्रह्मन्निहागच्छेह तिष्ठ ॥ (स्योनापृथिविनो धरां)

"तमीशानं" से शंकरका ८ "अस्मेरुद्रा०" से अन्तरिक्षका ९ और "स्योनापृथिवि०" से अनन्तका १० स्था-

ॐस्योनापृथिविनोभवानृक्षरानिवेशनी ॥ यच्छानःशर्म सप्रथाः ॥ १० ॥ (एह्येहि पातालधरानगेंद्रनागांगना-किन्नरगीयमानः ॥ रक्षोरगेंद्रामरलोकसार्द्धमनंतरक्षाध्वर मस्मदीयम् ॥ १० ॥) ॐ भूर्भुवः स्वः धराधिपते अनंत इहागच्छेह तिष्ठ ॥ ७६ ॥ अथ चतुः षष्टियोगि-नीनामावाहनम् ॥ अग्नेय्यां योगिनीं न्यसेदित्युक्तेः अग्नावेकपुंजके वा चतुःषष्टिदलात्मके भिन्नमंडले स्था-पयेत् ॥ ॐ आवाहयाम्यहं देवीं योगिनीं परमेश्वरीम् ॥ योगाभ्यासेन संतुष्टां परध्यानसमन्विताम् ॥ १ ॥ दिव्य ज्वालातिसंकाशा दिव्यज्वालातिलोचना ॥ मूर्तिमती अमूर्ता च उग्रा चैवोग्ररूपिणी ॥ २ ॥ यज्ञं कुर्वंतु निर्विघ्नं श्रेयो यच्छंतु मातरः ॥ ७७ ॥ दिव्ययोगा महा-योगा सिद्धियोगा गणेश्वरी ॥ ३ ॥ प्रेताक्षी डाकिनी

पन करे ॥ १५४ ॥ ७६ ॥ स्मरण रहे कि वास्तुशान्ति आदि कामोंमें योगियोंकी भी पूजा की जाती है अतः यहां उनके स्थापनकी रीति भी बतलाई गई है । योगिनी चौसठ होती हैं । उनकी स्थापना आग्नेयमें या तो एकही पुंज पर करे या चौसठ कोठोंका एक अलग मंडल बनाकर उसमें उनका स्थापन करे । स्थापन करते समय " आवाहया-म्यहं०" आदिसे उनका ध्यान करे ॥ ७ ॥ फिर दिव्ययोगा १ महायोगा २ सिद्धियोगा ३ गणेश्वरी ४ प्रेताक्षी ५

काली कालरात्रिर्निशाचरी ॥ हुंकारी सिद्धिवैताली खर्परी भूतयामिनी ॥ ४ ॥ ऊर्ध्वकेशी विरूपाक्षी शुष्कांगी मांसभोजिनी ॥ फेत्कारी वीरभद्राक्षी धूम्राक्षी कलहप्रिया ॥ ५ ॥ रक्ता च घोररक्ताक्षी विरूपाक्षी भयंकरी ॥ चौरिका मारिका चंडी वाराही मुंडधारिणी ॥६॥ भैरवी चक्रिणी क्रोधा दुर्मुखी प्रेतवाहिनी ॥ कंटकी दीर्घलंबोष्ठी मालिनी मंत्रयोगिनी ॥ ७॥ कालाग्निमोहिनी चक्री कंकाली भुवनेश्वरी ॥ कुंडलाक्षी लुही लक्ष्मी यमदूती करालिनी ॥ ८ ॥ कौशिकी भक्षणी यक्षी कौमारी यंत्रवाहिनी ॥ विशाला कामुकी व्याघ्री

डाकिनी ६ काली ७ कालरात्रि ८ निशाचरी९ हुंकारी १० सिद्धिवैताली ११ खर्परी १२ भूतयामिनी १३ ऊर्ध्वकेशी १४ विरूपाक्षी १५ शुष्कांगी १६ मांसभोजिनी १७ फेत्कारी १८ वीरभद्राक्षी १९ धूम्राक्षी कलहप्रिया २१ रक्ता २२ घोररक्ताक्षी २३ विरूपाक्षी २४ भयंकरी २५ चौरिका २६ मारिका २७ चंडी २८ वाराही २९ मुंडधारिणी ३० भैरवी ३१ चक्रणी ३२ क्रोधा ३३ दुर्मुखी ३४ प्रेतवाहिनी ३५ कंटकी ३६ दीर्घलंबोष्ठी ३७ मालिनी ३८ मंत्रयोगिनी ३९ कालाग्नी ४० मोहिनी ४१ चक्री ४२ कंकाली ४३ भुवनेश्वरी ४४ कुंडलाक्षी ४५ लुही ४६ लक्ष्मी ४७ यमदूती ४८ करालिनी ४९ कौशिकी ५० भक्षणी ५१ यक्षी ५२ कौमारी ५३ यंत्रवाहिनी ५४ विशाला ५५

यक्षिणी प्रेतभूषणी ॥९॥ धूर्जटा विकटा घोरा कपाला चैव लांगली॥चतुःषष्टिःसमाख्याता योगिन्यो हि वर-प्रदाः ॥ १० ॥ त्रैलोक्ये पूजिता नित्यं देवमानवः योगिभिः ॥ ॐभूर्भुवः स्वः योगिन्यः इहागच्छतेह तिष्ठत ॥ ७ ॥ (मध्ये तु पंच भूतानि विश्वकर्माणमेव च) ॐ भूतायत्वा नारातयेस्वरभिविख्येषंदृर्ठंहन्तां दुर्याः पृथिव्यासुर्व्वंतरिक्षमन्वेमि पृथिव्यास्त्वानाभौ सादयाम्यदित्याउपस्थेऽग्नेहव्यर्ठंरक्ष ॥ १ ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः पंचभूतानि इहागच्छतेह तिष्ठत ॐ विश्वकर्मन् हविषावर्द्धनेनत्रातारमिंद्रमकृणोरवध्यम् ॥ तस्मैविशः समनमंतपूर्वीरयमुग्रोविहव्योयथासत् ॥ १ ॥ ॐभूर्भुव-स्वः विश्वकर्मन्निहागच्छेह तिष्ठ ॥ ततस्तेषां प्रतिष्ठां कुर्यात् ॥ ७९ ॥ अक्षतानादाय ॐ तदस्तुमित्रावरुणा

कामुका ५६ व्याघ्री ५७ यक्षिणी ५८ प्रेतभूषणी ५९ धूर्जटा ६० विकटा ६१ घोरा ६२ कपाला ६३ और लांगली ६४ इन चौसठ नामोंसे प्रत्येकका पृथक् पृथक् अथवा 'दिव्ययोगादिचतुषष्टियोगिनीभ्यो नमः' से एकही बार स्थापन करे ॥ ७८ ॥ फिर बीचमें "भूतायत्वा०" से इसी पर पंचभूतोंका और "विश्वकर्मन्०" से विश्वकर्माका स्थापन करे । सइ प्रकार इन सबका स्थापन करे ॥७९॥ दोनों हाथोंकी अंजलीमें पुष्पाक्षत लेकर "तदस्तुमित्रा०"

तदग्नेशंय्योरस्मभ्यमिदमस्तुशस्तम् ॥ अशीमहिगाधमु-
तप्रतिष्ठान्नमोदिवेबृहतेसादनाय ॥ १ ॥ ॐ मनोजूति-
र्जुषतामाज्यस्यबृहस्पतिर्यज्ञमिमं तनोत्वरिष्टं यज्ञꣳस-
मिमंदधातु ॥ विश्वेदेवासऽइहमादयंतामों ३ प्रतिष्ठ ॥२॥
मनोजूतिर्जुषतामाज्यस्येतिमनसावाइदꣳसर्वंमाप्तन्तन्म
नसैवेतत्सर्वंमाप्नोतिबृहस्पतिर्यज्ञमिमंतनोत्वरिष्टंयज्ञꣳ
समिमंदधात्वितियद्विवृढंतत्संदधाति विश्वेदेवासऽइह-
मादयंतामितिसर्ववैविश्वेदेवाःसर्वेणैवैतत्संदधातिसयंदि
कामयेद्ब्रूयात्प्रतिष्ठेति ॥ ३ ॥ एषवै प्रतिष्ठानाम यज्ञो
यत्रैतेनयज्ञेनयजंते । सर्वमेवप्रतिष्ठितंभवति ॥ ४ ॥
आदित्यादिनवग्रहाः स्थापितदेवता रुद्रकलशसहिताः
सुप्रतिष्ठिता वरदा भवंतु ॥ इत्यक्षतान् विकीर्य ॥ ८० ॥
यजमानः पूजां कुर्यात् ॥ तत्र ॐ अद्येत्यादि मासे
पक्षे तिथौ वासरे अमुकगोत्रोऽमुकशर्मा (वर्मा गुप्तो
वाऽहं सकलशुभफलप्राप्तिकामः आदित्यादिनवग्रहाणां
स्थापितदेवतानां च लघुपूजनं करिष्ये ॥ सूर्यादि

" मनोजूति० " मनोजूतिर्जुषता० " " एषवै० " यह
मंत्र पढके ' आदित्यादिनवग्रहाः स्थापितदेवताः रुद्रकलश-
सहिताःसुप्रतिष्ठता वरदा भवंतु' कहकर वेदीपर अक्षत बखेरदे
८०॥ और फिर यजमान उनका यथोक्त रीतिसे पूजन
करे । इसके पीछे ' अद्यपूर्वोच्चरित० ' से जल छोड़ दे ॥

नवग्रहेभ्यः स्थापितदेवताभ्यो नमः ॥ आसनं पाद्यं अर्घ्यं आचमनं स्नानं वस्त्रम् उपवीतं गंधम् । ॐ गंधद्वारांदुराधर्षांनित्यपुष्टां करीषिणीम् ॥ ईश्वरींसर्व-भूतानांतामिहोपह्वयेश्रियम् ॥ अक्षतान्—ॐ अक्षन्नमी-मतदंह्यवप्रियाअधूषत ॥ अस्तोपतस्वभानवोविप्रा नविष्ठयामतीयोजान्विन्द्रतेहरी ॥९॥ पुष्पाणि—नाना-विधानि दिव्यानि ऋतुकालोद्भवानि च ॥ मयार्पितानि पुष्पाणि पूजार्थं प्रतिगृह्यताम् ॥१०॥ धूपम्--ॐधूरसि धूर्वधूर्वंतंधूर्वंतंयोस्मान्धूर्वतितंधूर्वयंवयंधूर्वामः॥ देवा नामसिवह्नितमर्ठंसस्नितमं पप्रितमंजुष्टतमंदेवहूतमम् ॥ ११ ॥ दीपम्--ॐ अग्निज्योंतिरग्निः स्वाहासूर्यो ज्योतिर्ज्योतिःसूर्यः स्वाहा॥अग्निर्वर्चोज्योतिर्वर्चःस्वाहा सूर्य्योवर्चोज्योतिर्वर्चः स्वाहा ज्योतिः सूर्य्यःसूर्योज्यो-तिः स्वाहा ॥१२॥ नैवेद्यम्-- अन्नं चतुर्विधं स्वादु रसैः षड्भिः समन्वितम् ॥ भक्ष्य भोज्यसमायुक्तं गृह्यतांमम भक्तितः ॥१३॥ ताम्बूलम्--नागवल्लीदलं दिव्यं पूगी कर्पूरसंयुतम् ॥ वक्त्रसौरभकृत्स्वादु तांबूलं प्रतिगृह्य-ताम् ॥१॥ फलम्--ॐ याः फलिनीर्या अफलाअपुष्पा याश्चपुष्पिणीः ॥ बृहस्पतिप्रसूतास्तानोमुंचंत्वर्ठंहसः ॥१४॥ दक्षिणाम्--ॐ हिरण्यगर्भः समवर्त्तताग्रेभूतस्य जातः पतिरेक आसीत् ॥ सदाधारपृथिवींद्यामुतेमांक-स्मैदेवायहविषाविधेम ॥१५॥ नमस्कारः—ग्रहा राज्यं

प्रयच्छंति ग्रहा राज्यं हरंति च ॥ ग्रहैस्तु व्यापितं सर्वं त्रैलोक्यं सचराचरम् ॥१६॥ अद्य पूर्वोच्चरितविशेषण-विशिष्टायां पुण्यतिथौ नवग्रहाणां स्थापितदेवतानांच कृतस्य लघुपूजनविधेर्यंन्न्यूनमतिरिक्तं तत्सर्वं भवतां ब्राह्मणानां वचनात् श्रीगणेशांबिकयोःप्रसादाच्च परिपूर्ण मस्तु ॥ इति ग्रहस्थापनपूजने ॥ ८१ ॥ अथ व्रतो-द्यापनादिकार्यविशेषे सर्वतोभद्रमंडलं निर्माय तद्देवता आवाह्य संपूज्य च तन्मध्ये हेमरजतताम्रमृन्मयान्य-तमं कुम्भं पंचरत्नाद्युपेतं स्थापयेत् ॥ तद्यथा--भूरसीति भूमिप्रार्थना ॥ महीद्यौरिति धान्याधारं कृत्वा आजिघ्रेति कलशं वरुणस्योत्तमिति जलं याऽओ षधीरिति सर्वौषधिप्रक्षेपः धान्यमसीतिधान्यम् अश्वत्थे वेति पंचपल्लवान् याः फलिनीरिति फलं हिरण्यगर्भेति हिरण्यं सुजातोज्योतिषेति वस्त्रेणावेष्टनम् । तदुपरि पूर्णादर्वीति तंडुलोपेतं ताम्रपात्रं निधाय तस्मिन् प्रधानप्रतिमां स्थापयेत् ॥ ८२ ॥ स्वर्णादिना प्रधान-

---

॥८१॥"प्रधान पूजन" व्रतोद्यापनादि कार्य विशेषमें सर्वतोभ-द्रादि मण्डल बनाकर उस कार्यके देवताका आवाहन और स्थापन तथा पूजन करे । यथा—मंडलके बीचमें सोना चांदी, तांबा या मिट्टीका "भूरसि०" आदिविधिसे कलशस्थापन करके उसपर प्रधानकी प्रतिमा स्थापन करे ॥ ८२ ॥ प्रधा-

प्रतिमां निर्मायाग्न्युत्तारणं कृत्वा तद्यथामूर्तौ घृतं कृत्वा वस्त्रेणावेष्ट्य कुशेन स्पृष्ट्वा मंत्रान् पठेत् ॥ ॐ समुद्रस्य त्वावकयाग्नेपरिव्ययामसि। पावकोअस्मभ्यर्ठंशिवोभव ॥१॥ हिमस्यत्वाजरायुणाग्ने परिव्ययामसि। पावकोऽअस्मभ्यर्ठंशिवोभव॥२॥उपज्मन्नुपवेतसेवतरंनदीष्वा। अग्नेपित्तमपामसिमंडूकिताभिरागहि ॥ सेमन्नोयज्ञम्पावकवर्णर्ठंशिवंकृधि ॥ ३ ॥ अपामिदंन्ययनर्ठंसमुद्रस्य निवेशनम् ॥ अन्यांस्तेअस्मत्तपंतुहेतयः पावकोअस्मभ्यर्ठंशिवो भव ॥४॥ अग्नेपावकरोचिषामंद्रयादेवजिह्वया ॥ आदेवान्वक्षियक्षिच ॥ ५ ॥ सनः पावकदीदिवोऽग्नेदेवा ँ इहावह उपयज्ञहर्ठंविश्वनः ॥ ६ ॥ पावकयायश्चितयंत्याकृपाक्षामन्नुरुचउषसोनभानुना॥ तूर्वन्नयामन्नेतशस्यनूरणऽआयोघृणेनततृषाणोअजरः७। नमस्तेहरसेशोचिषे नमस्तेअस्त्वर्चिषे ॥ अन्यांस्तेअ, स्मत्तपंतुहेतयः पावको अस्मभ्यर्ठंशिवोभव॥८॥८३॥

नकी मूर्ति प्रायः सुवर्णादिकी होती है अतः पहले उस मूर्तिको घीसे भिगोकर वस्त्रमें लपेटके दर्भसे स्पर्श करे और "समुद्रस्यत्वा०" "हिमस्यत्वा०" उपज्मन्नुप० " "अपामिदं०" " अग्नेपावक० " " सनः पावकदी० " " पावकया० " "नमस्तेहरसेशो०" इन मंत्रोंसे उसका अग्न्युत्तारण संस्कार

ततो जलेन प्रक्षाल्य प्राणप्रतिष्ठां कुर्यात् ॥ प्रतिमायाः कपोलौ दक्षिणपाणिना स्पृष्ट्वा मंत्रा पठनीयाः॥अस्यश्री प्राणप्रतिष्ठामंत्रस्य विष्णुरुद्रौ ऋषी ऋग्युजुः सामानि च्छन्दांसिप्राणाख्या देवता ॐ आं बीजं ह्रीं शक्तिः क्रों कीलकं यंरंलंवंशंषंसंहंहंसः एताः शक्तय मूर्ति-प्रतिष्ठापने विनियोगः ॐ आंह्रींक्रोंयंरंलंवंशंषंहंहंसः देवस्य प्राणा इह प्राणाः॥पुनरुच्चार्य देवस्य सर्वेंद्रियाणि इह ॥ पुनरुच्चार्य देवस्य त्वक्पाणिपादपायूस्थादीनि इह पुनरुच्चार्य देवस्य वाङ्मनश्चक्षुः श्रोत्रघ्राणानि इहा-गत्य सुखेन चिरंतिष्ठंतु स्वाहा ॥१॥ प्राणप्रतिष्ठांविधाय ध्यायेत्॥ एवं प्राणप्रतिष्ठां कृत्वा षोडशोपचारैः पूजयेत ॥८४॥आवाहनम् आगच्छागच्छदेवेश तेजोराशे जग-त्पते ॥ क्रियमाण मया पूजां गृहाण सुरसत्तम ॥ १ ॥

करे ॥ ८३ ॥ फिर उसको जलसे धोकर प्राणप्रतिष्ठा करे। प्राणप्रतिष्ठाके निमित्त "अस्य श्री प्राणप्रतिष्ठामंत्रस्य०" यह विनियोग करके एक पुष्पसे उस मूर्तिके कपोल गालोंको स्पर्श करके ॐ ह्रीं आंह्रींक्रोंयंरंलंवंशंषंसंहं हंसः देवस्य प्राणा इह" मंत्र उच्चारण करके उसमें प्राणकी संभावना करे! इसी प्रकारॐ आं ह्रीं आदि बोलकर देवस्य प्राणा की जगह 'सर्वें-द्रियाणि' 'त्वक्पाणिपादपायूपस्थादीनि' 'वाङ्मनश्च :श्रो-त्रघ्राणाः' इन सबकी संभावना करके प्राणप्रतिष्ठा करे ॥ ८४ ॥ फिर 'आगच्छागच्छ०' से उस देवताका आवाहन

आसनम्—नानारत्नसमायुक्तं कार्त्तस्वरविभूषितम् ॥ आसनं देवदेवेश प्रीत्यर्थं प्रतिगृह्यताम् ॥ २ ॥ पाद्यम्—नमो नमस्ते देवेश नमस्ते पुरुषोत्तम ॥ नमस्ते सर्वरूपाय पाद्यं नः प्रतिगृह्यताम् ॥३॥ अर्घ्यम्—नमस्तेदेवदेवेश नमस्ते धरणीधर ॥ नमस्ते कमलाकांत अर्घ्यं नः प्रतिगृह्यताम् ॥४॥ आचमनम्—कर्पूरवासितं तोयं मंदाकिन्याः समाहृतम् ॥ आचम्यतां जगन्नाथ मया दत्तं हि भक्तितः ॥ ५ ॥ स्नानम्—ॐ व्वरुणस्योत्तंभनमसि व्वरुणस्यस्कंभसर्जनीस्थोवरुणस्यऋतसदन्यसि व्वरुणस्यऋतसदनमसिवरुणस्य ऋतसदनमासीद ॥ ६ ॥ इति जलस्नानम् ॥ ॐ पयः पृथिव्यां पयओषधीषुपयो दिव्यंतरिक्षेपयोधाः॥ पयस्वतीः प्रदिशः संतुमह्यम्॥७॥ इति पयःस्नानम् ॥ ॐ दधिक्राव्णो अकारिषंजिष्णोरश्वस्यव्वाजिनः ॥ सुरभिनोमुखाकरत्प्रणआयूꣳषितारिषत् ॥ ८ ॥ इति दधिस्नानम् ॥ ॐ घृतं घृतपावानः पिबतव्वसांवसापावानःपिबतांतरिक्षस्यहविरसिस्वाहा॥ दिशः प्रदिश आदिशोव्विदिशऽउद्दिशोदिग्भ्यः स्वाहा ॥ ९ ॥ इति घृतस्नानम् ॥ ॐ मधुव्वाताऋतायते

'नानारत्न'से आसन 'नमो नमस्ते०' से पाद्य' नमस्ते देव'से अर्घ्य'कर्पूर० 'से आचमन'वरुणस्योत्तं० ' से जलस्नान'पयः पृथिव्यां० ' दुग्धस्नान ' दधिक्राव्णो० 'से दधिस्नान 'घृतं

मधुक्षरतिसिन्धवः ॥ माध्वीर्नः संत्वोषधीः ॥ १ ॥ मधु नक्तमुतोषसोमधुमत्पार्थिवꣳरजः ॥ मधुद्यौरस्तुनः पिता ॥ २ ॥ मधुमान्नोव्वनस्पतिर्म्मधुमांअस्तुसूर्यः ॥ माध्वी- र्गावोभवंतुनः ॥ १० ॥ इति मधुस्नानम् ॥ ॐ अपाꣳ रसमुद्वयसꣳसूर्येसंतꣳसमाहितम् ॥ अपाꣳरसस्ययो रसस्तंवोगृह्णाम्युत्तममुपयामगृहीतोऽसींद्रायत्वाजुष्टंगृह्णा म्येपतेयोनिरिन्द्रायत्वाजुष्टतमम्॥ १॥इतिशर्करास्नानम्॥ ॐवसोःपवित्रमसिशतधारंवसोःपवित्रमसिसहस्रधारम् देवस्त्वसवितापुनातु व्वसोः पवित्रेण शतधारेण सुप्वाकामधुक्षः ॥ १ ॥ ॥ इति जलस्नानम् ॥ ॐ पंचनद्य- सरस्वतीमपियंतिसस्रोतसः ॥ सरस्वतीतुपंचधासोदेशे- ऽभवत्सरित् ॥२॥ गंगाचयमुना चैवगोदावरीसरस्वती॥ तापी पयोष्णी रेवा च ताभ्यः स्नानार्थमाहृतम् ॥ तोय- मेतत्सुखस्पर्शं स्नानाय प्रतिगृह्यताम् ॥ १ ॥ इति गंगा- जलस्नानम्॥८५॥सर्वभूषाधिकेदेव लोकलज्जानिवारणे॥ मयोपपादिते तुभ्यं वाससी प्रतिगृह्यताम् ॥ १ ॥ इति वस्त्रम् ॥ दामोदर नमस्तेऽस्तु त्राहि मां भवसागरात् ॥

घृत० ' से घृतस्नान ' मधुव्वाता ' से सहद स्नान ' आपाꣳ रस० से शर्करास्नान 'वसोः पवित्र० से शुद्धस्नान 'पंच- नद्यः० ' ' गंगाचयमुना० ' से गंगाजलस्नान ॥८५॥ सर्व- भूषा ' से वस्त्र दामोदर० ' से यज्ञोपवीत ' अꣳशुना० "

ब्रह्मसूत्रं सोत्तरीयं गृहाण पुरुषोत्तम ॥ १ ॥ इति यज्ञो-
पवीतम्॥ॐ अᳬशुनातेअᳬशुःपृच्यतांपरुषापरुः॥गंध
स्तेसोममवतुमदायरसोअच्युतः ॥१॥ श्रीखंड चंदनं
दिव्यं गंधाढ्यं सुमनोहरम् ॥ विलेपनं सुरश्रेष्ठ प्रीत्यर्थं
प्रतिगृह्यताम् ॥१॥ इति गंधम् ॥ ॐ अक्षन्नमीमदंत
ह्यवप्रियाअधूषत ॥ अस्तोषतस्वभानवोविप्रानाविष्ठ-
यामती ॥ योजान्विन्द्रते हरी ॥१॥ इत्यक्षतान् ॥ ॐ
कांडात्कांडात्प्ररोहंतीपरुषःपरुषस्परि ॥एवानोदूर्वेप्रतनु
सहस्रेणशतेन च ॥ १ ॥ इति दूर्वाम् ॥ नानाविधानि
दिव्यानिऋतुकालोद्भवानि च ॥ मयाऽर्पितानिपुष्पाणि
पूजार्थं प्रतिगृह्यताम् ॥१॥ इति पुष्पम् ॥ ॐ धूरसि
धूर्वधूर्वंतंधूर्वतंयोस्मान्धूर्वंतितंधूर्वयंवयंधूर्वामः॥देवाना
मसिवह्नितमᳬसस्नितमंपप्रितमंजुष्टतमं देवहूतमम् ॥
वनस्पतिरसोत्पन्नो गंधाढ्यो धूप उत्तमः ॥ आघ्रेयः
सर्वदेवानां धूपोयंप्रतिगृह्यताम् ॥ १ ॥ इति धूपम् ॥
ॐ अग्निर्ज्योतिरग्निः स्वाहासूर्य्योज्योतिर्ज्योतिः
सूर्य्यस्वाहा।अग्निर्वर्च्चोज्योतिर्वर्च्चस्वाहासूर्योवर्चोज्यो
तिर्वर्चःस्वाहाज्योतिः सूर्य्यः सूर्य्योज्योतिः स्वाहा॥१॥
आज्यं च वर्तिसंयुक्तं वह्निनायोजितं मया । दीपंगृहाण

'श्रीखण्ड०' से गंध 'अक्षन्न०' से अक्षत 'कांडात्०' से दूर्वा 'नानाविध०' से पुष्प 'धूरसि०' 'अग्निर्ज्योति०'

देवेश त्रैलोक्यतिमिरापहम् ॥ २ ॥ इति दीपम् ॥ अन्नपतेन्नस्यनोदेह्यनमीवस्यशुष्मिणः प्रप्रदातारंतारिषऽऊर्ज्जंन्नोधेहिपदेचतुष्पदे ॥ १ ॥ अन्नं चतुर्विधं स्वादुरसैः षड्भिः समन्वितम् ॥ भक्ष्यभोज्यसमायुक्तं नैवेद्यं प्रतिगृह्यताम् ॥२॥ इति नैवेद्यम् ॥ आचमनं च॥ ॐ याः फलिनीर्य्याअफलाऽअपुष्पायाश्चपुष्पिणीः ॥ बृहस्पतिप्रसूतास्तानोमुंचंत्वꣳहसः ॥ १ ॥ इदं फलं मया देव स्थापितं पुरतस्तव ॥ तेन मे सकलावाप्तिर्भवेज्जन्मनि जन्मनि ॥२॥ इति फलम् ॥ पूगीफलं महद्दिव्यं नागवल्लीदलैर्युतम् ॥ कर्पूरादिसमायुक्तं तांबूलं प्रतिगृह्यताम् ॥ १ ॥ इति तांबूलम् ॥ ॐ हिरण्यगर्भः समवर्त्तताग्रेभूतस्यजातः पतिरेकऽआसीत् ॥सदाधारपृथिवींद्यामुतेमांकस्मैदेवायहविषाविधेम॥१॥हिरण्यगर्भगर्भस्थं हेम बीजं विभावसोः ॥ अनंतपुण्यफलदमतः शांतिं प्रयच्छ मे ॥१॥ इति दक्षिणाम् ॥ चंद्रादित्यौ चधरणी विद्युदग्निस्तथैव च ॥ त्वमेव सर्वज्योतींषि आर्तिक्यं प्रतिगृह्यताम् ॥ इति नीराजनम् ॥ नमस्ते पुंडरीकाक्ष नमस्ते ह्यमरप्रिय ॥ नमस्ते कमलाकांत

से दीपक 'अन्नपते० ' से नैवेद्य तथा आचमन 'याः फलिनी० से फल 'पूगीफलं० 'से तांबूल ' हिरण्यगर्भ ' से दक्षिणा 'चन्द्रादित्यौ० , से नीराजन ' नमस्ते पुंडरीकाक्ष०' से पुष्पां-

वासुदेव नमोऽस्तु ते ॥ १ ॥ इति पुष्पांजलिं दद्यात् ॥ यानि कानि च पापानि ब्रह्महत्यासमानि च ॥ तानि तानि विनश्यंतु प्रदक्षिणपदेपदे ॥१॥ इति प्रदक्षिणा ॥ नमः सर्वहितार्थाय जगदाधारहेतवे ॥ साष्टांगोऽयं प्रणामस्तु प्रयत्नेन मया कृतः ॥ १ ॥ इति नमस्कारः ॥ ततो यजमानस्य तिलकं कृत्वा कंकणं बध्नीयात् ॥इति प्रधानपूजनविधिः ॥८६॥ ततः सिद्धे चरौ ज्वलत्तृणादि चर्वाज्ययोरुभयोरुपरि भ्रामयित्वा वह्नौ तत्प्रक्षेपः । ततः स्रुवप्रतपनं त्रिः ॥ ततः संमार्जनकुशानामग्रैरंतरतो मूलैर्बाह्यत स्रुवं संमृज्य प्रणीतोदकेनाभ्युक्ष्य पुनस्त्रिः प्रतप्य दक्षिणतः कुशोपरि निदध्यात् ॥ ततः आज्यमग्नितश्चरोः पूर्वेणानीयाग्रे धृत्वा आज्यपश्चिमेन चरुमानीयाज्यस्योत्तरतो निदध्यात् ॥ ततः पवित्राभ्यामाज्ये

जलि और ' यानिकानि० ' से प्रदक्षिणा तथा 'नमः सर्व०' से नमस्कार करे । इसके पीछे यजमानके तिलक करके राखी बाँधे ॥ ८६॥ " होमका आरंभ " उपरोक्त पूजापाठ आदि हुऐ पीछे होमकी वेदीके पास अपने अपने आसनोंपर बैठकर चरु तयार होगये पीछे आचार्य एक दर्भाको जलाकर चरु और घी पर उसको घुमाके अग्निमें पटक दे । फिर स्रुवको तीन बार तपावे ओर संमार्जनकुशाओंसे उसके बाहर भीतर आगे पीछे सब जगहसे साफ करके प्रणीताके जलसे धोकर

प्रोक्षणीवदुत्पवनम् अवेक्ष्य सत्यपद्रव्ये निरसनम् ॥ ततःपूर्ववत्प्रोक्षण्युत्पवनंततउत्थायोपयमनकुशानादाय प्रजापतिं मनसा ध्यात्वा तूष्णीं घृताक्ताः समिधस्तिस्रः अग्नौ क्षिपेत् ॥ समिधोऽभ्यादायः स्वाहा ॥८७॥ अथो पविश्य सपवित्रप्रोक्षणीजलेनसहविष्कमग्निं प्रणीताब्रह्म सहितं प्रदक्षिणक्रमेण पर्युक्ष्य पवित्रे प्रणीतापात्रे धृत्वा प्रोक्षणीपात्रं स्वस्थाने निदध्यात् ॥ ब्रह्मणाऽन्वारब्धः पातितदक्षिणजानुः स्रुवेणाज्याहुतीर्जुहुयात् ॥ ८८ ॥ तत्र आहुतिचतुष्टये प्रत्याहुत्यनंतरं स्रुवावस्थित-

---

फिर तपावे । और अपने दहिने ओर दर्भापर रखदे । फिर तपाया हुआ घी और पकायी हुई खीर अपने पास रखकर घीको स्वच्छ करे । और पहलेकी भांति प्रोक्षणीका उत्पवन करके उठकर उपयमन कुशाओंको बाँये हाथमें लेवे और ब्रह्माका मनमें ध्यान करके वे पहले वाली तीनों समिधायें चुप चाप घी में भिगोकर 'स्वाहा' कहकर अग्निमें पटक दे ॥ ८७ ॥ फिर बैठकर पवित्र सहित प्रोक्षणीजलको हवि, अग्नि प्रणीता और ब्रह्मा इन सबके चारों ओर प्रद-क्षिणा क्रमसे डालकर पवित्रेको प्रणीतापत्रमें रखदे और प्रोक्षणी को अपनी जगह रख दे। फिर ब्रह्माका अन्वारब्ध (छुए हुए) करके दहनी जंघा दबाकर स्रुवमें घीकी आहुति होमे ॥ ८८ ॥ आगेकी चारों आहुतियोंमें प्रत्येकके होमे

हुतशेषघृतस्य प्रोक्षणीपात्रे प्रक्षेपः ॥ आघारावाज्य-भागौ तु जुहुयात्पंचवारुणम् । समिदाज्यचरोर्होम-तिलहोमक्रमेण च ॥ १ ॥ सर्वत्र होमाहुतौ प्रणवं पूर्वमु-च्चार्य स्वाहाकारांतो होमः कार्यः ॥ यथादैवतं चतुर्थ्यंतं न ममेति त्यागं च कुर्यात् ॥ ८९॥ ततः समिद्धतमेऽग्नौ ॐ प्रजापतये स्वाहा इदं प्रजापतये न मम ॥ १ ॥ इति मनसा । ॐ इंद्राय स्वाहा इदमिन्द्राय न मम ॥ २ ॥ इत्याघारौ । ॐ अग्नये स्वाहा इदमग्नये० ॥ १ ॥ ॐ सोमाय स्वाहा इदं सोमाय न मम ॥ २ ॥ इत्याज्यभागौ । ततोऽनन्वारब्धः स्थालीपाकेन होमः॥ ॐ प्रजापतये स्वाहा इदं प्रजापतये न मम इति मनसा ॥ ततोऽन्वारब्धो जुहुयात् ॥ तत्त-दाहुत्यनंतरं स्रुवावस्थितहुतशेषस्य प्रोक्षण्यां प्रक्षेपः ॥

पीछे शेष घीको प्रोक्षणी पात्रमें पटके। स्मरण रहे कि समिधा घी खीर और तिल यह चारों पदार्थ चार पात्रोंमे पृथक् पृथक् रखकर प्रत्येक आहुतिमें इन चारोंपदार्थोंकी आहुति दीजिये और आहुति देते समय ॐ आदिमें और स्वाहा अंतमें उच्चा-रण किया जाय। होमके सब द्रव्य शुद्ध और घृताक्त (घीमें भीगे हुए) हों तथा प्रत्येक आहुतिमें शुद्ध उच्चारण रहे ॥८९॥ इस प्रकार सावधान होकर समिधा लगी हुई प्रज्वलित अग्निमें 'ॐ प्रजापतये स्वाहा' आदि आहुति देकर 'शान्तिके वरद-

शांतिके वरदनाम्ने वैश्वानराय इदमावाहनं इदमत्र चंदनं पुष्पं च॥ततः ॐवरुणस्योत्तंभनमसिव्वरुणस्यस्कंभसर्ज्जनीस्थो वरुणस्यऽऋतसदन्यसिव्वरुणस्यऋतसदनमसिवरुणस्यऋतसदनमासीद ॥ १ ॥ ॐ वरुणाय स्वाहा इदं वरुणाय न मम ॥९०॥ अथ ग्रहाणां समिधः॥ अर्कः पलाश खदिर अपामार्गोऽथ पिप्पलः ॥ उदुंबरः शमी दूर्वा कुशाश्च समिधः क्रमात् ॥१॥ अलाभे तु प्रकर्तव्याः सर्वाः पालाशवृक्षजाः ॥ प्रतिग्रहं च जुहुयाच्छतमष्टोत्तरं तथा ॥ २ ॥ अष्टाविंशतिरष्टौ वा यजेत्पंचामृतप्लुताः॥ प्रथमं प्रत्येकमेकैकाज्याहुतिं हुत्वा पश्चात्प्रत्येकमष्टोत्तरशतसंख्याकाभिरष्टाविंशतिभिरष्टभिर्वातिलधान्याज्याहुतिभिः समिद्भिर्जुहुयात्॥९१॥ अथहोममंत्राः ॥ आकृ-

---

नाम्ने० से अग्निका आवाहनादि पूजन करके ' ॐ वरुणस्योत्तं० ' से फिर एक आहुति दे ॥९०॥ इसके पीछे आक पलाश खैर अपामार्ग (औधा कांटा) पीपल गूलर खेजडा दूर्वा और दर्भ यह सूर्यादि नौ ग्रहोंकी समिधें इकट्ठी करके उनको पंचामृतमें डुबोकर रखदे। और फिर सूर्य आदि नौ ग्रहोंके " आकृष्णे० " आदि मंत्रोंसे प्रत्येक ग्रहकी तिल घी खीर और समिध इनकी एकसौ आठ या अट्टाईस अथवा आठ आठ आहुति दे, स्मरण रहे कि आहुति देनेवाले ब्राह्मण मंत्रोच्चारण करते रहें ॥ ९१ ॥ ' होम ' " आकृष्णे० " से

ष्णेति मंत्रस्य हिरण्यस्तूपांगिरस ऋषिः सविता देवता त्रिष्टुप्छंन्दः आदित्यप्रीतये तिलधान्याज्यार्कसमिद्धोमे विनियोगः॥ ॐ आकृष्णेनरजसावर्त्तमानोनिवेशयन्न- मृतंमर्त्यंच ॥ हिरण्ययेनसवितारथेनादेवोयातिभुवना निपश्यन् ॥ आदित्याय स्वाहा इदमादित्याय० ॥ १ ॥ इमं देवा इति मंत्रस्य वरुणऋषिः सोमो देवता सोमप्रीतयेतिलधान्याज्यपालाशसमिद्धोमेविनियोगः। ॐ इमन्देवाऽअसपत्नर्ठंसुवध्वम्महतेक्षत्राय महते ज्यैष्ठ्यायमहतेजानराज्यायेन्द्रस्येन्द्रियाय इममसुष्य पुत्रममुष्यैपुत्रमस्यै व्विशऽएषवोऽमीराजा सोमोऽस्माकं ब्राह्मणानाᳬराजा ॥ सोमाय स्वाहा इदं सोमाय० ॥२॥ अग्निम्मूर्द्धेति मंत्रस्य विरूपाक्षऋषिः अंगारको देवता- गायत्रीच्छंदःभौमप्रीतयेतिलधान्याज्यखदिरसमिद्धोमे विनियोगः ॥ ॐअग्निर्म्मूर्द्धादिवः ककुत्पतिः पृथिव्या ऽअयम् ॥ अपाᳬरेताᳬसिजिन्वति॥भौमाय स्वाहा इदं भौमाय० ॥ ३ ॥ उद्बुध्यस्वेति मंत्रस्य परमेष्ठी ऋषिःबुधो देवता त्रिष्टुप्छंदःबुधप्रीतयेतिलधान्याज्या पामार्गसमिद्धोमे विनियोगः ॐ उद्बुध्यस्वाग्ने प्रति- जागृहित्वमिष्टापूर्तेसर्ठंसृजेथामयंच॥ अस्मिन्त्सधस्थेऽ

सूर्याय स्वाहा कहकर आहुति दे। "इमंदेवा०" से सोमाय स्वाहा "अग्निर्मूर्द्धा०" से भौमाय "उद्बुध्य०" से

अध्युत्तरस्मिन्विश्वेदेवायजमानश्चसीदत॥ ॐ बुधाय स्वाहा इदं बुधाय० ॥४॥ बृहस्पते इति मंत्रस्य गृत्समदऋषिः बृहस्पतिर्देवता त्रिष्टुप्छंदः बृहस्पतिप्रीतये तिलधान्याज्यपिप्पलसमिद्धोमे विनियोगः॥ ॐबृहस्पते अतियदर्य्योऽअर्हाद्युमद्विभातिक्रतुमज्जनेषु॥यद्दीदयच्छवसऋतप्रजाततदस्मासुद्रविणंधेहिचत्रम् ॥ॐबृहस्पतये स्वाहा इदं बृहस्पतयेनमम।५।अन्नात्परिस्रुतइतिमंत्रस्य अश्विसरस्वतींद्रा- ऋषयः शुक्रो देवता त्रिजगतीच्छन्दः शुक्रप्रीतये तिलधान्याज्योदुंबरसमिद्धोमे विनियोगः॥ ॐ अन्नात्परिस्रुतोरसंब्रह्मणाव्यपिबत्क्षत्रं पयः ॥ सोमंप्रजापतिर्ऋतेनसत्यमिंद्रियंविपानंठशुक्रमंधसऽइंद्रस्येन्द्रियमिदंपयोमृतं मधु ॥ शुक्राय स्वाहा इदं शुक्राय० ॥ ६ ॥ शन्नोदेवीति मंत्रस्य दध्यङ्आथवर्णऋषिः शनिर्देवता गायत्रीछंदः शनिप्रीतये तिलधान्याज्यशमीसमिद्धोमे विनियोगः ॐ शन्नोदेवीरभिष्टय आपोभवंतुपीतये ॥ शंय्योरभिस्रवंतुनः ॥ शनैश्चराय स्वाहा इदं शनैश्चराय॥७॥कयानश्चित्रेति मंत्रस्यवामदेवऋषिः राहुर्देवता गायत्रीछंदःराहुप्रीतये तिलधान्याज्यदूर्वासमिद्धोमे विनियोगः॥ॐकयानश्चित्रआभुवदूती

बुधाय " बृहस्पतये० " से बृहस्पतये० "अन्नात्" से शुक्राय ' शन्नोदेवी० " शनैश्चराय " कयान० " से राहवे और,

सदावृधः सखा ॥ कयाशचिष्ठयावृता ॥ राहवे स्वाहा इदं राहवे० ॥ केतुंकृण्वन्निति मंत्रस्य मधुश्छंदाऋषिः केतुर्देवता गायत्रीछंदः केतुप्रीतये तिलधान्याज्याकुशसमिद्धोमे विनियोगः ॥ ॐ केतुंकृण्वन्नकेतवेपेशोमर्य्या अपेशसे ॥ समुषद्भिरजायथाः ॥ केतवे स्वाहा इदं केतवे० ॥ ९ ॥ ९२ ॥ अन्याश्च तिलाहुतयः ॥ ॐ अग्निंदूतंपुरोदधेहव्यवाहमुपब्रुवे ॥ देवाँ२॥ आसादयादिहस्वाहा ॥१॥ ॐ अप्स्वग्नेसधिष्टवसौषधीरनुध्यसे ॥ गर्भेसञ्जायसेपुनः स्वाहा ॥२॥ स्योनापृथिविनोभवा, नृक्षरानिवेशनी ॥ यच्छानः शर्मसप्रथाः स्वाहा ॥३॥ इदंविष्णुर्विचक्रमे त्रेधानिदधेपदम् ॥ समूढमस्यपाᳬंसुरेस्वाहा॥४॥ महाँ२॥ इंद्रोवज्रहस्तःषोडशीशर्मयच्छतु॥ हंतुपाप्मानंयोऽस्मान्द्वेष्टिस्वाहा ॥५॥ शुक्रज्योतिश्च चित्रज्योतिश्चसत्यज्ज्योतिश्चज्योतिष्मांश्च शुक्रश्चऋतपाश्चात्यᳬंहाःस्वाहा॥ ६ ॥ प्रजापतेनत्वदेवतान्न्यन्यो व्विश्वारूपाणिपरिताबभूव ॥ यत्कामास्तेजुहुमस्तन्नोऽअस्तुवयᳬंस्यामपतयोरयीणांस्वाहा ॥७॥ आयंगौः

" केतुंकृण्वं० " से केतवे स्वाहा कहकर आहुति दे ॥ ९२ ॥

उपरोक्त आहुतियां सब पदार्थोंकी अलग अलग थी किंतु अब आगे जितनी आहुतियां दी जायँगी वे तिलोंकीही होंगी । और वे सब मूलमें स्पष्ट हैं अतः मूल पाठ पढते हुए

पृश्निरक्रमीदसन्मातरंपुरः ॥ पितरंचप्रयन्त्वः स्वाहा ॥ ८ ॥ ब्रह्मजज्ञानंप्रथमंपुरस्ताद्विसीमतः सुरुचो व्वेन आवः ॥ सबुध्न्याउपमाअस्यविष्ठाः सतश्चयोनिमसतश्चव्विवः स्वाहा ॥ ९ ॥ अथाधिदेवानां मंत्रा ॥ ॐ त्र्यंबकंयजामहेसुगंधिंपुष्टिवर्द्धनम् ॥ उर्वारुकमिवबंधनान्मृत्योर्मुक्षीयमाऽमृतात् ॥ १ ॥ ॐ रुद्राय स्वाहा इदं रुद्राय ॥ ॐ श्रीश्च ते लक्ष्मीश्चपत्न्यावहोरात्रे पार्श्वेनक्षत्राणिरूपमश्विनौव्यात्तम् । इष्णन्निषाणामुम्मइषाणसर्वंलोकम्मऽइषाण ॥ २ ॥ ॐ श्रियै स्वाहा इदं० यदक्रंदः प्रथमं जायमानऽउद्यन्त्समुद्रादुतवापुरीषात् ॥ श्येनस्यपक्षाहरिणस्यबाहूउपस्तुत्यं महिजातंतेअर्वन् ॥ ३ ॥ ॐ स्कंदाय स्वाहा इदं० ॥ इदंविष्णुर्विचक्रमेत्रेधानिदधेपदम् ॥ समूढमस्यपाꣳसुरे ॥ ४ ॥ विष्णवे स्वाहा इदं० ॥ ब्रह्मजज्ञानंप्रथमं पुरस्ताद्विसीमतः सुरुचोवेनऽआवः ॥ सबुध्न्याउपमाऽअस्यव्विष्ठाः सतश्चयोनिमसतश्चव्विवः ॥ ५ ॥ ॐ ब्रह्मणे स्वाहा इदं० ॥ त्रातारमिंद्रमवितारमिंद्रꣳहवेहवे सुहवꣳशूरमिंद्रम् ॥ ह्वयामिशक्रंपुरुहूतमिन्द्रꣳस्वस्ति नोमघवाधात्विंद्रः ॥६॥ ॐ इंद्राय स्वाहा इदं०॥यमायत्वामखायत्वासूर्यस्यत्वातपसेदेवस्त्वासविता मध्वानक्तु पृथिव्याः सꣳस्पृशस्पाहि ॥ आर्चिरसिशोचिरसि

तपोऽसि ॥ ७ ॥ ॐ यमाय स्वाहा इदं० ॥ कार्षिरसि
समुद्रस्यत्वाऽक्षित्याऽउन्नयामि ॥ समापो अद्भिरग्मत-
समोषधीभिरोषधीः ॥ ८ ॥ ॐ कालाय स्वाहा इदं
कालाय० ॥ ॐ चित्रावसोस्वास्तितेपारमशीय ॥ ९ ॥
ॐ चित्रगुप्ताय स्वाहा इदं० ॥ अथ प्रत्यधिदेवानां मंत्राः ॥
सनः पितेवसूनवेऽग्नेसूपायनो भव ॥ सचस्वानः स्वस्तये
॥ १ ॥ ॐ अग्नये स्वाहा इदं० ॥ अपोअद्यान्वचारि-
षर्ठ॑रसेनसमसृक्ष्महि ॥ पयस्वानग्न आगमंतम्मास॑ꣳसृज
वर्चसाप्रजयाचधनेनच ॥ १ ॥ ॐ अद्भ्यः स्वाहा
इदं० ॥ चिदसितयादेवतयांगिरस्वद्ध्रुवासीद ॥ परि-
चिदसितयादेवतयांगिरस्वद् ध्रुवासीद ॥ १ ॥ ॐ
पृथिव्यै स्वाहा इदं० ॥ इदंविष्णुर्विचक्रमेत्रेधा
निदधेपदम् ॥ समूढमस्यपाꣳसुरे ॥ १ ॥ ॐ विष्णवे
स्वाहा इदं० ॥ इंद्रऽआसान्नेताबृहस्पतिर्दक्षिणायज्ञः पुर
एतुसोमः ॥ देवसेनानाम भिभंजतीनां जयंतीनांमरुतो
यंत्वग्रम् ॥ १ ॥ ॐ इंद्राय स्वाहा इदं० ॥ इंद्रंदैवीर्विशो
मरुतोनुवर्त्मानोऽभवन्यथेंद्रं दैवीर्विशोमरुतोनुवर्त्मानो
भवन् ॥ एवमिमंयजमानंदैवीश्चविशोमानुषीश्चानुवर्त्मानो
भवंतु ॥ १ ॥ ॐ इंद्राण्यै स्वाहा इदं० ॥ प्रजापतेनत्वदेता-
न्यन्योविश्वारूपाणिपरिताबभूव ॥ यत्कामास्तेजुहुम-
स्तन्नोऽअस्तु वयꣳ स्याम पतयो रयीणाम् ॥ १ ॥

५

ॐ प्रजापतये स्वा इदं०॥ नमोस्तु सर्पेभ्योयेकेचपृथिवी-
मनु ॥येऽअंतरिक्षे येदिवि तेभ्यः सर्पेभ्योनमः ॥ १ ॥
ॐ सर्पेभ्यः स्वाहा इदं० ॥ ब्रह्मजज्ञानंप्रथमंपुरस्ताद्वि-
सीमतः सुरुचोव्वेनआवः॥सबुध्न्याउपमा अस्यव्विष्ठाः
सतश्चयोनिमसतश्चव्विवः ॥ १ ॥ ॐ ब्रह्मणे स्वाहा
इदं० ॥ अथ गणपंचकमंत्राः ॥ ॐ गणानांत्वा० ॥१॥
ॐ गणपतये स्वाहा इदं० ॥ जातवेदसेसुनवामसोममरा-
तीयतोनिदहातिवेदः ॥ सनः परिषदतिदुर्गाणिविश्वाना
वेवसिंधुंदुरितात्यग्निः ॥१॥ ॐ दुर्गायै स्वाहा इदं० ॥
वायोयेतसहस्त्रिणोरथासस्तेभिरागहि॥ नियुत्वान्त्सोम
पीतये ॥ १ ॥ ॐ वायवे स्वाहा इदं० ॥ घृतंघृतपा-
वानःपिबत व्वसांवसापावानः पिबतांतरिक्षस्यहविरसि
स्वाहा॥ दिशःप्रदिशऽआदिशोव्विदिशउद्दिशोदिग्भ्यः
स्वाहा ॥ १ ॥ ॐ अन्तरिक्षाय स्वाहा इदं० ॥
यावां कशामधुमत्यश्विनासूनृतावती ॥ तयायज्ञंमि-
मिक्षतम् ॥ १ ॥ ॐ अश्विभ्यां स्वाहा इदं० ॥ अथ
नक्षत्राणां मंत्राः ॥ अश्विनातेजसाचक्षुःप्राणेन सर-
स्वतीव्वीर्य्यंम् ॥ व्वाचेंद्रोबलेनेंद्रायदधुरिंद्रियम् ॥ १॥
ॐ दस्राय स्वाहा इदं ॥ यमायत्वामखायत्वा सूर्यस्य
त्वातपसेदेवस्त्वासवितामध्वानक्तुपृथिव्याः सꣳस्पृश
स्पाहि ॥ अर्चिरसि शोचिरसि तपोसि ॥१॥ ॐ भरण्यै

स्वाहा इदं० ॥ अयमग्निःसहस्रिणोवाजस्यशतिन-
स्पतिः ॥ मूर्द्धाकवीरयीणाम् ॥ १ ॥ ॐ कृत्तिकाभ्यः
स्वाहा इदं ब्रह्मजज्ञानंप्रथमंपुरस्ताद्विसीमतः सुरु-
चोव्वेनऽआवः ॥ सबुध्न्याउपमाअस्यव्विष्ठाःसतश्चयो-
निमसतश्चविवः ॥१॥ ॐ रोहिण्यै स्वाहा इदं रो० ॥
सोमोधेनुछंसोमोअर्वंतमाशुछंसोमोव्वीरंकर्मण्यं ददा-
ति ॥ सादन्यंव्विदथ्यठंसभेयंपितृश्रवणंयोददाशदस्मै
॥ १ ॥ ॐ मृगशिरसे स्वाहा इदं० ॐ नमस्तेरुद्र
मन्यवउतोतइषवेनमः ॥ बाहुभ्यामुततेनमः ॥ ॐ
आर्द्रायै स्वाहा इदं० ॥ अदितिर्द्यौरदितिरंतरिक्षमदि-
तिर्मातासपितासपुत्रः॥विश्वेदेवाअदितिःपंचजनाअदि-
तिर्जातमदितिर्जनित्वम् ॥१॥ ॐ आदितेयाय स्वाहा
इदं ॥ वाचस्पतयेपवस्वव्वाजिव्वृषाव्वृष्णोअठंशुभ्यां
गभस्तिपूतः॥देवोदेवेभ्य पवस्व येषां भागोसि ॥८॥ॐ
पुष्यायस्वाहाइदं॥ॐनमोस्तुसर्पेभ्योयेकेचपृथिवीमनु॥
येअंतरिक्षेयेदिवितेभ्यःसर्पेभ्योनमः ॥१॥ॐ आश्लेषायै
स्वाहा इदं० ॥ पितृभ्यःस्वधायिभ्यः स्वधानमःपिता-
महेभ्यःस्वधायिभ्यःस्वधानमः प्रपितामहेभ्यः स्वधा-
यिभ्यः स्वधानमःअक्षन्पितरोऽमीमदंतपितरोऽतीतृपंत
पितरःपितरः शुन्धध्वम् ॥ १ ॥ ॐ मघायै स्वाहा
इदं० ॥ भगप्रणेतर्भगसत्यराधोभगेमांधियमुदवाददन्नः॥

भगप्रणोजनयगोभिरश्वैर्भगप्रनृभिर्नृवंतः स्याम ॥ १ ॥
ॐपूर्वाफाल्गुन्यै स्वाहा इदं० ॥ दैव्यावध्वर्यू आगतꣳ
रथेनसूर्यत्वचा॥मध्वायज्ञꣳसमंजाथे ॥तम्प्रत्क्नथायंव्वे
नश्चित्रन्देवानाम् ॥ १ ॥ ॐ उत्तराफाल्गुन्यै स्वाहा
इदं० ॥ विभ्राड्बृहत्पिबतु सोम्यं मध्वायुर्दधद्यज्ञपता-
वविह्रुतम् ॥ व्वातजूतोयोअभिरक्षतित्मनाप्रजाः पुपोष
पुरुधाव्विराजति॥१॥ हस्ताय स्वाहा इदं०॥त्वष्टातुरी-
पोअद्भुतइंद्राग्नीपुष्टिवर्धना॥ द्विपदाछंदऽइंद्रियमुक्षागौ-
र्न्नव्वयोदधुः ॥ॐ॥ त्वष्ट्रे स्वाहा इदं०॥पीवोअन्नाꣳरयि-
वृधः सुमेधाः श्वेतः सिषक्तिनियुतामभिश्रीः ॥ तेवायवे
समनसोव्वितस्थुर्विश्वेन्नरः स्वपत्यानि चक्रुः ॥ १ ॥
ॐ वायव्याय स्वाहा इदं० इंद्राग्नी आगतꣳसुतंगी-
र्भिर्न्नभोव्वरेण्यम् ॥ अस्यपातंधियेषिता ॥ १ ॥ ॐ
विशाखायै स्वाहा इदं॥नमोमित्रस्यवरुणस्यचक्षसेमहो
देवायतदृतꣳसपर्यत ॥ दूरेदृशेदेवजातायकेतवेदिवस्पु-
त्रायसूर्यायशꣳसत ॥ १ ॥ ॐ अनुराधायै स्वाहा
इदं०॥सइषुहस्तैः सनिषंगिभिर्वशीसꣳस्रष्टासयुधइंद्रो-
गणेन॥ सꣳसृष्टजित्सोमपाबाहुशर्द्ध्युग्रधन्वाप्रतिहिता-
भिरस्ता॥१॥ ॐ ज्येष्ठायै स्वाहा इदं० ॥मातेवपुत्रंपृथि-
वीपुरीष्यमग्निꣳस्वेयोनावभारुखा॥ तांविश्वैर्देवैर्ऋतुभिः
संविदानःप्रजापतिर्विश्वकर्माविमुंचतु॥ॐमूलाय स्वाहा

इदं० ॥१॥अपाघमपकिल्बिषमपकृत्यामपोरपः अपा-
मार्गत्वमस्मदपदुःष्वप्न्यर्ठंसुव॥२॥ ॐपूर्वाषाढायैस्वाहा
इदं ॥ विश्वेऽअद्यमरुतोविश्वऽऊतीविश्वेभवंत्वग्नयः
समिद्धाः विश्वेनो देवाअवसागमंतुविश्वमस्तु द्रविणं
वाजोऽअस्मे ॥ १ ॥ ॐ उत्तराषाढायै स्वाहा इदं० ॥
तत्सवितुर्वरेण्यंभर्गोदेवस्यधीमहि॥ धियोयोनः प्रचोद
यात् ॥ १ ॥ ॐ अभिजिते स्वाहा इदं० ॥ विष्णु-
र्विं० ॥ १ ॥ ॐश्रवणाय स्वाहा इदं० ॥ वसोः पवि-
त्रमसिशतधारंवसोः पवित्रमसिसहस्रधारम्॥ देवस्त्वास
वितापुनातुव्वसोः पवित्रेणशतधारेण सुप्प्वाकामधुक्षः॥
॥ १ ॥ ॐ धनिष्ठायै स्वाहा इदं० ॥ वरुणस्योत्तंभन
मसि० ॥ १ ॥ ॐ शतभिषायै स्वाहा इदं ॥ उतनो-
हिर्बुध्न्यः शृणोत्वजएकपात्पृथिवीसमुद्रः॥ विश्वेदेवा
ऋतावृधोहुवानास्तुतामंत्राः कविशस्ताऽअवंतु ॥१॥
ॐ पूर्वाभाद्रपदायै स्वाहा इदं ॥ शिवोनामासिस्वधि-
तिस्तेपितानमस्तेअस्तुमामाहिर्ठंसीः ॥निवर्तयाम्यायु-
षेन्नाद्यायप्रजननायरायस्पोषायसुप्रजास्त्वायसुवीर्याय
॥ १ ॥ॐउत्तराभाद्रपदायै स्वाहा इदं० ॥ पूषन्तवव्रते
व्वयन्नरिष्येमकदाचन ॥ स्तोतारस्तइहस्मसि ॥ १ ॥
ॐरेवत्यै स्वाहा इदं०॥अथ योगानां मंत्रः॥ योगयोगे
तवस्तरंवाजेवाजेहवामहे ॥ सखायइंद्रमूतये ॥ १ ॥

ॐ योगेभ्यः स्वाहा इदं० ॥ अथ कारणानां मंत्रः ॥ भद्रं कर्णेभिः शृणुयामदेवाभद्रंपश्येमाक्षभिर्यजत्राः ॥ स्थिरै रंगैस्तुष्टुवाᳬंसस्तनूभिर्व्यशेमहिदेवहितंयदायुः ॥ १ ॥ ॐ करणेभ्यः स्वाहा इदं० ॥ ध्रुवासिध्रुवोयंजमानोस्मि-न्नायतनेप्रजयापशुभिर्भूयात् ॥ घृतेनद्यावापृथिवीपूर्ये-थामिंद्रस्यच्छदिरसिव्विश्वजनस्यछाया ॥ १ ॥ ॐ ध्रुवाय स्वाहा इदं० पंचनद्यः सरस्वतीमपियंतिसस्रो-तसः ॥ सरस्वतीतुपंचधासोदेशेभवत्सरित् ॥१॥ ॐ नदीभ्यः स्वाहा इदं० ॥ सप्तऋषयः प्रतिहिताः शरीरे सप्तरक्षंतिसदमप्रमादम् ॥ सप्तापःस्वपतोलोकमीयुस्तत्र जाग्रतोअस्वप्नजौसत्रसदौचदेवौ ॥ १ ॥ ॐ सप्तऋषि-भ्यः स्वाहाइदं० ॥ इमंमेव्वरुण श्रुधीहवमद्याचमृडय ॥ त्वमावस्युराचके ॥ १ ॥ ॐ सप्तसागरेभ्यः स्वाहा इदं० ॥ प्रपर्वतस्यवृषभस्यपृष्ठान्नावश्चरंतिस्वसिचऽ-इयानाः ॥ ताऽआववृत्रन्नधरागुदक्ताअहिर्बुध्न्यमनुरी-यमाणाः ॥ विष्णोर्विक्रमणमसिव्विष्णोर्विक्रांतमसि व्विष्णोः क्रांतमसि ॥१॥ ॐ पर्वतेभ्यः स्वाहा इदं० ॥ जवोयस्तेव्वाजिन्निहितो गुहायः श्येनेपरीत्तोऽअचरच्च व्वाते॥ तेननोव्वाजिन्वलवान्वलेनव्वाजजिच्चभवशमने चपारयिष्णुः ॥ १ ॥ ॐ रैवताय स्वाहा इदं० ॥ सुप र्णोसिगरुत्मांस्त्रिवृत्ते शिरोगायत्रंचक्षुर्बृहद्रथंतरेपक्षौस्तोम

आत्माछन्दाᳬस्यंगानियजूᳬषिनामसामतेतनूर्वामदेव्यं यज्ञायज्ञियंपुच्छंधिष्ण्याःशफाः॥सुपर्णोसिगरुत्मान्दिवं गच्छ स्वः पत ॥ १ ॥ ॐ गरुडाय स्वाहा इदं० ॥ असंख्याताः सहस्राणियेरुद्राऽअधिभूम्याम् ॥ तेषाᳬ सहस्रयोजनेवधन्वानितन्मसि ॥१॥ ॐ रुद्राय स्वाहा इदं० ॥ ॐ वास्तोष्पतेप्रतिजानीह्यस्मान्स्वावेशोअन-मीवो भवानः ॥ यत्त्वेमहेप्रतितन्नोजुषस्वशन्नोअस्तुद्वि-पदेशंचतुष्पदे ॥१॥ अमीवहाव्वास्तोष्पतेविश्वारूपा-ण्याविशन् ॥ सखासुशेवऽएधिनः ॥ २ ॥ ॐ वास्तवे स्वाहा इदं० गणानांत्वा० ॥ ॐ गणपतये स्वाहा इदं० ॥ नमोस्तुसर्पेभ्योयेकेचपृथिवीमनु ॥ येअंतरिक्षे येदिवितेभ्यः सर्पेभ्योनमः ॥१॥ ॐ क्षेत्रपालायस्वाहा इदं० ॥जातवेदसेसुनवामसोममरातीयतोनिदहतिवेदः॥ सनःपरिपदतिदुर्गाणिविश्वानावेवसिंधुंदुरितात्यग्निः॥१॥ ॐ चामुंडायै स्वाहा इदं० ॥ योवः शिवतमोरसस्तस्य भाजयतेहनः । उशतीरिवमातरः ॥ॐ गौर्यादिमातृभ्यः स्वाहा इदं ० ॐ अग्निमीलेपुरोहितंयज्ञस्यदेवमृत्वि-जम् ॥ होतारंरत्नधातमम् ॥१॥ ॐ ऋग्वेदाय स्वाहा इदं० ॥ इषेत्वोर्जेत्वाव्यायवस्थदेवोवः सवितामार्पयतु श्रेष्ठतमायकर्मणऽआप्यायध्वमघ्न्याऽइंद्राय भागंप्रजा-वतीरनमीवा अयक्ष्मा मावस्तेन ईशतमाघशᳬसोध्रुवा

अस्मिन्गोपतौस्यातबह्वीर्यजमानस्यपशून्पाहि ॥ १ ॥
ॐ यजुर्वेदाय स्वाहा इदं०॥अग्नआयाहिवीतयेगृणानो
हव्यदातये ॥ निहोतासत्सिबर्हिषि ॥ १ ॥ साम-
वेदाय स्वाहा इदं० ॥ शन्नोदेवीरभिष्टयऽआपोभवंतुपी-
तये । शंय्योरभिस्रवंतुनः ॥ १ ॥ अथर्ववेदाय
स्वाहा इदं ॥ त्रातारमिंद्रमवितारमिंद्रꣳहवेहवेसुहवꣳ
शूरमिंद्रम् ॥ ह्वयामिशक्रंपुरुहूतमिंद्रꣳस्वस्तिनोमघवा
धात्विंद्रः ॥१॥ ॐ इंद्राय स्वाहा इदं० ॥ त्वन्नोअग्ने
तवदेवपायुभिर्मघोनोरक्षतन्वश्चवंद्य ॥ त्रातातोकस्यत-
नयेगवामस्यनिमेषꣳरक्षमाणस्तवव्रते ॥ १ ॥ ॐ
अग्नये स्वाहा इदं० ॥ सुगंनुपंथांप्रदिशन्नऽएहिज्योति-
ष्मद्धेह्यजरन्न आयुः ॥ अपैतुमृत्युरमृतंमआगाद्वैवस्वतो
नोअभयंकृणोतु ॥ १ ॥ ॐ यमाय स्वाहा
इदं० ॥ असुन्वंतमयजमानमिच्छस्तेनस्येत्यामन्विहि
तस्करस्य ॥ अन्यमस्मदिच्छासातइत्यानमोदेविनिर्ऋते
तुभ्यमस्तु ॥ १ ॥ ॐ नैर्ऋत्याय स्वाहा इदं० ॥तत्त्वा-
यामिब्रह्मणा व्वंदमानस्तदाशास्तेयजमानो हविर्भिः ॥
अहेडमानोव्वरुणेहबोध्युरुशꣳसमान आयुः प्रमोषीः
॥ १ ॥ ॐ वरुणाय स्वाहा इदं० ॥ आनोनियुद्भिः
शतिनीभिरध्वरꣳसहस्रिणीभिरुपयाहियज्ञम्॥व्वायोऽ-
अस्मिन्त्सवनेमादयस्वयूयंपातस्वस्तिभिः सदानः॥१॥

ॐ वायवेस्वाहा इदं० ॥ व्वयर्ठ᳭ंसोमव्रतेतवमनस्तनूषु बिभ्रतः ॥ प्रजावंतः सचेमहि ॥१॥ ॐ धनदाय स्वाहा इदं० ॥ तमीशानंजगतस्तस्थुषस्पतिं धियं जिन्वमवसे हूमहे व्वयम् ॥ पूषानोयथाव्वेदसामसद्वृधेरक्षितापायु- रदब्धः स्वस्तये ॥ १ ॥ ॐ ईशानाय स्वाहा इदं० ॥ अस्मेरुद्रामेहनापर्वतासोवृत्रहत्ये भरहूतौसजोषाः ॥ यशः ठ᳭ंसतेस्तुवतेधायिवज्रऽइंद्रज्येष्ठाऽअस्मा ᳭ंअवंतु देवाः ॥ १ ॥ ॐ अंतरिक्षाय स्वाहा इदं० ॥ स्योना पृथिविनोभवानृक्षरानिवेशनी ॥ यच्छानः शर्मसप्रथा ॥१॥ ॐ धरायै स्वाहा इदं० ॥ ॐ चतुःषष्टियोगि- नीभ्यः स्वाहा इदं०॥अथवा प्रणवादिनमोंतचतुर्थ्यंतः नामभिर्वा होमः ॥ ॐ भूतायत्वानारातयेस्वरभिवि- ख्येषंदृर्ठ᳭ंहंतां दुर्याः ॥ पृथिव्यामुर्वंतरिक्षमन्वेमिपृथि- व्यास्त्वाना भौसादयाम्यदित्याउपस्थेग्नेहव्यर्ठ᳭ंरक्ष॥१॥ ॐ पंचभूतेभ्यः स्वाहा इदं०॥विश्वकर्मन्हविषाव्वर्द्धनेन त्रातारमिंद्रमकृणोरवध्यम्॥तस्मै विशः समनमंतपूर्वी रयमुग्रोव्विहव्योयथासत् ॥१॥ ॐ विश्वकर्मणे स्वाहा इदं ॥ ततो यथासंख्यं प्रधानमंत्रेण जुहुयात् ॥ ततो लक्ष्मी होमः ॥ तंडुलाज्यशर्करापंचामृतद्रव्येण ॥ ॐ

वे देदी जाँय। ध्यान रहे कि तिलहोमके पीछे 'लक्ष्मी होम' केवल खीरसे होता है। और खीरमें घी खाण्ड मिले रहते हैं।

श्रीश्चतेलक्ष्मीश्चपत्न्यावहोरात्रेपार्श्वेंनक्षत्राणिरूपमश्विनो
व्यात्तम् ॥ इष्णन्निषाणामुम्मइषाणसर्वंलोकम्मइषाण ॥
मनसः काममाकूतिंवाचः सत्यमशीमहि ॥ पशूनाꣳ
रूपमन्नस्यमयिश्रीःश्रयतांयशः स्वाहा ॥१॥ श्रीसूक्तेन
चरुहोमः ॥ ॐ हिरण्यवर्णांहरिणींसुवर्णरजतस्रजाम् ॥
चंद्रांहिरण्मयींलक्ष्मींजातवेदो ममावह स्वाहा ॥ १ ॥
तांमआवहजातवेदोलक्ष्मीमनपगामिनीम् ॥ यस्यांहिर-
ण्यंविंदेयंगामश्वंपुरुषानहम् ॥२॥ अश्वपूर्वांरथमध्यांह-
स्तिनादप्रबोधिनीम् ॥श्रियंदेवीमुपह्वयेश्रीर्मादेवीजुषताम
॥३॥ कांसोस्मितांहिरण्यप्राकारामार्द्रांज्वलंतींतृप्तांतर्प-
यंतीम् ॥ पद्मेस्थितांपद्मवर्णांतामिहोपह्वयेश्रियम् ॥४॥
चंद्रांप्रभासांयशसाज्वलंतींश्रियंलोकेदेवजुष्टामुदाराम् ॥
तांपद्मनेमिंशरणमहंप्रपद्येअलक्ष्मीर्मेनश्यतांत्वांवृणे॥५॥
आदित्यवर्णेतपसोधिजातोवनस्पतिस्तववृक्षोथबिल्वः॥
तस्यफलानितपसानुदंतुमायाऽन्तरायाश्चबाह्याअलक्ष्मीः
॥ ६ ॥ उपैतुमांदेवसख कीर्तिश्च मणिनासह ॥ प्रादुर्भू-
तोस्मिराष्ट्रेऽस्मिन्कीर्तिमृद्धिंददातु मे॥७॥क्षुत्पिपासा-
मलांज्येष्ठामलक्ष्मीनाशयाम्यहम् ॥ अभूतिमसमृद्धिंच
सर्वांनिर्णुदमेगृहात् ॥ ८ ॥ गंधद्वारांदुराधर्षांनित्यपुष्टां
करीषिणीम् ॥ईश्वरींसर्वभूतानांतामिहोपह्वयेश्रियम् ॥९॥
मनसः काममाकूतिंवाचः सत्यमशीमहि॥पशूनांरूपम-

न्नस्यमयिश्रीःश्रयतांयशः ॥१०॥ कर्दमेनप्रजाभूतामयि संभवकर्दम॥श्रियंवासयमेकुले मातरं पद्ममालिनीम् ॥ ॥११॥ आपः सृजंतु स्निग्धानि चिक्लीत वस मेगृहे ॥ निच देवीं मातरंश्रियंवासयमेकुले ॥१२॥आर्द्रांयष्क- रिणींयष्टिंपिंगलांपद्ममालिनीम्॥चन्द्रांहिरण्मयींलक्ष्मीं जातवेदोममावह ॥ १३ ॥ आर्द्रांपुष्करिणींपुष्टिंसुवर्णां हेममालिनीम् ॥ सूर्यांहिरण्यमयींलक्ष्मींजातवेदोममा- वह ॥ १४ ॥ तांमआवहजातवेदोलक्ष्मीमनपगामि- नीम्॥यस्यांहिरण्यंप्रभूतंगावोदास्योऽश्वान्विंदेयंपुरुषा नहम् ॥ १५ ॥ ९३ ॥ ततः सर्वेभ्योहविर्भ्यः स्विष्ट- कृद्धोमः ॥ ॐ अग्नये स्विष्टकृते स्वाहा इदमग्नये स्विष्टकृते न मम ॥ ततो नवाज्याहुतयः ॐ भूः स्वाहा इदमग्नये ॥ १ ॥ ॐ भुवः स्वाहा इदं वायवे ॥ ॥२॥ ॐ स्वः स्वाहा इदं सूर्याय ॥ ३ ॥ ॐ त्वन्नो अग्नेव्वरुणस्यव्विद्वान्देवस्यहेडोअवयासिसीष्ठाः॥यजि- ष्ठोव्वह्नितमःशोशुचानो विश्वाद्वेषाꣳसि प्रमुमुग्ध्यस्म त्स्वाहा ॥४॥ इदमग्नीवरुणाभ्याम्॥ ॐसत्वन्नोअग्ने-

---

खीर न बने तो मावा या मेवासे होम करे ॥ ९३ ॥ यह हुए पीछे बचे हुए तिलादिको इकट्ठे करके " अग्नये स्विष्ट- कृते स्वाहा " कहकर सबको अग्निमें डाल दे। और फिर " ॐ भूः स्वाहा " आदिसे नौ आहुति घीकी देकर होमको

ऽवमोभवोतीनेदिष्ठोअस्याउषसोव्युष्टौ॥ अवयक्ष्वनोव्वरुणर्ठंरराणोवीहिमृडीकर्ठंसुहवोनऽएधि स्वाहा ॥ ५ ॥ इदमग्नीवरुणाभ्याम् ॥ॐअयाश्चाग्नेस्यनभिशस्तिपाश्चसत्यमित्वमयाऽअसि ॥ अया नोयज्ञंवहास्ययानोधेहिभेषजर्ठंस्वाहा ॥ ६ ॥ इदमग्नयेऽयसे ॥ ॐ येतेशतं वरुणं ये सहस्रंयज्ञियाः पाशावितता महांतः ॥ तेभिर्नोऽअद्यसवितोतविष्णुर्विश्वेमुंचंतुमरुत-स्वर्काःस्वाहा ॥७॥ इदंवरुणायसवित्रेविष्णवेविश्वेभ्योमरुद्भ्यस्वर्केभ्यश्च॥ ॐउदुत्तमंवरुणपाशमस्मदवाधमंविमध्यमर्ठंश्रथाय ॥ अथावयमादित्यव्रतेतवानागसोऽअदितयेस्यामस्वाहा॥ ॥८॥ इदंवरुणाय॥ ॐ प्रजापतये स्वाहा इदं प्रजापतये ॥९॥ होमांते ग्रहपूजनं कर्त्तव्यम्॥९४॥ ततो दिक्पाल-पूजनं बलिदानं च । माषभक्तदधिशष्कुलीदीपसहितेन बलिना पूजयेत् ॥ अथ बलिदानमंत्राः॥ अहोइन्द्रगजेन्द्रस्थ वज्रहस्त प्रपूजित ॥ त्रातारमिंद्रमंत्रेण प्राचीं रक्षतु

समाप्त करके ग्रहोंका फिर पूजन करे ॥ ९४ ॥ इसके पीछे होमकी वेदीके चारों ओर चारों दिशा और चारों कोनोंमें तथा एक ऊपर और एक नीचे यों दश जगह दश आसन (पत्ते) बिछाकर उन सबपर एकके दीपक और उडद दही भात शीरो पुडी बडा यह सब सामग्री प्रत्येक पर रखके उनपर कुछ सिन्दूर डालदे । और " अहो इन्द्र० " आदि

दिक्पते ॥ १ ॥ ॐ त्रातारमिंद्रमवितारमिंद्रठंहवेहवे सुहवठंशूरमिंद्रम् ॥ ह्वयामिशक्रंपुरुहूतमिंद्रठंस्वस्तिनोमघवाधात्विंद्रः ॥ २ ॥ पूर्वे इंद्राय नमः इंद्रस्यानुचरेभ्यो नमः भो इंद्र दिशं रक्ष बलिं भक्ष यजमानस्याभ्युदयं कुरु ॥ जमानस्यायुःकर्त्ता शांतिकर्त्ता पुष्टिकर्त्ता तुष्टिकर्त्ता वरदो भव ॥१॥ अहो सप्तार्चिमेषस्थ हव्यवाहन पूजित ॥ त्वन्नोअग्नेतिमंत्रेण रक्षाग्नय्यां दिशांपते ॥१॥ ॐ त्वन्नोअग्नेव्वरुणस्यविद्वान् देवस्यहेडोअवयासिसीष्ठाः॥ यजिष्ठोवह्नितमःशोशुचा नोव्विश्वाद्वेषाठंसिप्रमुमुग्ध्यस्मत् ॥२॥ आग्नेय्यामग्नेये नमः अग्नेरनुचरेभ्यो नमः दिशं० ॥ २ ॥ अहो महिषमारूढदंडपाणे वरप्रदः ॥ पूज्यः सुगन्नुपंथेति दक्षिणादिक्प्रपालकः ॥ १ ॥ ॐ सुगन्नुपंथांप्रदिशन्नएहिज्योतिष्मद्धेह्यजरन्नआयुः ॥ अपैतुमृत्युरमृतंमआगाद्वैवस्वतोनोअभयंकृष्णोतुस्वाहा ॥ २ ॥ दक्षिणे यमाय नमः यमस्यानुचरेभ्यो नमः दिशं० ॥३॥ अहो नैर्ऋति-दिक्पाल नैर्ऋत्यां खड्गधारकः ॥ आगच्छ कौशिकारूढ असुन्वन्तेति पूजितः ॥१॥ ॐ असुन्वंतमयजमानमिच्छस्तेनस्येत्यामन्विहितस्करस्य ॥ अन्यमस्मदिच्छसातइत्यानमोदेविनिर्ऋतेतुभ्यमस्तु ॥२॥ नैर्ऋत्यां निर्ऋतये नमः निर्ऋतेरनुचरेभ्यो नमः दिशं रक्ष०॥४॥

अहो वरुण दिक्पाल वारुण्यां मकरे स्थितः ॥ अर्चितः पाशहस्तश्च तत्त्वायामीति मंत्रतः ॥१॥ ॐ तत्त्वाया-मिब्रह्मणावंदमानस्तदाशास्तेयजमानो हविर्भिः ॥ अहे-डमानोव्वरुणेहबोद्ध्युरुशर्ठ्ठसमानआयुः प्रमोषीः ॥२॥ पश्चिमे वरुणाय नमः वरुणस्यानुचरेभ्यो नमः दिशं रक्ष० ॥५॥ अहोवायव्यदिक्पाल मृगपृष्ठं समाश्रितः आनोनियुद्भिर्मंत्रेण वायव्यां रक्ष पूजितः ॥ १ ॥ आनोनियुद्भिः शतिनीभिरध्वरर्ठ्ठ सहस्रिणीभिरुपयाहि यज्ञम्व्वायोअस्मिन्त्सवनेमादयस्वयूयंपातस्वस्तिभिः सदानः ॥ २ ॥ वायव्यां वायवे नमः वायोरनुचरेभ्यो नमः दिशं० ॥ ६ ॥अहो नरविमानस्थ गदापाणे वरः प्रद ॥ उत्तरां हि दिशं रक्ष वयं सोमेति पूजितः ॥१॥ ॐ व्वयर्ठ्ठसोमव्रतेतवमनस्तनूषु बिभ्रतः ॥ प्रजावंतः सचेमहि उत्तरे कुबेराय नमः कुबेरस्यानुचरेभ्यो नमः दिशं० ॥ ७ ॥ अहो वृषभमारूढ शूलपाणे वरप्रद ॥ रुद्राशां पूजितो रक्ष तमीशानेति मंत्रतः ॥१॥ॐतमीशानं जगतस्तस्थुषस्पतिंधियं जिन्वमवसे हूमहेव्वयम्॥ पूषानोयथाव्वेदसामसद्वृधेरक्षितापायुद-ब्धः स्वस्तये ॥२॥ ईशान्यामीशानाय नमः इशानस्या नुचरेभ्यो नमः दिशं रक्ष०॥८॥अहो हंसस्थितो ब्रह्मन्-व्योम रक्षतु दिक्पते ॥ कमंडलुधरःसाक्षी अस्मेरुद्रेति पूजितः ॥१०॥ ॐअस्मेरुद्रामेहनापर्वतासोवृत्रहत्येभर

हूतौसजोषाः ॥ यः शर्ठसतेस्तुवतेधायिपज्रऽइंद्रज्येष्ठा अस्माँअवंतुदेवाः ॥२॥ ॐ ऊर्ध्वं ब्रह्मणे नमः ब्रह्मणोऽनुचरेभ्यो नमः दिशं ० ॥ ९ ॥ अहो गरुडमारूढ शंखचक्रगदाधर ॥पालयाधोदिशं विष्णो स्योनापृथ्वीति मंत्रतः ॥ १ ॥ ॐ स्योनापृथिविनोभवानृक्षरानिवेशनी ॥ यच्छानः शर्मसप्रथाः ॥ २ ॥ अधः अनंताय नमः अनंतस्यानुचरेभ्यो नमः दिशं रक्ष० ॥ १० ॥ ॥ ९५ ॥ ततस्तैलपूरितचतुर्वर्तिप्रज्वलितदीपकसहितां माषभक्तदधिशष्कुलीवलिंशूर्पेपात्रे वाकृत्वानैर्ऋतीदिशं गत्वा—ॐ हिंकाराय स्वाहा हिंकृताय स्वाहा क्रंदते स्वाहाऽवक्रंदाय स्वाहा प्रोथते स्वाहा प्रप्रोथाय स्वाहा गंधाय स्वाहा घ्राताय स्वाहा निविष्टाय स्वाहोपविष्टाय स्वाहा संदिताय स्वाहा वल्गते स्वाहाऽऽसीनाय स्वाहा शयानाय स्वाहा स्वपते स्वाहा जाग्रते स्वाहा कूजते स्वाहा प्रबुद्धाय स्वाहा व्विजृंभमाणाय स्वाहा विचृत्ताय स्वाहा सर्ठहानाय स्वाहोपस्थि-

---

मंत्रोंसे पूर्वादि क्रमसे दशों दिशाओंमें इन्द्रादि दश दिक्पालोंको बलि प्रदान करे ॥ ९५ ॥ फिर एक दीपकमें तेल भरकर चार बत्ती जलाके उसको सूपमें या अन्य पात्रपर रखदे और उसमें भी उड़द दही आदि रखकर नैर्ऋत्य कोणमें जाके ॐ " हिंकाराय स्वाहा " आदि मंत्रोंसे क्षेत्रपालका आवाहनादि पूजन करके बलिदान

ताय स्वाहाऽऽयनाय स्वाहा प्रायणाय स्वाहा ॥१॥ यते स्वाहा धावते स्वाहोद्द्रावाय स्वाहोद्द्रुताय स्वाहा शूका-राय स्वाहा शूकृताय स्वाहा निषण्णाय स्वाहोत्थिताय स्वाहा जवाय स्वाहा बलाय स्वाहा विवर्त्तमानाय स्वाहा विवृत्ताय स्वाहा विधून्वानाय स्वाहा विधूताय स्वाहा शुश्रूषमाणाय स्वाहा शृण्वते स्वाहेक्षमाणाय स्वाहेक्षि-ताय स्वाहा व्वीक्षिताय स्वाहा निमेषाय स्वाहा यदत्ति तस्मै स्वाहा यत्पिबति तस्मै स्वाहा यन्मूत्रं करोति तस्मै स्वाहा कुर्वते स्वाहा कृताय स्वाहा ॥ २ ॥ कौलीरे चित्रकूटे हिमगिरिशिखरे कांतजालंधरे वा सौराष्ट्रे सिंधु-देशे मगधपुरवरे कौसले वा कलिंगे॥कर्णाटे कौंकणे वा भृगुषु पुरवरे कान्यकुब्जे स्थिता वा ते सर्वे यज्ञरक्षाकरण कृतधियः पांतु वः क्षेत्रपालाः ॥ १ ॥ द्वाभ्यां मंत्राभ्यां क्षेत्राधीशाय नमः क्षेत्राधीशस्यानुचरेभ्यो नमः दिशं० ॥२॥स्वपादौ प्रक्षाल्याचम्य द्यौः शांतिरंतरिक्षꣳशांतिः पृथिवीशांतिरापःशांतिरोषधयःशांतिर्वनस्पतयःशांति-र्विश्वेदेवाः शांतिर्ब्रह्म शांतिःसर्वꣳशांतिःशांतिरेवशांतिः सा मा शांतिरेधि द्विपदचतुष्पदेभ्यः शांतिरस्तु ॥ १ ॥ इति शांतिं कुर्यात् ॥ ९६ ॥ ततः पूर्णाहुतिं जुहुयात् ॥

देकर हाथ पाँव धो डाले और " द्यौः शान्तिः " से शान्ति करे ॥ ६९ ॥ " पूर्णाहुति " होमसंबंधी सब काम हुए

आज्यस्थाल्यामाज्यनिर्वापः॥ आज्याधिश्रयणंस्रुक्स्रुवौ प्रतप्य संमृज्य अभ्युक्ष्य पुनः प्रतप्य निदध्यात् ॥ तत आज्यमुद्वास्य उत्पूय अवेक्ष्य अपद्रव्यनिरसनं स्रुचमादाय चतुर्गृहीतमाज्यं कृत्वा स्रुवैश्चतुर्भिर्गृहीतं पूरयित्वा नालिकेरं च घृतेन पूरयित्वा कुंकुमेन पूजयित्वा कौसुंभवस्त्रेण वेष्टयित्वा सूत्रेण च वेष्टयित्वा स्रुचं धृत्वा तदुपरि पूगीफलं च धृत्वा नालिकेरस्य मुखमात्मनः सम्मुखं कृत्वा विवाहे अग्निसम्मुखं कृत्वा जुहुयात् ॥ पूर्णाहुत्यां मृडनाम्ने वैश्वानराय इदं गंधं पुष्पं धूपं दीपं नैवेद्यं आचमनम्॥एकोनपंचाशन्मरुद्गणेभ्यो नमः गंधं पुष्पं धूपं दीपं नैवेद्यं आचमनम् ॥ ९७ ॥ ततस्तां स्रुचं गृहीत्वोत्थाय घृतेनाविच्छिन्नधारयाऽग्नौ पातयेत् ॥

पीछे आज्यस्थालीमें घी डालकर तपावे । स्रुक् स्रुवको तपाकर साफ करके जलसे धोकर फिर तपाके साफ करले स्रुक्को लेकर उसमें स्रुवसे चार बार शुद्ध घी भरे और एक नारियलको छेद करके उसमेंभी घी भरकर उसपर लाल वस्त्र लपेटके रोलीसे पूजकर उसको स्रुक्में रखदे और इन दोनोंके ऊपर स्रुव तथा सुपारी रखकर पहले तो 'पुर्णाहुत्यां मृडनाम्ने० ' से अग्निका और फिर " एकोनपंचाशन्मरुद्गणेभ्यो नमः० " सेस्रुक्स्रुवस्थ मरुद्गणोंका पूजन करे ॥ ९७ ॥ फिरस्रुक्को लेखिनीकी भाँति पकड़कर खड़ा होजाय और उसमेंसे घीकी अविच्छिन्न धारा अग्निमें टपकाता हुआ

मूर्द्धानमिति मंत्रस्य भारद्वाजऋषिः वैश्वानरोदेवता त्रिष्टुप् छंदः पूर्णाहुतिहोमे विनियोगः ॥ ॐ मूर्द्धानं दिवोअरतिं पृथिव्यावैश्वानरमृतआजातमग्निम् । कविर्ठ॰संम्राजमतिथिं जनानामासन्नापात्रं जनयंतदेवाः ॥ १ ॥ पूर्णादर्विपरापतसुपूर्णापुनरापत ॥ व्वस्नेवव्विक्रीणावहाऽइषमूर्जर्ठ॰शतक्रतो ॥ २ ॥ चित्तिंजुहोमिमनसाघृतेनयथादेवाइहागमन्वीतिहोत्राऽऋतावृधः ॥ पत्येविश्वस्यभूमनोजुहोमि विश्वकर्मणेव्विश्वाहादाभ्यर्ठ॰हविः ॥ ३ ॥ सप्ततेअग्ने समिधः सप्तजिह्वाः सप्त ऋषयः सप्त धाम प्रियाणि ॥ सप्तहोत्राःसप्तधात्वायजतिसप्तयोनीरापृणस्वाघृतेनस्वाहा ।४।शुक्रश्चज्योतिश्चचित्रज्योतिश्चसत्यज्योतिश्चज्योतिष्मांश्चशुक्रश्चऋतपाश्चात्यर्ठ॰हाः ॥ ५ ॥ ईदृङ् चान्यादृङ्चसदृङ्चप्रतिसदृङ्च॥मितश्चसम्मितश्चसभराः॥६॥ ऋतश्चसत्यश्चध्रुवश्चधरुणश्चधर्त्ताचविधर्त्ताचव्विधारयः ॥७॥ ऋतजिच्चसत्यजिच्चसेनजिच्चसुषेणश्चांतिमित्रश्चदूरे अमित्रश्चगणः॥८॥ईदृक्षासऽएतादृक्षासऽऊषुणःसदृक्षासः प्रतिसदृक्षासऽएतन ॥ मितासश्चसम्मितासोनोऽअद्यसभरसोममरुतोयज्ञेऽअस्मिन् ॥९॥स्वतवांश्चप्रघासीचसांतपनश्चगृहमेधीच ॥ क्रीडीचशाकीचोज्जेषी ॥ १० ॥

" ॐ मूर्द्धानं दिवो ० " आरंभ करके " संतु यजमानस्य कामाः " पर्यन्त पढ़कर श्रीफलको यजमानके सन्मुख

उग्रश्च भीमश्चध्वांतश्चधुनिश्च ॥ सासह्वांश्चाभियुग्वाच िविक्षिपः स्वाहा ॥११॥ पुनस्त्वाऽऽदित्या रुद्राव्वसवः समिंधतां पुनर्ब्ब्रह्माणोव्वसुनीथयज्ञैः॥घृतेनत्त्वंतन्वंव्वर्द्ध-यस्वसत्याः संतुयजमानस्यकामाः ॥ १२ ॥ इति पठित्वा यजमानस्य कामाः सत्याः संतु इति श्रीफलं यजमानाभिमुखं जुहुयात्॥घृतं च रुद्रकलशे त्यजेत् ॥ इदमिंद्राय न मम ॥ पूर्णाहुतिं हुत्वोपविश्य ॥ ९८ ॥ स्रुवेण भस्मानीय दक्षिणकरानामिकया गृहीतभस्मना त्र्यायुषं कुर्यात् ॥ ॐ त्र्यायुषं जमदग्नेरिति ललाटे ॥ ॐकश्यपस्यत्र्यायुषमिति ग्रीवायाम्॥ॐयद्देवेषुत्र्यायु-षमिति दक्षिणबाहुमूले ॥ ॐ तन्नोऽअस्तुत्र्यायुषमिति हृदि ॥ एवं त्र्यायुषं कुर्यात् ॥ परकर्तृके तत्ते इति वि-शेषः ॥९९॥ ततोऽग्न्युपस्थानम्॥ ॐ इद्रंदैवीर्व्विशो-मरुतोनुवर्त्मानोऽभवन्यथेंद्रंदैवीर्विशोमरुतोऽनुवर्त्मा-नोऽभवन् ॥ एवमिमंयजमानंदैवीश्चव्विशोमानुषीश्चा-नुवर्त्मानोभवंतु ॥ १ ॥ इमंछंस्तमूर्जस्वंतंधयापां

करके होमदे और शेष घीको रुद्रकलशमें छोड़कर बैठ जाय ॥ ९८ ॥ फिर स्रुवसे भस्म लेकर ' त्र्यायुषं जमदग्नेः ' से यजमानके ललाटपर ' कश्यपस्य त्र्यायुषं ' से ग्रीवाके ' यद्दे-वेषु त्र्यायुषं ' से दहने भुजके और ' तन्नो अस्तु त्र्यायुषं ' से हृदयपर लगावे ॥ ९९ ॥ “ अग्न्युत्थापन ” फि

प्रपीनमग्नेसरिरस्यमध्ये॥उत्संजुषस्व मधुमंतमर्व्वन्त्समु
द्रियर्ठ०सदनमाविशस्व ॥२॥ घृतं मिमिक्षेघृतमस्ययोनि
घृतेश्रितोघृतम्वस्यधाम ॥अनुष्वधमावमादायस्वस्वाहा
कृतंवृषभव्वक्षिहव्यम् ॥३॥समुद्रादूर्म्मिर्मधुमाँउदारदुपा
ठ०शुनासममृतत्वमानट् ॥ घृतस्यनामगुह्यंयदस्तिजि
ह्वादेवानाममृतस्यनाभिः ॥ ४ ॥ व्वयन्नाम प्रब्रवामा
घृतस्यास्मिन्यज्ञेधारयामानमोभिः ॥ उपब्रह्माश्शृणव-
च्छस्यमानं चतुःशृंगोवमीद्गौरएतत ॥ ५ ॥ चत्वारि
शृंगात्रयोअस्यपादाद्वेशीर्षेसप्तहस्तासोअस्य ॥ त्रिधाब
द्धोवृषभोरोरवीति महोदेवोमर्त्याँठ०आविवेश ॥ ६ ॥
त्रिधाहितंपणिभिर्गुह्यमानिङ्गविदेवासो घृतमन्वविंदन्॥
इंद्रऽएकर्ठ०सूर्य्यएकंजजानव्वेनादेकर्ठ०स्वधयानिष्टतक्षुः॥
॥७॥एताऽअर्षंतिहृद्यात्समुद्राच्छतव्रजारिपुणानावचक्षे॥
घृतस्यधाराअभिचाकशीमिहिरण्ययोव्वेतसो मध्यआ-
साम् ॥ ८ ॥ सम्यक्स्रवंतिसरितोनधेनाऽअंतर्हृदामनः
सापूयमानाः॥ एतेअर्षंत्यूर्मयोघृतस्यमृगाइवक्षिपणोरी-
षमाणाः ॥ ९ ॥ सिंधोरिवप्राध्वनेशूघनासोव्वातप्रमियः
पतयंतियह्वाः ॥ घृतस्यधाराअरुषोनव्वाजीकाष्ठाभिंद-
न्नूर्मिभिः पिन्वमानः॥ १० ॥ अभिप्रवन्तसमनेवयोषा-
कल्याण्यः स्मयमानासो अग्निम् ॥ घृतस्यधाराःसमिधो
नसततान्जुषाणोहर्य्यंतिजातवेदाः ॥ ११ ॥ कन्याइव

व्वहतुमेतवाउऽअंज्यंजानाअभिचाकशीमि ॥ यत्रसोमः सूयतेयत्रयज्ञोघृतस्यधारा अभितत्पवंते ॥१२ ॥ अ-भ्यर्षंतसुष्टुतिंगव्यमाजिमस्मासुभद्राद्रविणानिधत्त॥इमं यज्ञन्नयतदेवतानोघृतस्य धारामधुमत्पवंते ॥ १३ ॥ धामंतेविश्वंभुवनमधिश्रितमंतःसमुद्रे हृद्यंतरायुषि ॥ अपामनीकेसमिथेयऽआभृतस्तमश्याम मधुमंतंतऽऊ-र्मिम् ॥ १४ ॥ चतुर्भिश्चचतुर्भिश्च द्वाभ्यां पंचभिरेव च ॥ हूयते च पुनर्द्वाभ्यां तस्मै यज्ञात्मने नमः ॥१५॥ज्ञानतो-ऽज्ञानतो वापि मंत्रकर्मक्रियाविधिः ॥ संपूर्णं कुरु यज्ञेश गार्हपत्य नमोऽस्तु ते ॥ १६ ॥ यथा शस्त्रप्रहाराणां कवचं भवति वारणम् ॥ तद्वद्देवापघातानां शांतिर्भ-वति वारणम् ॥ १७ ॥ स्वस्ति श्रद्धां यशः प्रज्ञां विद्यां बुद्धिं श्रियं बलम् ॥ आयुष्यं चैवमारोग्यं देहि मे वांछितं फलम् ॥ १८ ॥ यस्य स्मृत्या च नामोक्त्या तपोयज्ञक्रियादिषु ॥ न्यूनं संपूर्णतां याति सद्यो वंदे तमच्युतम् ॥ १९ ॥ कायेन वाचा मनसेंद्रियैर्वा बुद्ध्या-त्मना वानुसृतस्वभावात् ॥ करोमि यद्यत्सकलं पर-स्मै नारायणायेति समर्पयामि ॥ २० ॥ प्रमादात्कुर्वतां कर्म प्रच्यवेताध्वरेषु यत् ॥ स्मरणादेव तद्विष्णोः

' इन्द्रंदैवी० " से " धामन्ते० " तक वैदिक और "चतु-र्भिश्च चतुरर्भिश्च " से ' प्रमादात्कुर्वतां ' पर्यंत पौराणिक

संपूर्णं स्यादिति श्रुतिः ॥ २१ ॥ ॐ यज्ञपुरुषाय नमः ॥ १०० ॥ ततो होमसंकल्पः ॥ ॐ तत्सदद्य मासे पक्षे तिथौ अमुकगोत्रेणामुकशर्मणा मया आघारादि-पूर्णाहुतिपर्यंतं यद्यद्द्रव्यं यावद्यावत्संख्याकेन येन येन मंत्रेण यया यया कामनया यस्यै यस्यै देवतायै हुतं सा सा देवता प्रीयताम् ॥ ते देवाः शांतिदाः पुष्टिदा-स्तुष्टिदा वरदा भवंतु ॥ग्रहजापकेभ्योग्रहतुष्ट्यै दानानि देयानि ॥ ततः संस्रवप्राशनं आचमनम् ॥ १०१ ॥ ॐ तत्सदद्यास्मिन्ग्रहमखहवनकर्मणि कृताकृतावेक्षण-रूपब्रह्मकर्मप्रतिष्ठार्थं न्यूनातिरिक्तदोषपरिहारार्थं च इदं पूर्णपात्रं सहिरण्यं प्रजापतिदैवतममुकगोत्रायामुकशर्मणे ब्राह्मणाय ब्रह्मणे तुभ्यमहं संप्रददे ॥ ॐ स्वस्तीति प्रतिवचनम् ॥ ततो ब्रह्मग्रंथिविमोकः ॥ ततः ॐ सुमित्रियानआपओषधयःसंतु(इति पवित्राभ्यां प्रणीता-

---

मंत्रोंसे स्तुति पाठ करके पुष्पाक्षतोंसे अग्निका विसर्जन करे ॥ १०० ॥ इसके पीछे होमसंबंधी दान द्रव्योंका संकल्प करके ग्रहोंके जप करनेवालोंको दान दे । और संस्रव अर्थात् वह घी जो प्रोक्षणमें होम करते समय छोड़ा गया था उसको भक्षण करे अथवा सूंघे ॥ १०१ ॥ " दान " फिर ' ॐ तत्सदद्यास्मिन्ग्रहयज्ञे० ' से पूर्णपात्रका संकल्प करके ब्राह्म-णको देकर ब्रह्माकी गाँठ खोलदे । और ' सुमित्रियानसे० '

जलमानीय तेन शिरः सम्मृज्य) ॐ दुर्म्मित्रियास्त-स्मैसंतुयोस्मान्द्वेष्टियंचवयंद्विष्मः॥इत्यैशान्यांप्रणीता-न्युब्जीकरणं पवित्रे अग्नौ प्रक्षिपेत् ॥ १०२ ॥ ततः स्तरणक्रमेण बर्हिरुत्थाप्याज्येनाभिघार्य ॐ देवागातु-विदोगातुंवित्वागातुमित ॥ मनसस्पतइमंदेवयज्ञᳬस्वाहा वातेधाःस्वाहा ॥१॥ इति मंत्रेण बर्हिर्होमः॥ ततः नमोब्रह्मणेनमोअस्त्वग्नयेनमः पृथिव्यैनमओषधीभ्यः॥ नमोवाचेनमोवाचस्पतयेनमोविष्णवेबृहतेकरोमि॥इति मंत्रेणाग्निं त्रिः पर्युक्ष्य तज्जलेन नेत्रस्पर्शनम् ॥ १०३॥ ततःशुक्लांबरधरःशुक्लमाल्यानुलेपनोयजमानःआचा-र्यादीन् गंधमाल्यादिभिरभ्यर्च्याचार्याय ब्रह्मणे ऋत्वि-ग्भ्यश्च वित्तानुसारेण दक्षिणां दद्यात् ॥ तत्र प्रयोगः ॥ ॐ तत्सदद्य मासे पक्षे तिथौ वासरे अमुकगोत्रोऽमुक-शर्मा (वर्मा गुप्तो वा) अहं अस्य नवग्रहमखकर्मणः

शिरपर कुछ जल छिड़ककर ' ॐ दुर्मित्रिया॰ 'से प्रणीताको ईशानमें औंधा करदे। और पवित्रेको अग्निमें पटकदे॥१०२॥ इसके पीछे वेदीके चौतर्फ बिछी हुई दर्भाको उसी क्रमसे उठाकर घीमें भिगोके ' देवागातु॰ ' से उसको होम दे। और नमो ब्रह्मणे॰ ' से अग्निको अर्घ्यकी भाँति तीन बार जल देकर उसी जलसे अपने नेत्र स्पर्श करे ॥ १३० ॥ इसके पीछे यजमान स्वच्छ वस्त्र गंधादि धारण करके आचार्य

सांगतासिद्धचर्थं असुकगोत्रायामुकप्रवरायामुकवेदस्या-मुकशाखाध्यायिनेऽमुकशर्मणे ब्राह्मणायाचार्याय इमां दक्षिणां तुभ्यमहं संप्रददे ॥ इत्येवं ब्रह्मणे ऋत्विग्भ्यश्च दक्षिणां दद्यात् ॥ ततः न्यूनातिरिक्तदोषपरिहारार्थं नवग्रहमखकर्मसांगतासिद्धचर्थमिदं पात्रं घृतपूरितं यथानामगोत्राय ब्राह्मणाय दक्षिणां दातुमहमुत्सृजे॥ एवं तंडुलतिलशर्करापात्राणि दद्यात् ॥ न्यूनातिरिक्तदोषपरिहारार्थंनवग्रहमखकर्मसांगतासिद्धचर्थंयथानामगोत्रेभ्योब्राह्मणेभ्योभूयसींदक्षिणां विभज्य दातुमुत्सृजे॥ ततो यजमानः अन्यानपि ब्राह्मणान् वित्तानुसारेण गोभूहिरण्यान्नरत्नानां दानादिभिः पूजयेत् ॥ १०४ ॥ ततोऽभिषेकः ॥ यजमानं सपत्नीकं सपुत्रं प्रागभिमुखमासीनं आचार्यः ऋत्विजश्च रुद्रकलशात् कुशदूर्वापल्लवैरुदकमानीयाभिषिंचेयुः ॥ ॐ ॥ आपोहिष्ठामयोभुव-

---

आदिका गंधादिसे पूजन कर उनको वित्तानुसार यथायोग्य दक्षिणा दे । और ४ पात्रोंमें तंडुल तिल शक्कर और घी भरकर गंधादिसे पूजके वे भी ब्राह्मणोंको दे । इसके सिवाय अन्न वस्त्र गौ भू सुवर्ण और ब्राह्मण भोजनादि जो कुछ देयद्रव्य हो वह सब दे ॥ १०४ ॥ " अभिषेक " इसके पीछे स्त्री पुत्र सहित यजमानको पूर्वाभिमुख बैठाकर आचार्य अथवा ऋत्विज रुद्रकलशमेंसे जल लेकर दर्भा दूर्वा या आमके पत्तोंसे अभिषेक करें । अर्थात् " आपोहिष्ठा० " आदि २४

स्तानऊर्ज्जेदधातन ॥ महेरणायचक्षसे ॥ १ ॥ योवः शिवतमोरसस्तस्यभाजयतेहनः॥उशतीरिवमातरः॥२॥ तस्माअरंगमामवोयस्यक्षयायजिन्वथ ॥ आपोजनयथा चनः ॥ ३ ॥ ञ्वरुणस्योत्तंभनमसि० ॥ ४ ॥ भगप्रणे- तर्भगसत्यराधोभगेमांधियमुदवाददन्नः ॥ भगप्रणोजन- यगोभिरश्वैर्भगप्रनृभिर्नृवंतःस्याम॥५॥इदमापःप्रवहता- वद्यंचमलंचयत्॥यच्चाभिदुद्रोहानृतंयच्चशेपेअभीरुणम्॥ आपोमातस्मादेनसः पवमानश्चमुंचतु ॥ ६ ॥ समुद्रा- यत्वाञ्वातायस्वाहासरिरायत्वा ञ्वातायस्वाहा॥अनाधृ- ष्यायत्वाञ्वातायस्वाहाप्रतिधृष्यायत्त्वाञ्वातायस्वाहा॥ अवस्यवेत्वाञ्वातायस्वाहासिमिदायत्वाञ्वाताय स्वाहा ॥७॥ पुनंतुमादेवजनाः पुनंतुमनसाधियः॥पुनंतुञ्विश्वा भूतानिजातवेदः पुनीहिमा॥८॥आप्यायस्वसमेतुतेञ्वि- श्वतः सोमवृष्ण्यम् ॥ भवाञ्वाजस्यसंगथे ॥ ९ ॥ शिरो मेश्रीर्यशोमुखंत्विषिः केशाश्वश्मश्रूणि ॥ राजामेप्राणो- अमृतॐसम्राट्चक्षुर्विराट्श्रोत्रम् ॥ १० ॥ जिह्वामेभद्रं वाङ्महोमनोमन्युः स्वराड्भामः ॥ मोदाः प्रमोदाऽ अंगुलीरंगानिमित्रंमेसहः ॥ बाहूमेबलमिंद्रियॐहस्तौमे कर्मञ्वीर्यम् ॥ आत्माक्षत्रमुरोमम ॥ ११ ॥ पृष्टीर्मेरा- ष्ट्रमुदरमॐसौग्रीवाश्वश्श्रोणी॥ ऊरूअरत्नीजानुनीञ्वि-

शोमेंऽगानिसर्वंतः ॥ १२ ॥ नाभिर्मेचित्तंविज्ञानंपायुर्मे-
ऽपचितिर्भसत् ॥ आनंदनंदावांडौमेभगः सौभाग्यंपसः॥
जंघाभ्यांपद्भ्यांधर्मोस्मिविशिराजाप्रतिष्ठितः ॥ १३॥
पयः पृथिव्यां० ॥१४॥ देवस्यत्वासवितुः प्रसवेश्विनो-
र्बाहुभ्यां पूष्णोहस्ताभ्याम् ॥ सरस्वत्यै व्वाचोयंतुर्यंत्रिये
दधामि बृहस्पतेष्ट्वासाम्राज्येनाभिषिंचाम्यसौ ॥ १५ ॥-
देवस्यत्वासवितुःप्रसवेश्विनोर्बाहुभ्यांपूष्णोहस्ताभ्याम्॥
सरस्वत्यैव्वाचोयंतुर्यंत्रेणाग्नेःसाम्राज्येनाभिषिंचामि॥१६
देवस्यत्वासवितुःप्रसवेश्विनोर्बाहुभ्यांपूष्णोहस्ताभ्याम् ।
अश्विनोर्भैषज्येनतेजसेब्रह्मवर्चसायाभिषिंचामि॥सरस्व
त्यैभैषज्येनव्वीर्यायान्नाद्यायाभिषिंचामींद्रस्यैंद्रियेणबलाय
श्रियैयशसेऽभिषिंचामि॥१७॥पालाशंभवतितेनब्राह्मणो
भिषिंचतिब्रह्मवैपलाशोब्रह्मणैवैनमेतदभिषिंचति॥१८॥
सर्वेषांवाएषवेदानाᳬंरसोयत्सामसर्वेषामेवैनमेतद्वेदाना-
ᳬंरसेनाभिषिंचति ॥ १९ ॥ यद्वेवकल्पान्जुहोतिप्राणावै
कल्पाअमृतमुवैप्राणाऽअमृतेनैवैनमेतदभिषिंचति॥२०॥
दीर्घायुत्वायबलायवर्चसेसुप्रजास्त्वायचासाअथो जीव
शरदः शतम् ॥ २१ ॥ द्यौः शांतिरंतरिक्षᳬंशांतिः
पृथिवीशांतिरापः शांतिरोषधयः शांतिः ॥ वनस्पतयः
शांतिर्विश्वेदेवाः शांतिर्ब्रह्मशांतिः॥ सर्वᳬंशांतिः शांति-

रेवशांतिःसामाशांतिरेधि॥द्विपदचतुष्पदेभ्यःशुभशांति-भंवतु ॥ २२ ॥ श्रीर्वर्चस्वमायुष्यमारोग्यमाविधात्पव-मानंमहीयते ॥ धनंधान्यं पशुंपुत्रलाभंशतसंवत्सरंदीर्घ-मायुः ॥ २३ ॥ विश्वानिदेवसवितर्दुरितानिपरासुव ॥ यद्भद्रंतन्नऽआसुव ॥ २४ ॥ शक्राद्या देवताः सर्वा ब्रह्म-विष्णुमहेश्वराः ॥ सुरास्त्वामभिषिंचंतु प्रयच्छंतु धनानि च ॥ १ ॥ नारायणो जगन्नाथस्तथा संकर्षणो विभुः ॥ प्रद्युम्नश्चानिरुद्धश्च ऋद्धिंयच्छंतु ते सदा ॥ २ ॥ इंद्रो वह्निर्यमश्चैव नैर्ऋतो वरुणस्तथा ॥ वायुः कुबेरो रुद्रश्च दिक्पालाः पांतु वः सदा ॥३॥ आदित्य-श्चन्द्रमा भौमो बुधो जीवः सितोऽर्कजः ॥ ग्रहास्त्वाम-भिषिंचंतु राहुः केतुस्तथैव च ॥ ४ ॥ आदित्या वसवो रुद्रा विश्वेदेवामरुद्गणाः ॥ लोकपालाः प्रयच्छंतु मंग-लानि प्रियं यशः ॥ ५ ॥ नारदाद्या ऋषिगणा ये चान्ये च तपोधनाः ॥ भवंतु यजमानस्य आशीर्वादपरायणाः ॥ ६ ॥ गायत्री चैव सावित्री शची लक्ष्मीः सरस्वती ॥ मृडानी मातरः सर्वा भवंतु वरदास्तव ॥ ७ ॥ कीर्ति-र्लक्ष्मीर्धृतिर्मेधा पुष्टिः श्रद्धा क्रिया मतिः ॥ बुद्धिर्लज्जा वपुः शांतिस्तुष्टिः क्षांतिस्त्रयोदश ॥ ८ ॥ एतास्त्वा-मभिषिंचंतु देवपत्न्यः समावृताः ॥ देवदानवगंधर्वा यक्ष-

राक्षसपन्नगाः ॥ ९ ॥ ऋषयो मानवा गावो देवमातर एव च ॥ देवपत्न्यो द्रुमा नागा दैत्याश्चाप्सरसां गणाः ॥ १० ॥ अस्त्राणि सर्वशस्त्राणि राजानो वाहनानि च ॥ औषधानि च रत्नानि कालस्यावयवाश्च ये ॥ ११ ॥ सरितः सागराः शैलास्तीर्थानि जलदा नदाः ॥ एते त्वामभिषिंचंतु सर्वकार्यार्थसिद्धये ॥ १२ ॥ इत्यभिषेकः ॥ १०५ ॥ अभिषेकानंतरं पुण्याहवाचनं केचित्पठंति केचित्तु वरणश्राद्धानंतरम् ॥ अतः पूर्वपठितं चेदत्रापि आब्रह्मन्० शतंजीवशरदोवर्धमानः श्रीर्वर्चस्वमित्याद्याशीर्मंत्रान् पठित्वा मंत्राक्षतान् यजमानहस्ते दद्यात् दोषाभावात् ॥ १०६ ॥ यजमानोऽपि कृतैतद्ग्रहयज्ञकर्मणो यन्न्यूनमतिरिक्तं तत्सर्वं भवतां ब्राह्मणानां

वैदिक और " शक्राद्या० आदि १२ पौराणिक मंत्रोंको पढ़ते हुए ब्राह्मण लोग जलमें दूर्वांकुरादि भिगोभिगोकर यजमानके शरीर परछिड़कते रहें ॥ १०५ ॥ "समाप्ति" कई एक अभिषेक के अनन्तर भी पुण्याहवाचन पढ़ते हैं किन्तु पहले पुण्याहवाचन हो चुका है इसलिये अब " आब्रह्मन्० " " शतंजीवशरदो० " ', श्रीर्वर्चस्व० " इत्यादि आशीर्वादात्मक मंत्रोंको पढ़कर पुष्पाक्षत यजमानको देदेवे ॥ १०६ ॥ और यजमान " कृतैतत्० " से जल छोड़कर ' वृद्धिशतानि

वचनात् श्रीविष्णोर्ग्रहाणां च प्रसादात् विधिवत् परि-
पूर्णमस्तु ॥ वृद्धिशतानि भवंतु इति प्रार्थयेत् ॥ तत
उत्थाय क्षम्यतामित्युक्त्वा अग्निं ग्रहांश्च प्रदक्षिणीकृत्य
वेदीसमीपे गत्वा श्रीफलं निवेद्य क्षमाप्य नमस्कृत्य
सूर्यादीन्विसर्ज्जयेत् ॥ १०७ ॥ तत्र मंत्राः—ॐ
समुद्रं गच्छ स्वाहांतरिक्षं गच्छ स्वाहा देवᳪंसवितारं
गच्छस्वाहा मित्रावरुणौ गच्छस्वाहाऽहोरात्रे गच्छस्वाहा
छंदाᳪंसिगच्छस्वाहाद्यावापृथिवीगच्छस्वाहायज्ञंगच्छ
स्वाहासोमंगच्छस्वाहादिव्यंनभोगच्छस्वाहाऽग्निंवैश्वानरं
गच्छस्वाहामनोमेहार्दियच्छदिवंतेधूमोगच्छतुस्वर्ज्योतिः
पृथिवींभस्मनापृण स्वाहा ॥ १ ॥ उत्तिष्ठब्रह्मणस्पते
देवयंतस्त्वेमहे॥ उपप्रयंतुमरुतः सुदानवऽइंद्रप्राशूर्भवा
स चा ॥ २ ॥ यांतु देवगणाः सर्वे पूजामादाय याज्ञि-
कीम् ॥ इष्टकामसमृद्ध्यर्थं पुनरागमनाय च ॥३ ॥ इति

भवंतु ' यह प्रार्थना करके उठ खड़ा हो और ब्राह्मणोंसे
क्षमा माँगकर अग्नि और ग्रहोंकी प्रदक्षिणा करके वेदीके
समीप जाकर श्रीफलादि भेंट करे और उनको नमस्कार करके
पुष्पाक्षत लेकर " ॐ समुद्रं गच्छ० " आदि मंत्रोंका उच्चा-
रण करके देवताओंका विसर्जन करे ॥ १०७ ॥ और

पठित्वा मंत्राक्षतान् मंडलोपरि क्षिपेत् ॥ ततो ब्राह्मणान्संभोज्य तदनुज्ञातः कुटुंबजनैः परिवृतो भोजनं कुर्यात् ॥ १०८ ॥

इति ग्रहशांतिप्रयोगः समाप्तिमगात् ॥

फिर तिलक छात आरती आदि करनेके अतिरिक्त ब्राह्मण-भोजन कराके उनकी आज्ञासे आप भोजन करे इस प्रकार यह कार्य आनन्दपूर्वक समाप्त करे । इति शुभम् ॥ १०८ ॥

इति श्रीमल्लक्ष्मीनारायणात्मज हनुमान् शर्मा लिखित
भाषेतिकर्तव्यतासहित ग्रहशान्तिपद्धति समाप्त ।
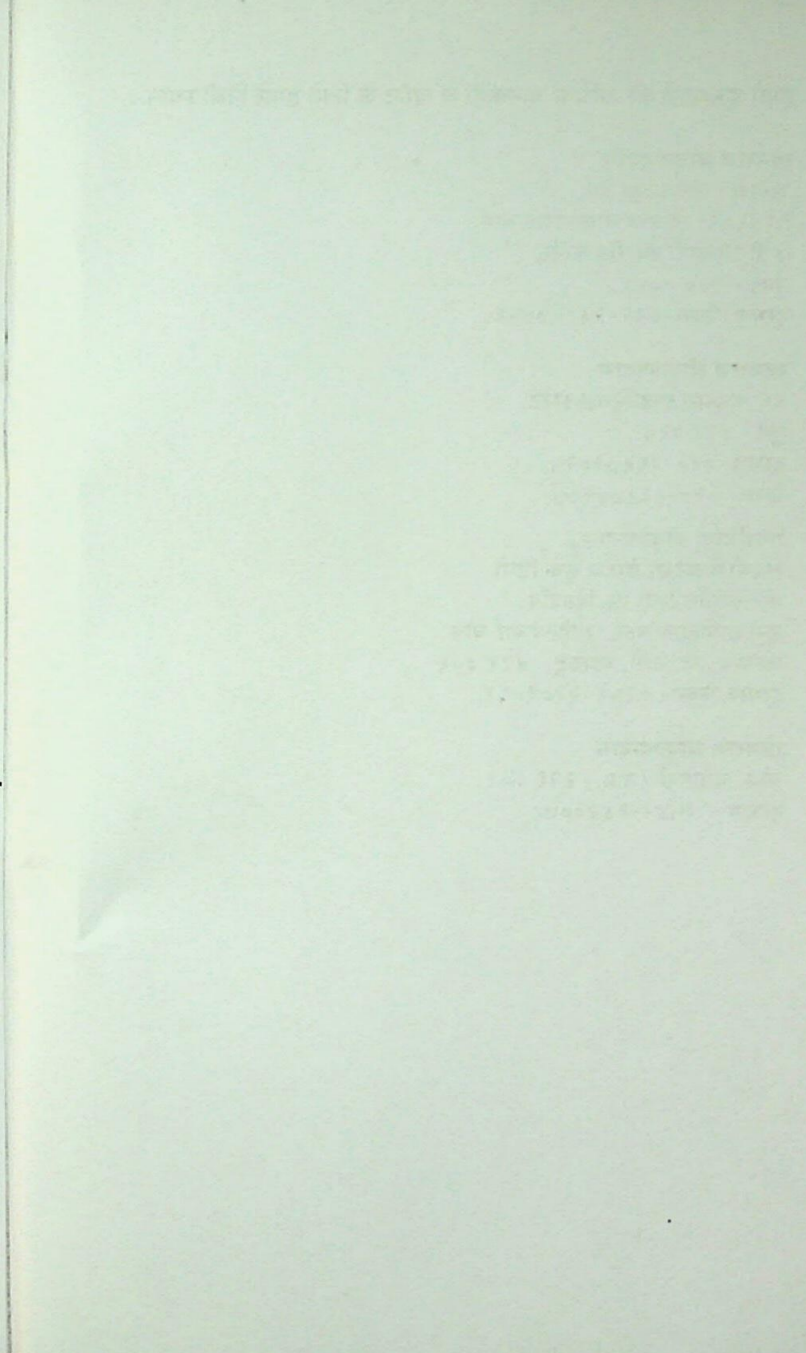
हमारे प्रकाशनों की अधिक जानकारी व खरीद के लिये हमारे निजी स्थान :

खेमराज श्रीकृष्णदास
अध्यक्ष : श्रीवेंकटेश्वर प्रेस,
९१/१०९, खेमराज श्रीकृष्णदास मार्ग,
७ वी खेतवाडी बॅक रोड कार्नर,
मुंबई - ४०० ००४.
दूरभाष/फैक्स-०२२-२३८५७४५६.

खेमराज श्रीकृष्णदास
६६, हडपसर इण्डस्ट्रियल इस्टेट,
पुणे - ४११ ०१३.
दूरभाष-०२०-२६८७१०२५.
फैक्स -०२०-२६८७४९०७.

गंगाविष्णु श्रीकृष्णदास,
लक्ष्मी वेंकटेश्वर प्रेस व बुक डिपो
श्रीलक्ष्मीवेंकटेश्वर प्रेस बिल्डींग,
जूना छापाखाना गली, अहिल्याबाई चौक,
कल्याण, जि. ठाणे, महाराष्ट्र - ४२१ ३०१
दूरभाष/फैक्स- ०२५१-२२०९०६१.

खेमराज श्रीकृष्णदास
चौक, वाराणसी (उ.प्र.) २२१ ००१.
दूरभाष - ०५४२-२४२००७८

हमारे प्रकाशनों की अधिक जानकारी व खरीद के लिये हमारे निजी स्थान

खेमराज श्रीकृष्णदास
अध्यक्ष : श्रीवेंकटेश्वर प्रेस,
९१/१०९, खेमराज श्रीकृष्णदास मार्ग,
७ वी खेतवाडी बॅक रोड कार्नर,
मुंबई - ४०० ००४.
दूरभाष/फैक्स-०२२-२३८५७४५६.

खेमराज श्रीकृष्णदास
६६, हडपसर इण्डस्ट्रियल इस्टेट,
पुणे - ४११ ०१३.
दूरभाष-०२०-२६८७१०२५,

गंगाविष्णु श्रीकृष्णदास,
लक्ष्मी वेंकटेश्वर प्रेस व बुक डिपो
श्रीलक्ष्मीवेंकटेश्वर प्रेस बिल्डींग,
जूना छापाखाना गली, अहिल्याबाई चौक,
कल्याण, जि. ठाणे, महाराष्ट्र - ४२१ ३०१
दूरभाष - ०२५१-२२०९०६१.

खेमराज श्रीकृष्णदास
चौक, वाराणसी (उ.प्र.) २२१ ००१
दूरभाष - ०५४२-२४२००७८.

KHEMRAJ SHRIKRISHNADASS